੧ੳ सतिगुर प्रसादि ॥

गुर गिआन अंजन सचु नेत्री पाइआ ॥
अंतरि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ ॥

मासिक

गुरमति ज्ञान

आश्विन-कार्तिक, संवत् नानकशाही ५४३
वर्ष ५ अंक २ अक्तूबर 2011

चंदा

सालाना (देश)	१० रुपये
आजीवन (देश)	१०० रुपये
सालाना (विदेश)	२५० रुपये
प्रति कापी	३ रुपये

चंदा भेजने का पता
सचिव, धर्म प्रचार कमेटी
(शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी)
श्री अमृतसर-१४३००६
फोन: 0183-2553956-60, फैक्स: 0183-2553919

एक्सटेंशन नंबर
वितरण विभाग **303** संपादकीय विभाग **304**
e-mail : gyan_gurmat@yahoo.com
website : www.sgpc.net

विषय-सूची

गुरबाणी विचार

कोई आणि मिलावै मेरा प्रीतमु पिआरा हउ तिसु पहि आपु वेचाई ॥१॥
दरसनु हरि देखण कै ताई ॥
क्रिपा करहि ता सतिगुरु मेलहि हरि हरि नामु धिआई ॥१॥रहाउ॥
जे सुखु देहि ता तुझहि अराधी दुखि भी तुझै धिआई ॥२॥
जे भुख देहि त इत ही राजा दुख विचि सूख मनाई ॥३॥
तनु मनु काटि काटि सभु अरपी विचि अगनी आपु जलाई ॥४॥
पखा फेरी पाणी ढोवा जो देवहि सो खाई ॥५॥
नानकु गरीबु ढहि पइआ दुआरै हरि मेलि लैहु वडिआई ॥६॥ *(पन्ना ७५७)*

सूही राग में श्री गुरु रामदास जी उपरोक्त शबद में खुद को केंद्र बनाकर हम कलयुगी जीवों को समझा रहे हैं कि हे भाई! यदि कोई सज्जन पुरुष मुझे मेरे प्रीतम-प्रभु से मिला दे, मुझे उसके दर्शन करा दे तो ऐसे सज्जन पुरुष, ऐसे सतिगुरु के आगे मैं खुद को बेच दूंगा अर्थात् उस पर से खुद को कुर्बान कर दूंगा। गुरु जी आगे फरमान करते हैं कि ऐसा सतिगुरु तभी मिलता है यदि प्रभु की कृपा-बख्शिश हो तथा तभी हरि का नाम सिमरन किया जा सकता है। हे प्रभु! यदि तू मुझे सुख दे तो भी मैं तेरी ही आराधना करूंगा तथा दुख में भी तेरा ही सिमरन करूंगा। हे प्रभु! यदि तू मुझे भूखा रखे तो भी मैं तेरी कृपा द्वारा खुद को खुशहाल ही अनुभव करूंगा तथा ऐसे दुखों में भी खुद को सुखी प्रतीत करूंगा। तेरे दर्शन की खातिर यदि जरूरत पड़े तो मैं अपना तन-मन काट-काट कर सब तुझे अर्पण कर दूंगा तथा अग्नि में भी खुद को जला दूंगा। तेरे दर्शन के लिए मैं पंखा झुलाऊंगा, पानी ढोऊंगा तथा तू जो कुछ भी मुझे खाने के लिए देगा वही खुश होकर खा लूंगा। हे प्रभु! मैं तेरे दर पे आ पड़ा हूं, तू मुझे अपने चरणों से जोड़ ले, मुझे अपना बना ले।

कहने का तात्पर्य यह कि हमें परमात्मा से मिलाने वाले सतिगुरु पर से खुद को न्यौछावर तक कर देने की भावना रखनी चाहिए जिसके माध्यम से या जिसके बताए मार्ग पर चलकर हमें परमात्मा के दर्शन हो सकें। हमें परमात्मा की कृपा का पात्र बनना चाहिए क्योंकि उसकी कृपा से ही सतिगुरु मिलेंगे जो हरि का नाम जपाएंगे। हमें दुख-सुख दोनों में ही परमात्मा का नाम-सिमरन करना चाहिए। हम भूख लगने पर भी खुद को तृप्त ही कहें तथा दुख में भी सुख मनाएं। तन-मन काट कर, अग्नि में जल जाने तक की भी मन में भावना हो। गुरु-घर में संगत को पंखा झुलाना तथा पानी की सेवा करते हुए जो भी खाने को मिले वो प्रसन्नतापूर्वक छक लेना चाहिए। हम प्रभु के दर पर आकर इस प्रकार पूर्ण समर्पण-भाव के साथ गिर जाएं कि वह मालिक हमें अपने से मिला ले तथा हम सांसारिक कष्टों से ऊपर उठते हुए इसी मनुष्य-जन्म में ऊंचे रूहानी आनंद को महसूस कर सकें।

'अनंद मैरिज एक्ट' अधीन सिक्खों के विवाह रजिस्टर्ड करने में आनाकानी क्यों?

गुरु नानक साहिब द्वारा कायम किया सिक्ख धर्म नया एवं विलक्षण धर्म है। गुरु नानक नाम-लेवा सिक्खों ने बड़ी कुर्बानियां करके इसकी स्थाप्ति से लेकर अब तक इसके न्यारेपन को कायम रखा है। सिक्ख धर्म के अनुयाइयों ने धीरे-धीरे विकास करते हुए अपने नये एवं विलक्षण सभ्याचार का निर्माण किया जिसके कारण सिक्ख की पहचान लाखों में से ही हो जाती है। सिक्ख कभी भी किसी तरह के फोकट कर्मकांडों में विश्वास नहीं रखता और अपने जन्म से लेकर मरने तक के सारे संस्कार एक अकाल पुरख का सहारा लेते हुए अन्य कौमों से अलग विलक्षण ढंग से करता है। ये संस्कार सिक्खों ने अपनी जरूरत को मुख्य रखते हुए कई दशक भर की मेहनत के बाद एकमत बनाते हुए तैयार किये हैं। गहरे दुख की बात है कि देश की आजादी के लिए बढ़-चढ़ कर कुर्बानियां करने वाले सिक्खों को आज उनके मूल अधिकार देने में टालमटोल किया जा रहा है। इन्हीं मूल अधिकारों में से सिक्ख भाईचारे में गुरु साहिबान द्वारा बख्शी हुई 'अनंद विवाह' की रस्म है।

गुरु साहिबान ने अपने सिक्खों को 'अनंद विवाह' की रस्म बख्शिश करके चिर काल से प्रचलित बेहद खर्चीली एवं जटिल विवाह-रस्म से उनका पीछा छुड़ाया। इस रस्म के मुताबिक श्री गुरु ग्रंथ साहिब की पवित्र हजूरी तथा भाईचारे की हाजरी में सिक्ख लड़का तथा लड़की गृहस्थ जीवन में प्रवेश करते हैं। गुरु साहिबान ने अपने सिक्खों को इस रिश्ते की ऊंची महत्ता एवं पवित्रता का गहरा एहसास भी प्रदान किया। *"एक जोति दुइ मूरती धन पिरु कहीऐ सोइ"* जैसे निर्मल उपदेश की दिशा में चलते हुए एक आदर्श सिक्ख दंपत्ति परस्पर समझदारी रखता हुआ तालाक जैसी गलत अलामतों से भी बचा रहता है। ऐसी व्यवस्था करके गुरु के नाम-लेवा सिक्ख निर्मल एवं सदाचारक व्यक्तिगत जीवन बसर करते हुए देश-कौम, समाज तथा मानवता के विकास में भी अपना भरपूर योगदान देते आ रहे हैं, मगर गहरे दुख की बात है कि आजादी-प्राप्ति के शीघ्र बाद सिक्खों की उनके अल्पसंख्यक होने की स्थिति का सत्ताधारियों द्वारा नाजायज लाभ लेते हुए उन्हें उनके मूल अधिकारों से वंचित करने का आयोग्य घटनाक्रम चला दिया गया। यह घटनाक्रम गत थोड़े समय से बड़े जोर-शोर एवं सख्त ढीठताई के साथ जारी रखा जा रहा है। मौजूदा 'अनंद मैरिज एक्ट' में संशोधन करवाने में देश की मौजूदा केंद्रीय सरकार तथा विशेषत: इसके कानून मंत्रालय की स्पष्ट इंकार इस घटनाक्रम का एक हिस्सा ही कही जा सकती है। विदेशी मूल के अंग्रेजों के राज्य-काल के समय में भी सिक्खों को 'अनंद मैरिज एक्ट' बनाने और लागू कराने के लिए बेशक संघर्ष करना पड़ा था।

सिक्खों पर मुगलों के कहर भरे समय के दौरान सिक्ख ज्यादातर जंगलों, गुफाओं में छिपकर जीवन बिताने लगे जिसके कारण सिक्ख राज्य बनने तक शहरों, गांवों में प्राचीन वैदिक रीतियां

भारी हो चुकी थीं। फिर भी सिक्खों में चार संप्रदायें--निहंग सिंघ, बंदई, नानक निरंकारी तथा नामधारी अपने विवाह 'अनंद कारज रीति' के साथ ही करते आ रहे हैं, चाहे उस समय 'अनंद कारज' की पूरी मर्यादा अस्तित्व में नहीं आई थी। सबसे पहला अनंद विवाह श्री गुरु ग्रंथ साहिब के गिर्द परिक्रमा करके 'सूही राग' में दर्ज चार 'लावां' के पाठ के साथ बाबा दिआल सिंघ जी द्वारा संत बुद्धू शाह सेवा-पंथी की भेरा नगर में स्थित धर्मशाला में १८०८ ई. को हुआ माना जाता है। यह विवाह बाबा दिआल सिंघ जी ने बिना किसी शुभ-अशुभ शगुन को मानते हुए चेत्र के कथित अशुभ माह में करवाया था। इसके बाद उस क्षेत्र के कई सिक्खों ने श्री गुरु ग्रंथ साहिब की हजूरी में 'लावां' पढ़कर अनंद कारज करवाये।

'अनंद मैरिज एक्ट' को पास करवाने के लिए सबसे पहले रियासत नाभा के टिक्का रिपुदमन सिंघ ने आवाज उठाई। वे उस समय वायसराय की कौंसिल के सिक्ख सदस्य थे। १९०७ ई. में बहुत सारी सिक्ख संस्थाओं एवं विद्वानों की राय लेने के बाद ३० अक्तूबर, १९०८ ई. को 'अनंद मैरिज एक्ट' बिल कौंसिल में पेश किया गया। सरकार द्वारा इस बिल पर और अधिक जानकारी लेने के लिए यह बिल सरकारी गजट में तथा कई भाषाओं में प्रकाशित करके बांटा गया। कई संस्थाएं इसके विरोध में खड़ी हो गईं। कई संस्थाओं ने तो इस पर एतराज जताते हुए यहां तक कह दिया कि इस तरह के विवाह को कोई सामाजिक मान्यता नहीं मिलेगी तथा ऐसे विवाह के बाद जो बच्चे पैदा होंगे वे नाजायज माने जायेंगे। इस नाजुक समय पर नामधारी आगू बाबा परताप सिंघ जी टिक्का रिपुदमन सिंघ के समर्थन में खड़े हो गए। राजा जींद ने भी इसका समर्थन कर दिया। स. सुंदर सिंघ मजीठीआ ने भी बिल का विरोध करने वालों को चैलेंज कर दिया तथा उन्होंने चीफ खालसा दीवान के सचिव होने के नाते सिंघ सभाओं, गांवों की पंचायतों, विद्वानों तथा सिक्ख संस्थाओं को पत्र लिखकर इस बिल के समर्थन में खड़े होने की प्रेरणा की। गांवों में से बहुत-से लोगों ने भारी गिनती में सरकार को 'अनंद मैरिज एक्ट' के समर्थन के लिए पत्र लिखे जो आज भी 'नशनल आरकाईव्ज ऑफ इंडिया, नई दिल्ली' में देखे जा सकते हैं।

अंग्रेज सरकार ने इस बिल के पक्ष में सिक्खों की भारी गिनती को देखते हुए शिमला में २७ अगस्त, १९०९ ई. को वायसराय कौंसिल की मीटिंग में इसको पेश कर दिया। कमेटी की रिपोर्ट १० सितंबर, १९०९ ई. की मीटिंग में पेश हुई तथा २२ अक्तूबर, १९०९ ई. को कौंसिल ने सर्वसम्मति के साथ यह बिल पास कर दिया। एक्ट बनकर यह बिल सारे ब्रिटिश इंडिया, जिसमें मौजूदा पाकिस्तान तथा बंगला देश भी शामिल थे, पर लागू हो गया।

'अनंद मैरिज एक्ट' १९०९ के अनुसार निम्नलिखित मदें पास की गईं :

- वे सारे विवाह जो सिक्ख रीति-रिवाजों के साथ होंगे उनको 'अनंद विवाह' कहा जायेगा तथा ये उसी तारीख से ही कानूनी रूप से योग्य होंगे।
- इस एक्ट के अधीन निम्नलिखित शामिल नहीं होंगे :-
  - उन लोगों के विवाह जो सिक्ख धर्म के धारक नहीं हैं।
  - वे विवाह जिन्हें कानूनी तौर पर आयोग्य करार दिया गया हो।
  - इस एक्ट के लागू होने से पहले सिक्खों के किसी भी रीति-रिवाज के साथ हुए विवाहों की

प्रमाणिकता को यह एक्ट खतरा नहीं होगा।

– इस एक्ट के अधीन ऐसे किसी भी विवाह को मान्यता नहीं होगी जो सिक्ख धर्म के अनुसार नहीं हैं या किसी भी तरह अवैध हैं।

सिक्ख अपने स्वभाव के अनुसार जिस तरह मानवता की आजादी के लिए शुरू से संघर्ष करते आ रहे थे उसी के अनुसार अंग्रेजों से भारत को आजाद करवाने के लिए भी कुर्बानियां करने में प्रथम स्थान पर रहे।

अंग्रेज राज्य के समय गुरुद्वारों का प्रबंध सरकारी पिट्ठुओं के हाथ में चला गया था जो गुरुद्वारा साहिबान की जायदादों को अपनी पुश्तैनी होने का भ्रम अपने मन में पाले बैठे थे। उन्होंने गुरुद्वारों में अपनी मनमर्जी तथा सिक्ख रीति-रिवाजों के विपरीत काम करने शुरू कर दिये। स्वाभिमान व गर्व से जीवन बसर करने वाली कौम ने यह कैसे बर्दाश्त करना था? उनके द्वारा अपनी जानें वार कर गुरुद्वारों के प्रबंध को सुचारू तथा गुरमति सिद्धांतों की दिशा में लाने के लिए बड़ी जद्दोजहद से एक लोकतांत्रिक ढंग से चुनी जाने वाली संस्था शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी अस्तित्व में लाई गई। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी बन जाने के बाद उसके आगे सबसे पहला कार्य सिक्खों के लिए दसतूर-ए-अमल (रहित मर्यादा) तैयार करना था, इसलिए सख़्त मेहनत तथा कई दशक भर काम करके सिक्ख धर्म के लिए एक 'पंथक रहित मर्यादा' तैयार की गई, जिसमें सिक्खों को गृहस्थ जीवन धारण करते समय 'अनंद विवाह' की मर्यादा जो पहले से ही चलती आ रही थी, विचार करके लिखित रूप में पक्की कर दी गई। 'सिक्ख रहित मर्यादा' के अनुसार अनंद विवाह निम्नलिखित अनुसार होता है :

(क) सिक्ख-सिक्खणी का विवाह, बिना जात-पात, गोत्र विचारे होना चाहिए।

(ख) सिक्ख की पुत्री का विवाह सिक्ख के साथ ही हो।

(ग) सिक्ख का विवाह 'अनंद' रीति के साथ करना चाहिए।

(घ) लड़की-लड़के का विवाह बचपन में करना वर्जित है।

(ङ) जब लड़की शरीर, मन तथा आचार करके विवाह करने के योग्य हो जाए तो किसी योग्य सिक्ख के साथ 'अनंद' पढ़ाया जाए।

(क) 'अनंद' से पहले कुड़माई की रस्म जरूरी नहीं, किंतु अगर करनी हो तो लड़की वाले किसी दिन संगत जोड़कर श्री गुरु ग्रंथ साहिब के हजूर अरदासा सोधकर एक कृपाण, कड़ा तथा कुछ मीठा लड़के के पल्ले में डाल दें।

(ख) 'अनंद' का दिन निश्चित करते समय कोई थिति-वार, अच्छे-बुरे दिन की खोज करने के लिए पत्री देखना मनमति है। कोई दिन, जो दोनों पक्षों को आपस में सलाह करके अच्छा लगे, नियत कर लेना चाहिए।

(ग) सिहरा, मुकुट या गाना बांधना, पित्तर पूजने, कच्ची लस्सी में पांव डालना, बेरी या जंडी काटना, घड़ोली भरना, रूठ कर जाना, छंद पढ़ने, हवन करना, वेदी गाढ़नी, वेश्या का नाच, शराब आदि मनमति है।

(घ) जितने कम आदमी लड़की वाला मंगाये उतने साथ लेकर लड़का ससुराल घर जाये, दोनों

ओर गुरबाणी के शबद गाये जायें तथा 'फतह' गजाई जाये।

(झ) विवाह के समय श्री गुरु ग्रंथ साहिब के हजूर दीवान लगे। संगत या रागी कीर्तन करें। फिर लड़की एवं लड़का श्री गुरु ग्रंथ साहिब के हजूर बिठाए जाएं। लड़की लड़के के बायीं तरफ बैठे। संगत की आज्ञा लेकर 'अनंद' पढ़ाने वाला सिक्ख (मर्द या स्त्री) लड़की-लड़के तथा उनके माता-पिता या संरक्षकों को खड़ा करके 'अनंद' का अरदासा सोधे। फिर वह लड़के-लड़की को गुरमति के अनुसार गृहस्थ धर्म के फर्जों का उपदेश करे।

पहले दोनों को सांझा उपदेश करे। इसमें सूही राग की 'लावों' के भाव के अनुसार पति-पत्नी के संबंध को जीव तथा परमात्मा के प्यार के नमूने पर ढालने की विधि बताये।

आपस में प्रेम द्वारा 'एक जोति दुइ मूरती' होना बताये तथा गृहस्थ धर्म निभाते हुए अपने सांझे पालनहार 'अकाल पुरख' के साथ एकचित्त होना दृढ़ाए। दोनों ने इस संयोग को मनुष्य-जन्म की यात्रा को सफलता से निभाने का साधन बनाना है। दोनों ने इस संयोग के जरिए पवित्र एवं गुरमुखी जीवन बिताना है। फिर लड़के तथा लड़की को अपने-अपने अलग-अलग गृहस्थ धर्म के फर्ज बताये जाएं।

वर को बताया जाये कि लड़की वालों ने आपको ही सबसे बढ़कर योग्य जानकर वर चुना है। आपने अपनी पत्नी को अर्द्धांगिनी जानकर सारी अवस्थाओं में एक जैसा प्यार करना है तथा बांट कर छकना है। इसके शरीर तथा इज्जत के रखवाले आप हो। स्त्रीव्रत धर्म में पक्के रहना, इसके माता-पिता तथा संबंधियों को अपने माता-पिता एवं संबंधियों के तुल्य सम्मान देना।

लड़की को बताया जाये कि आपको श्री गुरु ग्रंथ साहिब और संगत के हजूर इस सज्जन के लड़ लगाया जाता है। आपने इनके निर्मल भय में रहते हुए इनको ही अपने सारे प्रेम तथा श्रद्धा का मालिक समझना, दुख-सुख, देश-प्रदेश में अपने पतिव्रत धर्म में पक्के रहना, सेवा करनी। इनके माता-पिता एवं संबंधियों को अपने माता-पिता तथा संबंधियों की भांति जानना।

उपदेश की बातें प्रवान करते हुए वर और कन्या दोनों श्री गुरु ग्रंथ साहिब के आगे माथा टेकें। फिर लड़की का पिता या मुखिया अथवा संबंधी अथवा लड़के का पल्ला लड़की के हाथ में पकड़ाये तथा ताबिया पर बैठा सज्जन 'सूही महला ४' में दी गई 'लांवां' का पाठ सुनावे। हरेक 'लांव' का पाठ होने के उपरांत आगे वर और पीछे कन्या वर का पल्ला पकड़कर श्री गुरु ग्रंथ साहिब की चार परिक्रमा करें। परिक्रमा करते समय रागी या संगत 'लांवां' को क्रम अनुसार सुर के साथ गाते जायें तथा वर-कन्या हर एक 'लांव' के बाद माथा टेक कर अगली 'लांव' सुनने के लिए खड़े हो जाएं। उपरांत माथा टेककर अपनी जगह पर बैठ जायें तथा रागी सिंघ या 'अनंद' करवाने वाला 'अनंद साहिब' की पहली पांच पउड़ियां तथा अंतिम पउड़ी का पाठ करे। फिर 'अनंद' की समाप्ति का अरदासा सोधा जाये और कड़ाह परशाद बरताया जाए।

(च) अनमति वालों का विवाह 'अनंद' रीति के अनुसार नहीं हो सकता।

(छ) लड़के या लड़की का संयोग पैसे लेकर न करे।

(ज) अगर कन्या के माता-पिता कभी सौभाग्य से कन्या के घर में जाएं और वहां प्रशाद तैयार हो तो खाने से संकोचना नहीं। अन्न न खाना सब भ्रम है। खालसे को खाना-खिलाना

श्री गुरु बाबे अकाल पुरख ने बख्शा है। बेटी-बेटे वाले आपस में खाते-पीते रहें, इसी लिए गुरु ने दोनों संबंधी एक किए हैं।

(झ) अगर स्त्री का पति कालवश हो जाये, वो चाहे तो योग्य वर देखकर पुनर्संयोग कर ले। सिक्ख की स्त्री मर जाये तो उसके लिए भी यही हुक्म है।

(ञ) पुनर्विवाह की भी यही रीति है जो 'अनंद' के लिए ऊपर बताई है।

(ट) आम हालातों में सिक्ख को एक स्त्री के होते हुए दूसरा विवाह नहीं करना चाहिए।

(ठ) अमृतधारी सिंघ को चाहिए कि अपनी सिंघणी को अमृत छका ले।

हिंदुओं में विवाह की रस्म सिक्खों के 'अनंद विवाह' से बिलकुल विपरीत है। हिंदू विवाह-रीति के अनुसार विवाह से पहले 'चरण रोकणा' या 'ठाकणा' होता है। इसके बाद 'कुड़माई' या 'सगाई' की रस्म की जाती है जिसके अनुसार लड़के की झोली में शगुन डालकर उसके मुंह में छुहारा डाला जाता है तथा माथे पर टीका लगाया जाता है। कुड़माई की रस्म लड़की के घर की जाती है। इस मौके पर लड़की गणेश जी की पूजा करती है तथा पंडित पत्री से देखकर शुभ माह की तारीख पक्की करता है जो सभी को माननी पड़ती है। इस रस्म को हिंदुओं में 'साहा' (मुहूर्त) निकलवाना भी कहा जाता है।

विवाह से पहले लड़के और लड़की के घर कई प्रकार की रस्में की जाती हैं। मामे आकर विवाह वाले लड़की-लड़के से शांत करवाते हैं। पित्तरों की पूजा की जाती है। घोड़ी की रीति की जाती है, जठेरों की पूजा तथा 'जंडी वढ्डण' की रस्म अदा की जाती है। हिंदू रीति के अनुसार विवाह अग्नि के चारों ओर सात फेरे करवाता हुआ पंडित मंत्र उच्चारण करके करता है। इस समय कई तरह का दान भी लिया जाता है। मंनू तथा अन्य ऋषियों ने हिंदू धर्म में आठ प्रकार के विवाह माने हैं :

(१) ब्रह्म विवाह : वर को घर बुलाकर गहनों, कपड़ों सहित कन्या देना।

(२) दैव विवाह : यज्ञ कराने वाले ऋत्विज को कन्या देना।

(३) आसं विवाह : वर से बैल लेकर उसके बदले कन्या देना।

(४) प्राजापत्य विवाह : लड़के और लड़की की परस्पर सहमति से संतान-उत्पत्ति के लिए विवाह करना।

(५) आसुर विवाह : धन लेकर कन्या देना।

(६) गांधर्व विवाह : शादी से पहले वर तथा कन्या की आपस में प्रीति होने पर विवाह करना।

(७) राक्षस विवाह : जंग में जीतकर कन्या ले जाना।

(८) पैशाच विवाह : जुल्म से रोती कन्या छीन कर ले जाना।

जब अंग्रेजों ने भारत छोड़ने का फैसला किया तो उन्होंने भारत की तीन कौमें--हिंदू, सिक्ख तथा मुसलमान को अलग-अलग तौर पर प्रतिनिधता दी तथा इनको अपने अलग-अलग क्षेत्र देने की पेशकश भी की। मुसलमानों ने अपना अलग क्षेत्र पाकिस्तान लेना प्रवान कर लिया। सिक्खों को दोनों कौमों हिंदू एवं मुसलमानों द्वारा अपने-अपने साथ मिलाए जाने की पेशकश की गई। सिक्खों ने भारत के साथ रहना प्रवान किया। उस समय के कौमी नेताओं

ने सिक्खों के साथ यह वादा भी किया कि सिक्खों का आजाद भारत में एक अलग क्षेत्र होगा जिसमें वे आजादी का आनंद ले सकेंगे। मिस्टर जिनाह ने जो सिक्खों को पाकिस्तान के साथ मिलाने की पेशकश की थी वह सिक्खों ने अस्वीकार कर दी।

१५ अगस्त, १९४७ ई को भारत स्वतंत्र हो गया तो सिक्खों को ही इसका भारी जानी एवं माली नुकसान उठाना पड़ा। सारा देश आजादी का जश्न मना रहा था मगर आजादी के लिए सबसे ज्यादा कुर्बानियां करने वाली सिक्ख कौम का कत्लेआम हो रहा था, उनके घर उजाड़े जा रहे थे और वे इतना बड़ा कहर अपने शरीर पर झेल रहे थे।

देश की स्वतंत्रता के बाद १९५० ई में देश का नया संविधान लागू किया गया। इसके अनुसार 'हिंदू मैरिज एक्ट १९५५' पास किया गया, जो जम्मू-कश्मीर को छोड़कर शेष सारे भारत पर लागू कर दिया गया, जिसके अनुसार कोई भी व्यक्ति, जो बुद्ध, जैन तथा सिक्ख धर्म से संबंध रखता है, कोई भी व्यक्ति जो उस क्षेत्र से संबंधित है, जहां पर यह एक्ट लागू होता है और जो मुसलिम, पारसी तथा ईसाई धर्म से संबंध नहीं रखता, उन सभी लोगों का विवाह 'हिंदू मैरिज एक्ट' के अधीन रजिस्टर्ड होगा।

इस एक्ट के पास हो जाने से 'अनंद मैरिज एक्ट १९०९' को 'हिंदू मैरिज एक्ट १९५५' का ही एक हिस्सा बना दिया गया। सिक्खों को 'हिंदू मैरिज एक्ट १९५५' के अधीन लाकर हिंदुओं का ही एक हिस्सा माना जाने लगा। संविधान की धारा २५(२) के अनुसार सिक्ख हिंदू धर्म का हिस्सा बना कर रख दिये गए हैं जो कि उनके साथ घोर अन्याय है।

दुख एवं आश्चर्य की बात है कि सिक्खों को देश की आजादी के लिए अनेकों कुर्बानियां करने के बाद अलग स्टेट लेने की अंग्रेजों द्वारा देश-विभाजन के समय हुई पेशकश को ठुकराने तथा मुसलिम स्टेट पाकिस्तान से अलग रहकर अपनी तकदीर भारत के साथ जोड़ने के बाद देश की रक्षा के लिए सबसे आगे होकर कुर्बानियां करने तथा देश की प्रगति में बेमिसाल योगदान देने के बाद भी 'अनंद मैरिज एक्ट' को सही रूप में लागू कराने के लिए संघर्ष करना पड़ रहा है। यह सत्ताधारियों द्वारा एक देश-भक्त कौम, जो कि देश की अल्पसंख्यक कौम है, के साथ की जा रही घोर बेइंसाफी है।

वैसे भी यह हकीकत है कि देश में अन्य दूसरी अल्पसंख्यक कौमों को भी कई पक्षों से अन्याय एवं ज्यादतियों का शिकार समय-समय पर बनना पड़ता है, इसके बावजूद सिक्खों की हालत अधिक चिंताजनक बनी हुई है। देश के सत्ताधारी मुसलमानों की अलग पहचान को मानते हुए उनको अलग तरह से अपने निकाह रजिस्टर्ड कराने का अधिकार देते हैं परंतु सिक्खों को उनके हर तरह से योग्य अधिकार देने से इंकार करते हुए सत्ताधारी अपनी सिक्ख एवं सिक्खी-विरोधी सोच का प्रकटावा कर रहे हैं। यहां पर यह बात सबके ध्यान में लाने योग्य है कि उपरोक्त स्थिति के विपरीत पाकिस्तान सरकार ने लगभग ५०,००० सिक्खों की मांग पर गौर करते हुए 'अनंद मैरिज एक्ट १९०९', जो कि अंग्रेज सरकार ने पास किया था तथा आजादी के बाद यह एक्ट भारत, पाकिस्तान और बंगलादेश में उसी तरह लागू रहा था, को लगभग सौ साल बाद दोबारा 'अनंद मैरिज एक्ट २००७' के रूप में लागू कर दिया गया है।

'अनंद मैरिज एक्ट' के अधीन सिक्खों के विवाह 'हिंदू मैरिज एक्ट' के तहत रजिस्टर्ड होने का एतराज तब सामने आया जब विदेशों में रोजगार के लिए गए सिक्खों को अपने परिवारों को अपने पास बुलाने के लिए विवाह रजिस्टर्ड करवाने की जरूरत पड़ी। कुछ समय पहले सुप्रीम कोर्ट द्वारा भी हर एक को अपना विवाह रजिस्टर्ड करवाने की हिदायत की गई। ऐसे समय में जब सिक्खों ने अपने विवाह-रजिस्ट्रेशन के सर्टीफिकेट प्राप्त किए तो वे चकित रह गए कि उनके 'अनंद विवाह' को 'हिंदू मैरिज एक्ट' के अधीन रजिस्टर्ड किया गया था।

क्या हमारे सत्ताधारियों को यह पता नहीं कि श्री गुरु नानक देव जी ने उस समय देश भर में लंबी प्रचार-यात्राएं करके कौम को घोर अज्ञानता तथा व्यर्थ के कर्मकांडों के कुचक्र से निकालकर विलक्षण सिक्ख धर्म की स्थापना की थी? क्या हमारे सत्ताधारियों को यह मालूम नहीं कि गुरु के नाम-लेवा सिक्ख केवल एक ही अकाल पुरख की हस्ती को मानते हैं और वे मूर्ति-पूजा को नहीं मानते? सिक्ख की तो समूची रहिणी तथा जीवन-युक्ति ही निराली है, तो फिर क्या वे सिक्खों को हिंदू धर्म का हिस्सा कहकर, लिखकर या समझ कर उनको इसमें जज्ब कर सकते हैं? कभी भी नहीं। गुरु नानक नाम-लेवा सिक्ख अपना विलक्षण साबत-सूरत स्वरूप रखता है तथा वो सतिगुरु द्वारा बख्शी निर्मल सोच का सदका अपने शीश पर दसतार सजाता है। गुरु का सिक्ख किसी के साथ वैर-विरोध, नफरत तथा ईर्ष्या नहीं रखता। वो सारी मानवता में उस परमात्मा का नूर देखता-महसूस करता है, क्योंकि उसको निर्मल गुरबाणी की घुट्टी मिलती है। सिक्खों ने तो अपने धार्मिक स्थान भी अपने तक सीमित न रखते हुए सारी मानवता के लिए सच्चे रूहानी आनंद एवं आध्यात्मिक शांति के लिए खुले व विशाल रखे हुए हैं, फिर उनके साथ वैर-विरोध, नफरत तथा ईर्ष्या का भाव इस देश में क्यों रखा जा रहा है? जब सिक्ख किसी के अधिकारों को नहीं छीनते तो फिर उनके अधिकार उनसे क्यों छीनने के यत्न किये जाते हैं? शायद सत्ताधारियों की यह सोच हो कि सिक्खों को दबाकर एवं उलझाकर रखना उनका ठीक और फिट बैठने वाला पैंतरा है। उनको यह समझना चाहिए कि पहले भी सिक्खों को उनके कई अधिकार जोरदार संघर्षों के बाद दिए ही हैं।

इसलिए चाहे पंजाबी सूबे की प्राप्ति हो या पंजाब की राजधानी के लिए चंडीगढ़ लेना हो या पंजाबी बोलने वाले इलाके पंजाब को देने की बात हो, पंजाबियों को इन मांगों के लिए संघर्ष ही करना पड़ा और करना पड़ रहा है। पंजाबियों, विशेष रूप से सिक्खों को मीडिये के जरिए मजाक का पात्र बनाकर, उनके बहादुरी भरे कारनामों को आंखों से ओझल करके उनके अक्स को बिगाड़ कर दुनिया के सामने पेश किया जा रहा है।

यह सारी दुनिया को पता है कि अभी भी सिक्खों के कई अधिकार सरकार ने दबाये हुए हैं। देश अगर अलग-अलग धर्मों तथा सभ्याचारों का संयोग है तो सारे धर्मों एवं सभ्याचारों को मान्यता देनी, उनका सत्कार करना इस देश के हरेक सत्ताधारी दल की मूल नीति होना चाहिए तथा यही इस देश के ज्यादा-से-ज्यादा संभावी विकास के लिए पूरी तरह से अनुकूल होता है। यही केंद्रीय तथा सबसे अहम नुक्ता है जिसको हमारे सत्ताधारी जाने-अनजाने में अपनाने के सही रास्ते पर नहीं आ रहे, जिस कारण देश की असीम लोक-शक्ति का संभव सदुपयोग नहीं

किया जा रहा तथा कीमती प्राकृतिक स्रोतों एवं व्यापक मानवी शक्ति के होते हुए देश पछड़ेपन का शिकार है।

'अनंद मैरिज एक्ट' तो पहले ही बना पड़ा है। अमल या व्यवहार में सिक्ख अनंद विवाह ही करते आ रहे हैं, परंतु सत्ताधारी सरकार की मौजूदा नकारात्मक जिद, सांकरी सोच तथा नीति का सदका सिक्खों के विवाह को 'अनंद विवाह' के रूप में रजिस्टर्ड किए जाने की व्यवस्था नहीं बनने दी जा रही जो घोर गलत व्यवहार है, जिसे और ज्यादा बर्दाश्त करना मुश्किल है। यह सभी को पता ही है कि विवाह के बाद विवाहित दंपत्तियों को इस संबंधी कानूनी मान्यता प्राप्त करनी ही पड़ती है। ऐसी हालत में जब सिक्ख दंपत्ति को 'अनंद रीति' के अनुसार विवाह करवाकर 'हिंदू विवाह कानून' के अनुसार विवाह हुए होने की झूठी बात लिखित रूप में स्वीकार करनी पड़ती है तो उसे घोर अपमान के एहसास से गुजरना पड़ता है। अपना धर्म हर एक को प्यारा होता है। अपने धर्म के अनुसार धार्मिक एवं सामाजिक रस्में निभाना तो हम सबका संवैधानिक अधिकार है। अगर किसी को रस्म तो अपने धर्म के अनुसार निभाने की छूट हो किंतु उसकी उस रस्म को किसी अन्य धर्म के साथ जोड़ने का यत्न किया जाए तो यह एक खास किस्म का हस्तक्षेप है जो किसी भी तरह धार्मिक आजादी पर हमले से कम नहीं। सरकार को उक्त सारी स्थिति को समझते हुए लंबे समय से अपने द्वारा किया जा रहा एक अल्पसंख्यक कौम के साथ अन्याय का व्यवहार छोड़कर मामूली संशोधन करने से अपना मौजूदा जिद्दी व्यवहार सुधारना चाहिए। इस सवाल पर अब सिक्ख और ज्यादा सामाजिक-मानसिक पीड़ा एवं अन्याय नहीं सहन कर सकेंगे। जब सरकार ने संविधान में संशोधन करने के लिए राय एकत्र की थी तो उस समय भी 'अनंद मैरिज एक्ट' के अधीन विवाह रजिस्टर्ड करने के लिए संशोधन की यह मुख्य मांग थी। 'अनंद मैरिज एक्ट-१९०९' को संशोधित कर लागू करने के लिए केंद्रीय सरकार द्वारा जो सांझी संसद कमेटी बनाई थी उसके द्वारा भी २००७ ई में आम सहमति से पास करने की सिफारिश कर दी गई थी, जिसको रद्द करना सिक्ख कौम के साथ बहुत बड़ा धक्का है। उनको इस संबंध में अगर संघर्ष करना पड़ा तो वे करेंगे, परंतु इसके लिए यदि देश-कौम का किसी तरह का कोई नुकसान होता है तो इसके जिम्मेदार सत्ताधारी ही होंगे।

श्री गुरु रामदास जी की जीवनी, श्रद्धा-भक्ति और सेवा-भावना

*-बीबी कुलबीर कौर**

श्री (गुरु) रामदास जी का जन्म २५ आश्विन, संवत् १५९१ को चूना मंडी, लाहौर में हुआ। इनके पिता का नाम श्री हरदास मल और माता का नाम माता दया कौर था। ये सिक्ख पंथ के चतुर्थ सतिगुरु हुए। इनकी शादी श्री गुरु अमरदास जी की छोटी सपुत्री बीबी भानी जी के साथ संवत् १६१० की २२ फाल्गुन को गोइंदवाल साहिब नामक स्थान पर हुई।

बीबी भानी जी ने तीन पुत्रों को जन्म दिया--संवत् १६१५ में प्रिथीचंद, संवत् १६१७ में महादेव और संवत् १६२० में श्री (गुरु) अरजन देव जी।

श्री (गुरु) रामदास जी के पिता जी का जब परलोक गमन हुआ, उस समय इनकी आयु बहुत छोटी थी। इनकी नानी मां इन्हें अपने साथ गांव बासरके ले गईं, जहां इनकी ननिहाल थी। इस समय इनकी आयु लगभग ७-८ वर्ष की थी। ननिहाल में वे काले चने की घुंघणियों (उबले हुए चने) को छाबड़ी लगाकर बेचते थे। इनको गुरगद्दी पर आसीन होने से पहले 'जेठा' नाम से ही बुलाया जाता था।

जब श्री गुरु अमरदास जी श्री गुरु अंगद देव जी की आज्ञा पाकर अपने परिवार को गोइंदवाल ले आए उस समय श्री (गुरु) रामदास जी भी अपनी ननिहाल बासरके से गोइंदवाल आ गए। श्री गुरु अमरदास जी अच्छी तरह से जानते थे कि वे यतीम हैं और बड़े नेक हैं। इन पर गुरु जी की कृपा-दृष्टि थी, अत: वे श्री (गुरु) रामदास जी को गोइंदवाल ले जाकर किसी काम में लगाना उचित समझते थे। श्री गुरु अमरदास जी का आशीर्वाद पाकर श्री (गुरु) रामदास जी ने गोइंदवाल में बसना उपयुक्त समझा और घुंघणियां बेचने का काम ही करते रहे, जो वे गांव बासरके में भी करते थे। घुंघणियां बेचने के उपरांत जो समय बच जाता उसे गुरु जी की सेवा में बिता देते थे। जब समय मिलता तो श्री (गुरु) रामदास जी संगत के जूठे बर्तन मांजते, उन्हें पंखा झेलते, शीतल जल छकाते, गुरु के सिक्खों को बड़ी श्रद्धा और प्यार के साथ स्नान करवाते थे।

गुरसिक्खों के प्रति श्री (गुरु) रामदास जी के मन में श्रद्धा-भाव तथा प्यार देख कर, इनकी सेवा और नम्रता की भावना निहार कर तथा शारीरिक आरोग्यता व हर तरह की योग्यता से मुग्ध होकर श्री गुरु अमरदास जी ने अपनी छोटी सपुत्री बीबी भानी जी का विवाह उनके साथ कर दिया।

अपने विवाह के उपरांत भी (गुरु) जी सेवा-कार्यों को समर्पित हो गोइंदवाल साहिब में ही टिके रहे। उनमें दामाद होने का अभिमान नाम-मात्र के लिए भी नहीं था बल्कि गुरु जी के प्रति प्रेम और श्रद्धा की भावना में और भी वृद्धि हो गई। वे एक गुरसिक्ख के रूप में गुरु जी की निजी सेवा और संगत की सेवा में पहले से भी अधिक व्यस्त रहने लगे।

श्री (गुरु) रामदास जी सवेरे श्री गुरु

***Educator, Hibiscus Lane, Quatre Barness, Mauritius.**

अमरदास जी को स्नान करवाते, उनके कपड़े धोते, उनको प्रसाद खिलाते, शरीर दबाते और आवश्यकतानुसार उनकी आज्ञा-पालन के लिए सेवा में प्रस्तुत रहते :

हउ मूरखु कारै लाईआ नानक हरि कंमे ॥
(पन्ना ४४९)

वैसाखी के दिन संवत् १६१६ को जब बाउली साहिब की कार-सेवा आरंभ हुई तो श्री (गुरु) रामदास जी ने आम गुरसिक्खों की भांति सिर पर टोकरी उठा, रात-दिन एक करके सेवा की। इनकी दास-भावना की सेवा पर गुरु जी बहुत प्रसन्न रहते थे। दास-भावना की सेवा ने तो गुरु जी का दिल ही जीत लिया था।

श्री गुरु अमरदास जी की सपुत्री बीबी भानी जी अपने परम-पूज्य पिता जी की सेवा तन-मन से नम्रतापूर्वक करती थीं एवं गुरु जी की इच्छानुसार प्रसाद तैयार करके उनको खिलाती थीं। वृद्ध शरीर के कारण उनके खाने-पीने तथा पहनने का बीबी भानी जी हर तरह से ध्यान रखती थीं तथा अधिक समय अपने पूज्य पिता जी के पास ही व्यतीत करती थीं। श्री गुरु अमरदास जी अपनी सपुत्री और सपुत्र-स्वरूप दामाद द्वारा की गई सेवा पर हृदय से प्रसन्न थे।

बीबी भानी जी तथा श्री (गुरु) रामदास जी की अनथक सेवा से प्रसन्नचित्त श्री गुरु अमरदास जी ने झबाल परगने की पांच सौ बीघा जमीन का पटा, जो बादशाह अकबर ने उन्हें लंगर के लिए भेंट में दिया था, श्री (गुरु) रामदास जी तथा बीबी भानी जी को दे दिया। इस जमीन की देखभाल के लिए गुरु जी ने बाबा बुड्ढा जी को नियत कर दिया।

श्री (गुरु) रामदास जी ने संवत् १६३१ में श्री गुरु अमरदास जी की आज्ञा से 'गुरु का चक्क' की नींव रखी। नगर की नींव रखकर अपने आवास के लिए श्री (गुरु) रामदास जी ने घर बनाए थे, वह जगह अब 'गुरुद्वारा गुरू के महिल' के नाम से प्रसिद्ध है। इन महलों में श्री गुरु रामदास जी, श्री गुरु अरजन देव जी तथा श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने निवास किया था।

जनसाधारण के उपकार के लिए उस समय कुएं खुदवाना तथा ताल, बाउली, पोखर आदि बनवाना बड़े परोपकार का कार्य होता था। ग्राम के पास समाज-सेवक पानी जमा करने की कोई न कोई ऐसी योजना बनाते थे जो अनावृष्टि या सूखे के समय सबके काम आती थी। उस समय ज्यादा वर्षा न होने के कारण कई बार इतना सूखा पड़ता था कि पशु-पक्षी और मनुष्य-मात्र बहुत कष्ट सहते थे। श्री (गुरु) रामदास जी ने 'गुरू का चक्क' की नींव रखने के पहले एक सरोवर भी खुदवाया। इस सरोवर को श्री गुरु अरजन देव जी ने पूरा करके पक्का किया और इसका नाम 'संतोखसर' रखा।

श्री गुरु अमरदास जी ने श्री (गुरु) रामदास जी को हर प्रकार से योग्य जानकर, उनकी नम्रता और सेवा-भावना से प्रसन्न होकर २ आश्विन, संवत् १६३१ (१ सितंबर, १५७४) को गुरगद्दी पर बैठाकर चौथे 'गुरु' के रूप में नियुक्त कर दिया :

सभ बिधि मान्यिउ मनु तब ही भयउ प्रसंनु
राजु जोगु तखतु दीअनु गुर रामदास ॥
(पन्ना १३९९)

इस ऊंची पदवी को प्राप्त करके आप जी ने अपनी पहली यतीम दशा को मुख्य रखकर यह शबद उच्चारण किया :

जो हमरी बिधि होती मेरे सतिगुरा

सा बिधि तुम हरि जाणहु आपे ॥
हम रुलते फिरते कोई बात न पूछता
गुर सतिगुर संगि कीरे हम थापे ॥
धंनु धंनु गुरू नानक जन केरा
जितु मिलिऐ चूके सभि सोग संतापे ॥
(पन्ना १६७)

श्री गुरु रामदास जी द्वारा गुरगद्दी संभालने के समय दिल्ली के तख्त पर बादशाह अकबर आसीन था। गुरगद्दी प्राप्त करके श्री गुरु रामदास जी कुछ समय तक गोइंदवाल ही रहकर संगत को प्रसन्न करते रहे; तदुपरांत गुरु जी अपने निर्मित नगर 'गुरू का चक्क' आ गए। यहां आकर गुरु जी ने कसबे के लोगों को अधिक से अधिक सुविधाएं देकर नगर में बसाया तथा नगर की शोभा बढ़ाई। इसके साथ ही गुरु जी ने संवत् १६३४ में एक और सरोवर की खुदाई करवाई। इस सरोवर का नाम गुरु जी के नाम पर 'रामदास सरोवर' प्रसिद्ध हो गया। श्री गुरु अरजन देव जी ने 'रामदास सरोवर' का श्री गुरु ग्रंथ साहिब में वर्णन करके इसकी महिमा का गुणगान किया है :

--संतहु रामदास सरोवरु नीका ॥
जो नावै सो कुलु तरावै उधारु होआ है जी का ॥ (पन्ना ६२३)
--रामदासि सरोवरि नाते ॥
सभि उतरे पाप कमाते ॥ (पन्ना ६२५)

श्री गुरु रामदास जी के गुरगद्दी पर बैठने के बाद 'गुरू का चक्क' नगर का नाम 'चक्क रामदास' तथा 'रामदासपुर' प्रचलित हो गया। श्री गुरु अरजन देव जी ने इस नाम का वर्णन भी अपनी बाणी में किया है :

वसदी सघन अपार अनूप रामदासपुर ॥
हरिहां नानक कसमल जाहि नाइऐ रामदास सर ॥ (पन्ना १३६३)

बाद में 'रामदास सरोवर' को 'अमृत सर' (अमृत का सरोवर) के नाम से जाना जाने लगा। इसी नाम पर नगर का नाम 'श्री अमृतसर' प्रचलित हो गया।

श्री गुरु रामदास जी ने लोगों पर बहुत उपकार किया। उन्होंने श्री अमृतसर नगरी में लोगों को तरह-तरह की सुविधाएं दीं। गुरु जी ने सिक्खी के प्रचार के लिए भाई गुरदास जी आदि विद्वानों को दूसरे क्षेत्रों में भेजकर श्रद्धालुओं को सिक्खी का दान देकर कृतार्थ किया।

गुरु जी ने 'लावां' नामक बाणी रचकर सिक्ख-धर्म की विलक्षण विवाह-मर्यादा कायम की। गुरु जी द्वारा उच्चरति ३० रागों में रागबद्ध बाणी के ६४४ शबद श्री गुरु ग्रंथ साहिब में सुशोभित हैं।

श्री गुरु रामदास जी ने अपने सपुत्र श्री गुरु अरजन देव जी को पूरी तरह योग्य जानकर पंचम पातशाह के रूप में गुरगद्दी पर आसीन किया। इसके बाद गुरु जी २ आश्विन, संवत् १६३८ को गोइंदवाल साहिब में शरीर त्याग कर प्रभु-ज्योति में समा गए।

हम चात्रिक हम चात्रिक दीन . . .

*-डॉ. सत्येंद्रपाल सिंघ**

मानव जीवन के रूप में जीव को एक अनमोल अवसर मिला है अपने प्रियतम से मिलने का, जिससे बिछुड़े हुए सदियां गुजर गयी हैं। उससे मिले बिना आत्म-सुख नहीं है और उससे मिलने की राह बड़ी कठिन है। राह कठिन इसलिये है कि जीव और प्रियतम के बीच की दूरी अवरोधों से भरी पड़ी है। माया-मोह, विकार, संशय, अज्ञान का अंधकार, दृष्टि का विचलन, ये ऐसे अवरोध हैं जो स्वयं के उत्पन्न किये हुए हैं। श्री गुरु रामदास जी ने इस बीच की दूरी को मिटा कर परमात्मा को पाने का सूत्र भी बताया और स्वयं भी उसे करके दिखाया, तभी वे भाई जेठा जी से श्री गुरु रामदास जी तक का सफर तय कर सके। उन्होंने स्वयं भी मानव जीवन का मोल समझा और संसार को बताया भी कि जीवन का मूल्यांकन कैसे करें। जब से सृष्टि बनी है कदाचित् तभी से एक बड़ा सवाल मनुष्य के सामने बार-बार आता रहा है कि आखिर जीवन है क्या? अलग-अलग फलसफे मनुष्य को लुभाते हैं और पूरी उम्र उन फलसफों के बीच जीवन का अर्थ ढूंढने में गुजर जाती है। श्री गुरु रामदास जी ने सारे संशयों, दुविधाओं को सिरे से खारिज करते हुए कहा कि यह मानव जीवन तो बड़े पुण्य से प्राप्त हुआ है :

देह तेजणि जी रामि उपाईआ राम ॥
धंनु माणस जनमु पुंनि पाईआ राम ॥
माणस जनमु वड पुंने पाइआ देह सु कंचन चंगड़ीआ ॥
गुरमुखि रंगु चलूला पावै हरि हरि नव रंगड़ीआ ॥
एह देह सु बांकी जितु हरि जापी हरि हरि नामि सुहावीआ ॥
वडभागी पाई नामु सखाई जन नानक रामि उपाईआ ॥१॥ *(पन्ना ५७५)*

श्री गुरु रामदास जी ने मनुष्य देह को सोने की संज्ञा दी, एक खरा और चमकदार सोना जिससे अमूल्य कुछ और नहीं हो सकता। जीव ने कितने ही पुण्य किये होंगे जिससे उसे यह मनुष्य देह हासिल हुई है। इस देह को परमात्मा ने कंचन-सा बना कर दिया है और यह उस तरह परमात्मा के रंग से खिल उठी है जिस तरह पोस्ते के फूल का रंग मनमोहक और सुंदर होता है। यही शरीर जब परमात्मा में रमने लगता है तो उसकी शोभा और अधिक बढ़ जाती है तथा उसका बांकापन बेमिसाल हो उठता है। उपरोक्त वचन में जहां गुरु साहिब मनुष्य-जीवन का महत्व समझाते हैं वहीं परमात्मा के प्रति उनके अगाध प्रेम, परमात्मा की कृपा के प्रति रोम-रोम में प्रकट हो रहे उनके आभार और असीम विनम्रता के भी दर्शन होते हैं। गुरु साहिब की यह जीवन-दृष्टि इतनी मूल्यवान है कि इसे समझे बिना जीवन की गति हो ही नहीं सकती। बड़े से बड़ा दर्शन-शास्त्र भी मनुष्य को परमात्मा के निकट नहीं ला सकता यदि हम श्री गुरु रामदास जी की उपरोक्त जीवन-दृष्टि पर विश्वास करके उसे अंगीकार नहीं करते।

**E-१७१६, राजाजीपुरम, लखनऊ-२२६०१७, मो. : ९४१५९६०५३३*

यह दृष्टि ही मनुष्य में प्रेम, विश्वास तथा समर्पण की भावना पैदा करती है और परमात्मा की राह दिखने लगती है। गुरु साहिब मानव-देह की तुलना घोड़ी से करते हैं। घोड़ी की शारीरिक रचना ही ऐसी है कि वह झुकी हुई है अर्थात् विनम्रता की प्रतीक है। घोड़ी की चाल उसके सवार पर निर्भर करती है अर्थात् जीवन का सदुपयोग-दुरुपयोग मनुष्य के हाथ में ही है। घोड़ी पर कैसा भार लादना है यह उसके स्वामी के हाथ में होता है। इसी तरह मनुष्य के हाथ में है कि वह तन को विकारों, अवगुणों से दूषित कर ले अथवा सद्‌विचारों से भरपूर कर दे। घोड़ी पर नहीं यह लगाम पर निर्भर करता है कि वह कैसे कसी जा रही है। यह घोड़ी पर नहीं बल्कि इस पर सवार स्वामी पर निर्भर करता है कि उस पर कैसी जीन डाली जा रही है:

देह पावउ जीनु बुझि चंगा राम ॥
चड़ि लंघा जी बिखमु भुइअंगा राम ॥
बिखमु भुइअंगा अनत तरंगा गुरमुखि पारि लंघाए ॥
हरि बोहिथि चड़ि वडभागी लंघै गुर खेवटु सबदि तराए ॥ (पन्ना ५७५)

गुरु साहिब ने कहा कि जिस तरह एक योग्य सवार घोड़ी पर अच्छी जीन डालता है ताकि उस पर बैठकर वह बिना किसी कष्ट के सफर कर सके, उसी तरह मनुष्य को अपने अंतर में सद्‌विचारों को, परमात्मा के प्रति प्रेम को भरपूर स्थान देना चाहिये ताकि जीवन में कभी भी उसे अनचाही मुश्किलों का सामना न करना पड़े जो तमाम विघ्न मनुष्य को चारों ओर से घेरे खड़ी हैं और उसके जीवन को कठिन व दुखमय बना रही हैं। उनसे छुटकारा पाने का एक ही रास्ता है सच एवं ज्ञान का आधार। परमात्मा सद्‌विचार में स्वयं खेवट बन कर उतरता है और सच को आधार बनाने वाले को पापों, विकारों के सागर से पार ले जाता है। सच-ज्ञान के बिना मुक्ति संभव नहीं है।

कड़ीआलु मुखे गुरि गिआनु द्रिड़ाइआ राम ॥
तनि प्रेमु हरि चाबकु लाइआ राम ॥
तनि प्रेमु हरि हरि लाइ चाबकु मनु जिणै गुरमुखि जीतिआ ॥
अघड़ो घड़ावै सबदु पावै अपिउ हरि रसु पीतिआ ॥ (पन्ना ५७५)

श्री गुरु रामदास जी ने बात को और स्पष्ट करते हुए कहा कि जिस तरह घोड़ी के मुख में लगाम डाली जाती है उसी तरह मनुष्य के अंतर में ज्ञान समा जाये और ज्ञान से जीवन की गति का नियंत्रण किया जाये। ज्ञान को दृढ़ करके जीवन को आगे बढ़ाने के लिये प्रेम अत्यंत आवश्यक है। चाबुक मारने पर घोड़ी अपनी राह पर गति से चल पड़ती है तो प्रेम की शक्ति से, ज्ञान से परिपूर्ण मनुष्य का जीवन परमात्मा के मार्ग पर गतिशील हो उठता है। प्रेम की शक्ति से मनुष्य अपने लक्ष्य को प्राप्त करने योग्य हो जाता है। ज्ञान की लगाम और प्रेम के चाबुक से सारे भ्रम दूर हो जाते हैं तथा निश्चित दिशा दिखाई देने लगती है। गुरु साहिब ने कहा कि ऐसा होने से मनुष्य उस उच्च अवस्था को प्राप्त हो जाता है जिसमें उसे महाआनंद की अनुभूति होती है। उसका जीवन सरस और निर्मल हो जाता है। ज्ञान और प्रेम जब मनुष्य को परमात्मा की ओर उन्मुख करते हैं तो मानो वह अमृत में सराबोर हो जाता है।

देह तेजनड़ी हरि नव रंगीआ राम ॥
गुर गिआनु गुरू हरि मंगीआ राम ॥
गिआन मंगी हरि कथा चंगी हरि नामु गति मिति जाणीआ ॥
सभु जनमु सफलिउ कीआ करतै हरि राम नामि वखाणीआ ॥ (पन्ना ५७६)

मनुष्य पर ऐसा रंग चढ़ता है कि उसे परमात्मा में रस आने लगता है और परमात्मा को पाने की उसकी इच्छा तीव्र हो जाती है तथा उसे परमात्मा को पाने में ही जीवन की सफलता नजर आने लगती है। परमात्मा के बिना उसे जीवन का कोई अर्थ नहीं दिखता:

हरि बिनु रहि न सकै मनु मेरा ॥
मेरे प्रीतम प्रान हरि प्रभु गुरु मेले बहुरि न भवजलि फेरा ॥१॥रहाउ॥
मेरै हीअरै लोच लगी प्रभ केरी हरि नैनहु हरि प्रभु हेरा ॥
सतिगुरि दइआलि हरि नामु द्रिड़ाइआ हरि पाधरु हरि प्रभ केरा ॥ *(पन्ना ७११)*

जिस विकलता का वर्णन श्री गुरु रामदास जी ने उपरोक्त वचन में किया है वह प्रेम की सर्वश्रेष्ठ अवस्था है और ज्ञान व प्रेम के बिना ऐसी विकलता उत्पन्न ही नहीं हो सकती। मन सदैव परमात्मा में लगा रहे। मन के लिये परमात्मा से दूरी सहन से बाहर हो। प्राण परमात्मा से मिलन को अटके हों और दृष्टि बस, उसे ही ढूंढती हो। परमात्मा की कृपा से ही ऐसी अवस्था प्राप्त होती है। इसी अवस्था में मनुष्य को यह बोध होता है कि उसका तो परमात्मा के बिना कोई अस्तित्व ही नहीं है। परमात्मा ने ही उसे यह अमूल्य मनुष्य-देह दी है। उसी ने ज्ञान का आधार और प्रेम-शक्ति देकर अमृत-रस से भरपूर कर दिया है। वही उसे जीवन का मार्ग दिखा रहा है, उसे उस मार्ग पर गतिशील करके आनंद दे रहा है, तो मनुष्य का 'स्व' रहा ही कहां? उसके ज्ञान, उसकी बुद्धि-चतुरता, शक्ति का अर्थ ही क्या रहा? मनुष्य ने तो स्वयं अपने लिये विकारों, मोहमाया, अहंकार के अवरोध खड़े कर रखे थे, जिससे न तो उसे जीवन की राह दिख रही थी और न ही सच का ज्ञान हो रहा था। परमात्मा से उसने स्वयं ही अपने आप को दूर कर लिया था। परमात्मा की शरण में गये बिना तो उसे मुक्ति नहीं मिल सकती थी और उसकी कुबुद्धि का नाश नहीं हो सकता था।

मेरे सतिगुरा मै तुझ बिनु अवरु न कोइ ॥
हम मूरख मुगध सरणागती करि किरपा मेले हरि सोइ ॥ *(पन्ना ३९)*

जब मनुष्य यह समझ ले कि परमात्मा के बिना उसका कोई अस्तित्व नहीं है और उसमें तनिक भी योग्यता नहीं है कि वह परमात्मा की कृपा के बिना कुछ पा सके तभी उसमें सच्चे समर्पण का भाव उत्पन्न होता है और वह परमात्मा की शरण में जाकर उससे कृपा की याचना करता है। परमात्मा की कृपा से उस पर प्रेम का ऐसा रंग चढ़ता है कि उसे और कुछ याद ही नहीं रहता, मन-तन को बस, परमात्मा ही याद रहता है :

मेरे मन मुखि हरि हरि हरि बोलीऐ ॥
गुरमुखि रंगि चलूलै राती हरि प्रेम भीनी चोलीऐ ॥ *(पन्ना ५२७)*

श्री गुरु रामदास जी ने कहा कि प्रेम-रस में ही परमात्मा को पाया जा सकता है। प्रेम हो भी क्यों न! परमात्मा तो सुंदर, मनमोहन, दयालु, कृपा का सागर और अमृत बरसाने वाला आनंद का स्रोत है। प्रेम की श्रेष्ठता को गुरु साहिब ने इस तरह निरूपित किया :

अकथ कहाणी प्रेम की को प्रीतमु आखै आइ ॥
तिसु देवा मनु आपणा निवि निवि लागा पाइ ॥
(पन्ना ७५९)

परमात्मा के प्रति प्रेम की दशा ऐसी है जिसका वर्णन किया ही नहीं जा सकता, उसे बस, महसूस ही किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि यदि कोई प्रेम की इस अनुभूति को

बयान कर सकता हो तो मैं अपना सर्वस्व उसे अर्पण कर दूं और बार-बार उसके चरण स्पर्श करूं। प्रेम को सभी गुरु साहिबान ने परमात्मा का मार्ग बताया है और उसे सर्वोच्च माना है। श्री गुरु रामदास जी ने परमात्मा को बार-बार 'प्रियतम' कह कर संबोधित किया है। प्रेम की इस अभिव्यक्ति में उन्होंने स्वयं को याचक और दीन रूप में देखा :

हम चेरी तू अगम गुसाई किआ हम करह तेरै वसि पईआ ॥
दइआ दीन करहु रखि लेवहु नानक हरि गुर सरणि समईआ ॥ (पन्ना ८३६)

श्री गुरु रामदास जी ने कहा कि बड़े पुण्य कर्मों से मिली इस मानव देह की सफलता इसी में है कि मनुष्य न केवल पपीहे की तरह परमात्मा के प्रेम की आशा में रहे बल्कि इस आशा में दासत्व का भाव भी हो, परमात्मा को पाने की अभिलाषा भी हो और उसमें याचना भी हो, विनम्रता भी हो :

हम चात्रिक हम चात्रिक दीन हरि पासि बेनंती राम ॥
गुर मिलि गुर मेलि मेरा पिआरा हम सतिगुर करह भगती राम ॥ (पन्ना ५७४)

कितना भी मेघ बरसता रहे पपीहा नामक पक्षी केवल स्वाति की बूंद से ही तृप्त होता है। उस एक बूंद की आस में वह ऊपर की ओर मुंह खोलकर खड़ा भीगता रहता है। परमात्मा के प्रेम की कामना भी इसी तरह हो किंतु इस कामना में कहीं गर्व न होने लगे इसलिये गुरु साहिब ने इस कामना को दीनता से जोड़ते हुए 'दीन चात्रिक' कहा। एक गुरमुख वही है जो गुरु के दरबार में जाये तो चात्रिक की तरह परमात्मा के प्रेम की आशा-कामना लेकर और *"हम चेरी तू अगम गुसाई"* का भाव लेकर, देह को घोड़ी बनाकर, मुख में ज्ञान की लगाम और पीठ पर गुणों की जीन कसकर प्रेम के चाबुक सहित जाये।

कविता

गुरुवर के द्वारे पर

सबसे न्यारे, सबसे प्यारे,
हैं मेरे गुरदेव।
दीन-दुखी के बड़े सहारे,
हैं मेरे गुरदेव।
ऊंच-नीच का भेद मिटाया,
जात-पात की दूरी।
द्वार खोल कर हरिमंदर के,
कर दी मनसा पूरी।
ऐसे प्यारे ऐसे न्यारे,
हैं मेरे गुरदेव।
सबसे न्यारे, सबसे प्यारे . . .
अमृत का है भरा सरोवर,
बीच बसा गुरुद्वारा।
जिसके अंदर गुरबाणी की,
बहती अमृत धारा।
उस अमृत के उद्‌गमधारे,
हैं मेरे गुरदेव।
सबसे न्यारे, सबसे प्यारे . . .
मेरे गुरुवर के द्वारे पर,
चलते लंगर भारी।
यहीं बैठ कर छकते लंगर,
राजा साथ भिखारी।
बिना भेद के सभी पुकारें,
धन्य हो गुरदेव!
सबसे न्यारे, सबसे प्यारे,
हैं मेरे गुरदेव।

-श्री राधेश्याम सेन 'भुजंग', शिव मंदिर के पीछे, मंगली पेट, सिवनी (म. प्र.)-४८०६६१

इतिहास के सृजक : श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी

-स. गुरदीप सिंघ*

आज के समय में चिकित्सा विज्ञान की तरक्की के बावजूद भी कैंसर और एड्स जैसी लाइलाज बीमारियां हो रही हैं। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने १६९९ ई. में खालसे की साजना की। इसके साथ ही चार चीजों से वर्जित किया। इनको 'चार कुरहितें' कहा गया। उनमें से दो कुरहतें हैं--तंबाकू का सेवन और पर-स्त्री या पर-पुरुष का संग। नशों के सेवन और चरित्रहीनता के कारण कैंसर जैसी भयानक और एड्स जैसी लाइलाज बीमारियां होती हैं। इस समय भारत के करीब ३३ लाख लोग एड्स की बीमारी से ग्रस्त हैं। अगर लोग श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की सीख पर अमल करें (कुरहितों से बचें) तो समाज में इस कारण जो जान-माल का नुकसान हो रहा है, उस पर काबू पाया जा सकता है। गुरु जी ने हर भेदभाव से मुक्त एक नए समाज की स्थापना की। पुरुष को अपने नाम के साथ 'सिंघ' और स्त्री को 'कौर' शब्द लगाने के निर्देश दिए गए।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी एक महान जरनैल थे। अनंदपुर साहिब की लड़ाई में आपने पहाड़ी राजाओं और औरंगजेब की भेजी हुई फौज के विशाल दल के सामने डटकर ८ महीने तक मुकाबला किया। अन्न-जल की कमी के बावजूद भी भूखे-प्यासे सिंघों के हौंसले बुलंद रखे। चमकौर की लड़ाई के समय थके-टूटे सिंघों को फौज के साथ लड़वाने की हिम्मत भी गुरु साहिब जैसे अद्वितीय जरनैल ही कर सकते हैं। एक बार जब भाई डल्ला ने कहा: "डल्ला न मल्ला, गुरु गोबिंद इकल्ला।" तो गुरु जी ने कहा: "बेशक डल्ला न मल्ला, (गुरु) गोबिंद नाल अल्लाह।" गुरु जी ने कुर्बानी, बहादुरी, परोपकार के मार्ग पर चलते हुए सब कुछ वार दिए जाने के बाद भी शुक्राना करने का संकल्प मानवता को प्रदान किया। आपने जब्र के विरुद्ध मजलूमों की रक्षा के लिए तेग उठाई। आपकी छोटी मासूम जिंदों अथवा छोटे साहिबजादों ने बड़े कारनामे कर दिखाए।

'गंजनामा' फारसी में गद्य और पद्य मिलीजुली रचना है। इसमें कर्ता भाई नंद लाल जी ने दशम पातशाह श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की स्तुति और उने प्रति अथाह श्रद्धा का प्रगटावा किया है।

भाई साहिब कहते हैं कि गरीबों के रक्षक श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी हैं और गुरु जी परमात्मा की तरफ से प्रवान हैं :

नासिरो मनसूर गुर गोबिंद सिंघ
ईज़दि मनजूर गुरू गोबिंद सिंघ।१०५।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी सच का खजाना हैं। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी पर समस्त नूर की मेहर है :

हक्क रा गंजूर गुर गोबिंद सिंघ
जुमला फैज़ि नूर गुर गोबिंद सिंघ।१०६।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी सच को जानने वालों के लिए सच हैं। गुरु जी बादशाहों के बादशाह हैं :

हक्क हक्क आगाह गुर गोबिंद सिंघ
शाहि शहनशाह गुर गोबिंद सिंघ।१०७।

गुरु साहिब तेग के धनी हैं। गुरु जी जान और दिल के लिए अमृत हैं :

*३०२, किदवई नगर, लुधियाना। मो : ९८८८१-२६६९०

तेग रा फत्ताह गुर गोबिंद सिंघ
जानो दिल रा राह गुर गोबिंद सिंघ।११४।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का दिल साफ और वैर-भाव से रहित है। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी सच हैं और सच का आईना हैं। गुरु जी सच के सच्चे अनुभवी हैं। दरवेश श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी पातशाह हैं :

हक्क हक्क अंदेश गुर गोबिंद सिंघ
बादशाह दरवेश गुर गोबिंद सिंघ।१२५।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के चरणों की धूल को चूमने वाले गुरु जी की नियामतों के कारण प्रवान हो जाते हैं। गुरु जी हर कार्य में समर्थ हैं। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी बेसहारों का सहारा हैं:

कादिरि हर कार गुर गोबिंद सिंघ
बेकसां-रा यार गुर गोबिंद सिंघ।१३६।

भाई साहिब श्रद्धा एवं समर्पण-भाव में कथन करते हैं कि नंद लाल श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के दर का एक गुलाम कूकर है:

लाअल सगे गुलामि गुर गोबिंद सिंघ . . .।१५७।

ईश्वर रहमत करे, इस (भाई) नंद लाल (जी) की जान श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी पर कुर्बान हो। ईश्वर करे, इसका शीश श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के चरणों पर टिका रहे :

बाद जानश फिदाइ गुर गोबिंद सिंघ
फरकि ऊ बर पाइ गुर गोबिंद सिंघ।१६०।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी हर काम को करने में समर्थ हैं। अनाथों, गरीबों और दुखियों के वे पक्के मित्र हैं। जहां पर आपने अपनी कलम द्वारा उच्च कोटि के साहित्य की रचना की वहीं इन्हीं हाथों द्वारा युद्ध में तलवार चलाई तो दुश्मनों की लाशों के ढेर लग गए। तीरअंदाजी में आप बड़े माहिर थे। समस्त मानव जाति के हमदर्द, सरबंसदानी श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी महान दार्शनिक, चिंतक, मनोवैज्ञानिक और धर्मी पुरुषों के रक्षक होने के कारण 'दुष्ट-दमन' भी कहलाते हैं। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी में धार्मिक आगू, योद्धा और नीतिवान के गुण मौजूद थे। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी कई भाषाओं के ज्ञाता थे। उनमें संत, कवि, कलाकार, सुधारक, प्रचारक, विद्वान, सहनशीलता और नम्रता के सारे गुण मौजूद थे।

प्रसिद्ध विद्वान गारडन गुरु जी की महानता इन शब्दों में करता है : "जनता की मुर्दा हड्डियों में जिंदगी की लहर श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने दौड़ाई।"

मैकालिफ ने लिखा है कि "गुरु जी में करिश्माई शक्ति थी। उनके उपदेशों का करिश्माई प्रभाव जनसाधारण पर ऐसा हुआ कि तथाकथित दलित लोगों को भी प्रसिद्ध योद्धा बना दिया। साधु टी. एल. वासवानी ने इसी सम्बंध में लिखा है कि "जो काम कई हजार मिलकर भी पूरा न कर सके वह अकेले (श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी) ने कर दिखाया। उनकी शख्सियत इंद्रधनुष के समान थी।"

टायनबी ने लिखा है कि लेनिन से दो सदी पहले श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने मानवीय भाईचारा बनाया।

डारबी फोल्ड ने लिखा है कि "गुरु जी की शान सूर्य की भांति चमकी।" (Guru Gobind Singh's splendour shines like the sun.)

अल्ला यार खां योगी ने लिखा है :

करतार की सौगंध है नानक की कमस है।
जितनी भी हो गोबिंद की तारीफ वो कम है।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी नहीं चाहते थे कि कोई व्यक्तिगत पूजा करे या उसको देवी-देवता अथवा अवतार मानकर उसकी पूजा करे। इसी के चतले उन्होंने खुद को भी इसमें शामिल कर 'बचित्र नाटक' में उच्चारण किया :

जो हम को परमेसर उचरिहैं ॥
ते सभ नरक कुंड महि परिहैं ॥ . . .
मै हो परम पुरख को दासा ॥
देखन आयो जगत तमासा ॥ . . .३३॥

बंदी छोड़ दिवस की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि एवं प्रयोजन

*-स. बिकरमजीत सिंघ**

समूचे भारत में अनेकों त्यौहार मनाये जाते हैं जिनमें दीवाली का पर्व भी शामिल है। यह त्यौहार प्राचीन काल से मनाया जा रहा है। दीवाली भारत का ऐसा सर्वसांझा त्यौहार है जिसे पूरे भारतवर्ष में सभी धर्मों के लोग सद्भावना रखते हुए मिलजुल कर मनाते हैं।

सिक्ख धर्म में भी कई धार्मिक त्यौहार एवं गुरुपर्व मनाए जाते हैं, जिनमें शहीदी जोड़ मेला, होला महल्ला, वैसाखी (खालसा सृजना दिवस) तथा अन्य कई शहीद सिक्खों के दिवस हैं जिन्हें समूचे सिक्ख जगत में स्मृति दिवस के रूप में मनाया जाता है।

इन सबके साथ हर वर्ष सिक्ख कौम दीवाली का त्यौहार भी पूरे हर्षोल्लास से मनाती है। सिक्ख धर्म में दीवाली का त्यौहार भारत की प्राचीन अथवा सदियों से चली आ रही परंपरा के अनुसार नहीं बल्कि 'बंदी छोड़ दिवस' के रूप में मनाया जाता है, जिसका सिक्ख गुरु-काल से संबंध और अपना अलग इतिहास है।

सिक्ख धर्म में यह दिन सिक्खों के छठे गुरु श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब की याद में मनाया जाता है। गुरु-काल के दौरान श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब सन् १६०६ ई से सन् १६४४ ई तक गुरगद्दी पर विराजमान रहे। उनकी गुरिआई का यह समय सिक्ख पंथ के इतिहास में विशेष स्थान रखता है। गुरु साहिब ने वक्त की चुनौतियों से निपटने हेतु सिक्ख लहर के स्वरूप में परिवर्तन लाकर सिक्ख कौम में स्वाभिमान की भावना पैदा की। उन्होंने सिक्खों को परमात्मा का नाम-सिमरन करने का संदेश दिया बल्कि धर्म की रक्षा के लिए तेग उठाने की विधि भी बताई। इसी कड़ी में श्री अकाल तख्त साहिब (श्री अमृतसर) का निर्माण एक बड़ा कारनामा था। सिक्ख पंथ के विकास में यह एक बड़ा योगदान था। गुरु साहिब अपने सिक्खों को 'संत' के साथ 'सिपाही' बनने का आह्वान भी करते थे। गुरु जी के काल के दौरान पहली बार मुगल शासकों और सिक्खों के बीच युद्ध हुए। यह गुरु जी की योग्य अगुआई थी कि वे सीमित साधनों के बावजूद भी जालिमों पर भारी पड़े और सिक्खों ने सभी युद्ध जीते। इस कारण सिक्खों के हौंसले बुलंद हो चुके थे। जलिम हकूमत के पैरों तले से जमीन खिसकती जा रही थी, जिस कारण जालिम हकूमत द्वारा सिक्खों को दबाने की तैयारियां शुरू हुईं। गुरु साहिब लगातार सिक्ख पंथ का विस्तार करने में जुटे रहे।

इन समूची गतिविधियों से बादशाह जहांगीर घबरा चुका था। इतिहासकारों के मुताबिक जहांगीर ने श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब को सम्मान सहित अपने पास बुलवाया। जब गुरु जी जहांगीर के न्यौते पर उसे मिलने पहुंचे तो उसने धोखा देकर गुरु जी को ग्वालियर के किले में कैद करवा दिया। इस किले में हिंदोस्तानी रियासतों के कुछ अन्य राजा और शाही कैदी भी बंदी बनाए हुए थे।

गुरु साहिब की गिरफ्तारी की खबर सुनकर सिक्ख संगत बहुत व्याकुल हो उठी और

**S/o S. Ranjeet Singh, H.No. 2946/7, Bazar Loharan, Chowk Lashmansar, Sri Amritsar. Mob: 94788-96372*

ग्वालियर के किले की तरफ रवाना हो गई। बाबा बुड्ढा जी तथा कई प्रमुख सिक्ख भी संगत की अगुआई के लिए चल पड़े। सिक्ख संगत के जत्थे ग्वालियर पहुंचने पर मुगल हकूमत घबरा गई कि कहीं लोगों में विद्रोह की लहर न दौड़ पड़े। इसी बीच साईं मियां मीर जी की नसीहतों और सिक्ख संगत के आक्रोश को देखते हुए जहांगीर ने गुरु जी को रिहा करने का हुक्म जारी कर दिया। दूसरी तरफ गुरु जी ने रिहाई की पेशकश को तब तक नामंजूर कर दिया जब तक उनके साथ कैद अन्य ५२ राजाओं (जो गुरु जी से पहले वहां पर कैद थे) को छोड़ने के हुक्म जारी नहीं किये। बादशाह जहांगीर ने गुरु जी के इस दृढ़ इरादे को समझ कर अन्य ५२ कैदी राजाओं को भी रिहा करने के हुक्म जारी कर दिये। इन कैदियों की रिहाई करवाने के कारण श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब को 'बंदी छोड़ दाता' कहा जाने लगा।

लगभग २ साल की कैद काटने के बाद गुरु जी अलग-अलग स्थानों से होते हुए श्री हरिमंदर साहिब पहुंचे। सिक्ख संगत में खुशी की लहर दौड़ पड़ी। संयोगवश उस दिन दीवाली का पर्व था। अत: सिक्ख संगत ने दीवाली पर्व को 'बंदी छोड़ दिवस' के रूप में मनाया। तब से सिक्ख पंथ में दीवाली 'बंदी छोड़ दिवस' के रूप में मनाई जाती है।

गुरु जी के रिहा होने की खुशी में गुरु-घर के परम सेवक बाबा बुड्ढा जी ने श्री हरिमंदर साहिब में विशेष रूप से दीपमाला करवाई, देसी घी के दीये जलाए। यह परंपरा आज भी जारी है। इस दिन श्री अकाल तख्त साहिब पर संगत का महासम्मेलन बुलाया जाता एवं सिक्ख मसलों पर महत्वपूर्ण फैसले लेकर 'गुरमते' पारित किए जाते। इन गुरमतों की सिक्ख इतिहास में बड़ी अहम भूमिका रही है।

इसी परंपरा के चलते भाई मनी सिंघ जी के समय जकरिया खान के उत्पात के भय से श्री हरिमंदर साहिब में 'बंदी छोड़ दिवस' मनाए जाने पर एक तरह का प्रतिबंध-सा लग गया तथा संगत बहुत कम संख्या में एकत्र होती। जकरिया खान को चिंता थी कि इसी दिन सिक्ख भारी संख्या में श्री हरिमंदर साहिब परिसर में श्री अकाल तख्त साहिब पर एकत्र होकर मुगलों के जुल्मों के विरुद्ध नीतियां बनाते हैं। भाई मनी सिंघ जी ने जकरिया खान को टैक्स देना करके 'बंदी छोड़ दिवस' को धूम-धाम एवं श्रद्धा-भावना से मनाने की अनुमति प्राप्त कर ली। मुगलों के मन में खोट के चलते शाही सेना ने इसी दिन सिक्ख संगत के भारी इकट्ठ पर हमला करने की साजिश रची। भाई मनी सिंघ जी को पता चला तो उन्होंने सिक्ख संगत को श्री हरिमंदर साहिब में बंदी छोड़ दिवस पर आने से मना कर दिया तथा जकरिया खान को उसकी बदनीयति के चलते टैक्स न दिया, जिससे भाई जी को गिरफ्तार कर लाहौर में बंद-बंद काटकर शहीद कर दिया। उसी दिन से भाई मनी सिंघ जी की शहीदी ने 'बंदी छोड़ दिवस' में शहीदी रंग भर कर इसे और भी गौरवमयी बना दिया।

गुरमति के अनुसार 'बंदी छोड़ दिवस' मनाते समय सिक्खों को अपने मन को बुराइयों तथा कुरीतियों से मुक्त करने का संकल्प लेना चाहिए तथा स्वाभिमान के रंग को अपने मन-मस्तिष्क के पटल पर चढ़ा कर सिक्ख पंथ की आन-शान हेतु स्वयं को कुर्बान तक कर देने का निश्चय करना चाहिए। 'बंदी छोड़ दिवस' पर की जाती दीपमाला जहां बाहरी वातावरण को प्रकाशित करती है वहीं हमें गुरबाणी रूपी प्रकाश द्वारा अपने अंत:करण को भी प्रकाशित करना है।

बाबा बुड्ढा जी
पारिवारिक पृष्ठ-भूमि तथा गुरु-घर के कार्यों में योगदान

*-सिमरजीत सिंघ**

गुरु-काल में अनेक सच्चे एवं निष्ठावान सिक्ख हुए है जिनका जिक्र बहुत गर्व से किया जा सकता है। सिक्ख धर्म को इसके संस्थापक गुरु नानक साहिब ने जहां शुद्ध रूहानी गुणों की महक से भरी पटारी के रूप में समूह जनसाधारण के समूचे कल्याण हेतु प्रस्तुत किया वहीं गुरु जी द्वारा स्थापित सिक्ख धर्म में अति ठोस नैतिकचार, व्यक्तिगत आचरण तथा सदाचार की भी एक कसौटी निर्धारित की गई। गुरु जी ने रूहानियत को सामाजिक दायरे में कमाने के लिए उस समय की जनता का आदर्श नेतृत्व किया। उन्होंने स्पष्ट किया कि गृहस्थ मार्ग से ऊंचा एवं निर्मल अन्य कोई धर्म नहीं। गुरु जी ने धर्म को कर्मकांडी पूजा-उपासना से अलग करके, संसार रूपी धर्म-स्थान में नाम जपना, वंड छकना तथा सुक्रित करना धर्म की व्यवहारिक परिभाषा के रूप में प्रदान कर लागू भी किया। गुरु जी ने जनसाधारण के सामने जहां आदर्श व्यक्तिगत जीवन का विस्मादी उदारहण रखा, वहीं सिक्खी उसूलों के धारक व्यवहारिक मनुष्यों का भी निर्माण किया। जो मनुष्य गुरु जी की सिक्खी की कसौटी पर पूरे उतरे वे सही अर्थों में गुरसिक्ख तथा गुरमुख कहलाये।

समूचे गुरु-काल के हजारों गुरसिक्खों-गुरमुखों के अंदर बिना किसी उम्र के बाबा बुड्ढा जी का प्रथम स्थान रखा जाता है। बाबा बुड्ढा जी ने गुरु-उपदेश को एक सदी से भी ज्यादा समय तक कमाकर गुरु-घर में महानतम रुतबा हासिल किया।

सिक्ख इतिहास की महान शख्सियत बाबा बुड्ढा जी का जन्म ७ कार्तिक, संवत् १५६३ (१५०६ ई) को भाई सुग्घा (रंधावा) जी के घर माता गौरां जी की कोख से गांव कत्थूनंगल, जिला श्री अमृतसर में हुआ। माता-पिता जी ने आप जी का नाम 'बूड़ा' रखा था। १५१९ ई में गुरु नानक साहिब के सेवक बनकर बाबा जी सिक्खी में शामिल हो गए।

बाबा बुड्ढा जी सिक्ख इतिहास में ऐसी आदरणीय शख्सियत हैं, जिनको सिक्खों के पहले छः गुरु साहिबान की छत्रछाया में गुरु-घर की सेवा अर्जित करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। बाबा बुड्ढा जी बचपन में ही गुरु नानक साहिब की संगत में आकर गुरु-कृपा के पात्र बने एवं श्री गुरु अंगद देव जी से लेकर श्री हरिगोबिंद साहिब तक पांच गुरु साहिबान के गुरगद्दी पर विराजमान होने की रस्में निभाने का शुभ कार्य करते रहे तथा उनके परलोक गमन कर जाने के बाद भी यह सौभाग्य आप जी के उत्तराधिकारियों को प्राप्त हुआ।

बाबा बुड्ढा जी के पूर्वजों के बारे में इतिहासकार बताते हैं कि इनकी अंश-वंश का मुखिया रंधावा था। सर इबटसन की पुस्तक 'पंजाब कास्ट्स' में इन्हें भट्टी राजपूतों में से दर्शाया गया है। ये बारहवीं सदी में राजस्थान के बीकानेर क्षेत्र में से आकर पंजाब के मालवा

**संपादक, गुरमति ज्ञान, गुरमति प्रकाश।*

क्षेत्र में आबाद हो गए। यहां पर इनके संबंध चहिलों के साथ कुछ अच्छे न रहे। एक बार चहिलों ने रंधावों को एक बारात में घेर कर आग लगा दी, जिससे रंधावों का भारी जानी एवं माली नुकसान हुआ। इसी कारण ज्यादातर रंधावे मालवा क्षेत्र छोड़कर माझा क्षेत्र के आज के कत्थूनंगल क्षेत्र में जाकर आबाद हो गये।

जब ये अपना मालवा इलाके का तामकोट क्षेत्र छोड़ कर, सारा सामान बैलगाड़ियों पर लाद कर माझे के इलाके की ओर जा रहे थे तो अमरगढ़ के पास, जहां आजकल मीमसा गांव आबाद है, उस स्थान पर इनके एक बैलगाड़ी के पहिए का धुरा टूट गया। उस बैलगाड़ी का मालिक अपने परिवार समेत वहीं रुक गया जिसकी औलाद आज इस गांव में आबाद है। इन लोगों में आज तक यह परंपरा चली आती है कि बारह वर्ष बाद अपनी उस घटना को याद के रूप में मनाने के लिए ये लोग उसी स्थान पर इकट्ठे होते हैं जहां बैलगाड़ी का धुरा टूटा था।

गांव कत्थूनंगल श्री अमृतसर से जम्मू को जाते राष्ट्रीय मार्ग पर श्री अमृतसर से २० किलोमीटर तथा बटाला शहर से पहले १८ किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। कत्थूनंगल का पुराना नाम गग्गोनंगल था। गग्गो बाबा बुड्ढा जी के दादा जी का नाम था। गग्गो के पिता जी का नाम राजा दल था, जिन्होंने चविंडा देवी गांव बसाया था। सीना-ब-सीना चली आ रही कथा के अनुसार यह वो स्थान है जहां सुरों-असुरों में भयानक युद्ध हुआ था। इस स्थान पर देवी ने चंड तथा मुंड शक्तिशाली राक्षसों का संहार किया था, जिस कारण इस जगह का नाम 'चमुंडा देवी' पड़ गया तथा आजकल इसको 'चविंडा देवी' कहा जाता है। इस स्थान पर ऊंचे वीरान टीले थे। जब राजा दल ने यह नगर बसाया तो सबसे पहले चविंडा देवी का मंदिर बनाया तथा बटाला के ब्राह्मण से इस देवी की मूर्ति लाकर इस स्थान पर स्थापित की। जिस स्थान पर ब्राह्मण और राजा दल का मिलन हुआ वो स्थान 'घसीटपुर' (तहसील बटाला, जिला गुरदासपुर) है, जहां पर अब भी कुआं और पीपल का एक वृक्ष है। राजा दल के पिता पोपट ने 'बटाला' नगर बसाया था तथा इसके पुत्र गग्गो ने चविंडा देवी से तीन किलोमीटर की दूरी पर शाही मार्ग पर बाईं दिशा में 'गग्गोनंगल' गांव बसाया और यहीं पर एक किला बनवाया, जिसके चारों कोनों पर चार गोल मीनार थे तथा अंदर एक कुआं था।

श्री गग्गो की दो पत्नियां थीं--निहाली और भागां। निहाली के पांच पुत्र थे तथा भागां के तीन पुत्र थे। आजकल भी गांव की दो पत्तियां 'निहाली' एवं 'भागां' के नाम पर हैं। श्री गग्गो २२ गांवों का मालिक था। अब भी चविंडा देवी को 'बाईवास चविंदा' कहा जाता है। गग्गोनंगल किले के सामने थोड़ी-सी दूरी पर श्री गग्गो का अंतिम संस्कार किया गया तथा यादगार के रूप में पुरानी रीति के अनुसार आठ-कोनों वाला चबूतरा बना दिया गया। यह वही स्थान है जहां पर गुरु नानक साहिब का बाबा बुड्ढा जी के साथ पहली बार १५१९ ई में मिलन हुआ था। उस समय बूड़ा जी (बाबा बुड्ढा जी) की आयु ११-१२ वर्ष की थी तथा ये अपने दादा गग्गो जी की यादगार के नजदीक परमात्मा के ध्यान में बैठ जाया करते थे। जब बूड़ा जी का गुरु नानक साहिब के साथ मिलन हुआ तो बालक ने गुरु जी को माथा टेका और कहा कि "मेरा उद्धार करो!" गुरु जी ने बालक से पूछा कि "तुझे क्या दुख है?" तो बालक ने

बताया, "हमारे गांव पर मुगलों ने हमला कर दिया था। उन्होंने सारी कच्ची-पक्की फसलें काट लीं। उस समय मेरे मन में यह विचार आया कि अगर किसी ने डर के मारे इन जाबिरों के हाथ नहीं पकड़े तो उस यम के हाथ पकड़ने वाला कौन है?" गुरु जी ने बालक की ये बातें सुन कर कहा कि "तेरी बुद्धि तो 'बुड्डों' वाली है अर्थात् तेरे विचार बहुत उच्च कोटि के हैं।" गुरु जी ने बालक को नाम-सिमरन करने का उपदेश दिया तथा उस दिन से आप जी का नाम 'बूड़ा' से 'बुड्ढा' हो गया। गुरु जी बालक बुड्ढा जी के साथ भाई सुग्घा जी के किले में गए, जहां पर माता गौरां जी ने आप जी की बहुत सेवा की। 'छजरा नसब कैफियत थेह मौजय कत्थूनंगल १८६५ ई' में लिखा है :

"मुस्समी गग्गो कौम जट्ट गोत रंधावा मरूस ने चविंडा से उठकर जंगल वीरान को बा-इजाजत अपने नाम पर गग्गोनंगल रखा, चंद मुदात यही नाम मशहूर रहा, मगर अहदे बादशाही के मुस्समी कत्थूशाह बेटा मरूस आहला शहर दिहली में मामला अदा किया करता था, उस अयाम से गांव का नाम कत्थूनंगल मशहूर हुआ। ३३८ बरस उस जगह कदीम पर आबाद रहा, ११२ बरस हुए किलत आबादी, मारधाड़ सिक्खां, इनके दूसरी जगह मलकां ने आबादी जदीद कायम कर ली। तब से आज तक वह आबादी कभी वीरान नहीं हुआ और एक थेह (टीला) पुराना मलकीअत शामलाट (ग्राम सभा) थेह दरमिआन रकबा देह रजा के वाकिआ है।"

इसी 'छजरा कैफिअत नामे' में आगे गग्गो की स्त्रियों तथा पुत्रों के चुंडां-बांट (जायदाद बंटवारा) आदि के बारे में जिक्र किया गया है। इससे यह भी स्पष्ट हो जाता है कि 'गग्गोनंगल' से 'कत्थूनंगल' नाम कैसे पड़ा।

गुरु नानक साहिब उस समय करतारपुर नगर बसाकर वहां 'किरत करो, नाम जपो तथा वंड छको' का उपदेश देकर दुनिया का उद्धार कर रहे थे। भाई अजित्ता (रंधावा) जी को जब गुरु नानक साहिब ने गांव (करतारपुर) बसाने की तजवीज़ की थी तो गांव के लोगों ने अपनी जमीनें उनके हवाले कर दीं। गुरु जी ने 'गरीब का मुंह गुरु की गोलक' का उपदेश संगत को दिया। करोड़ी नाम के चौधरी ने पहले तो कोशिश की कि करतारपुर न बसे परंतु जब गुरु जी के दर्शन किये तो अपनी १०० बीघा जमीन नगर के नाम कर दी। भाई दुनीचंद तथा अन्य कितने ही श्रद्धालु आकर करतारपुर बस गये। बाबा बुड्ढा जी घर का काम-काज संभाल कर रोजाना गुरु जी के दरबार में हाजरी भरते तथा आई हुई संगत की अपने हाथों से सेवा करते। गुरु नानक साहिब बाबा बुड्ढा जी को बहुत प्यार करते थे। बाबा जी ने 'लंडे' तथा 'टाकरी' अपने पिता जी से सीखे थे तथा गुरु नानक साहिब के दरबार में आकर उन्होंने गुरु साहिब से गुरमुखी का ज्ञान प्राप्त किया। गुरु जी के हुक्म अनुसार आप सतिगुरु जी की बाणी और भक्त साहिबान की बाणी पढ़ते। इस प्रकार आप जी को बहुत-सी बाणी कंठस्थ हो गई थी।

जब बाबा बुड्ढा जी की आयु सत्रह वर्ष की हुई तो आप जी के माता-पिता ने आप जी की शादी अच्चल गांव के निवासी बीबी मिरोआ जी के साथ की। आप जी के विवाह में गुरु जी का परिवार भी शामिल हुआ। आप जी के घर चार सपुत्रों--भाई सुधारी जी, भाई भिखारी जी, भाई महिमू जी तथा भाई भाना जी ने जन्म लिया।

कुछ समय बाद बाबा बुड्ढा जी के पिता भाई सुग्घा जी का देहांत हो गया। उनका अंतिम संस्कार करके आप जी अभी रिश्तेदारों-संबंधियों के साथ घर ही आए थे कि बाबा जी की माता जी भी परलोक गमन कर गए। उन दिनों में मृतक के अंतिम रस्मों के समारोहों में बहुत वहम-भ्रम तथा कर्मकांड किये जाते थे। बाबा बुड्ढा जी ने अपने मृतक माता-पिता के संबंध में गुरमति की छत्र-छाया तले सभी कर्मकांडों को ठुकराकर पूर्ण गुरसिक्ख होने का सबूत दिया। गुरु नानक साहिब ने अपने पवित्र कर-कमलों से आप जी के सिर पर दसतार सजाकर आपको परिवार की जिम्मेदारी संभालने तथा समाज में गुरसिक्खी का प्रचार करते हुए हर एक के दुख-सुख में शामिल होने का उपदेश दिया। बाबा बुड्ढा जी माता-पिता के परलोक गमन कर जाने के बाद परिवार की सारी जिम्मेदारियां बाखूबी निभाते हुए किरत करके गृहस्थ धर्म की पालना करते रहे।

गुरु नानक साहिब ने उत्तराधिकारी का चुनाव करते समय अपनी ज्योति भाई लहिणा जी में परिवर्तित करनी थी तो उन्होंने भाई लहिणा जी को गुरगद्दी पर विराजमान करने की रस्म पूरी करने हेतु बाबा बुड्ढा जी को कहा। जून, १५३९ ई में भाई लहिणा जी को अपना अंग जानकर श्री गुरु अंगद देव जी के रूप में स्थापित कर दिया जिसका जिक्र ज्ञानी गिआन सिंघ 'पंथ प्रकाश' में करते हैं :

जदपि सेवक सिख थे औरैं।
श्री बुड्ढै लौ अन कै गौरैं।

श्री गुरु अंगद देव जी गुरिआई प्राप्त करके श्री गुरु नानक देव जी के हुक्मानुसार खडूर साहिब आ गए। खडूर साहिब आकर उन्होंने नई 'धरमसाल' स्थापित की। जब श्री गुरु अंगद देव जी कुछ समय के लिए माता भिराई जी के घर एकांतवास हो गए तो संगत गुरु-दर्शनों की इच्छा से विह्वल हो गई। बाबा बुड्ढा जी ने गुरु जी का एकांत निवास-स्थान ढूंढ लिया। बाबा बुड्ढा जी ने भाई बलवंड जी को कीर्तन करने के लिए कहा। श्री गुरु नानक देव जी की अलाही बाणी का कीर्तन सुनकर श्री गुरु अंगद देव जी बाहर आ गये। संगत बाबा बुड्ढा जी के नेतृत्व में गुरु-दर्शन करके तृप्त हो गई।

श्री गुरु नानक देव जी का यादगारी स्थान करतारपुर की तरफ रावी दरिया का रुख होने के कारण हर साल बाढ़ आ जाने के कारण नगर पानी की लपेट में आ जाता था।

श्री गुरु नानक देव जी के ज्योति-जोत समाने के बाद बाबा सिरीचंद जी तथा बाबा लखमी दास जी ने गुरु नानक साहिब के नाम पर एक यादगारी नगर बसाने की योजना बनाई। इस काम के लिए बाबा सिरीचंद जी ने गुरु साहिब के प्यारे सिक्ख भाई कमलीआ जी को बाबा बुड्ढा जी के घर भेज कर नया नगर बसाने की योजना के बारे में परिचित करवाया। बाबा बुड्ढा जी ने रावी दरिया के पार एक ऊंचे तथा रमणीक स्थान पर गुरु नानक साहिब की याद में 'डेरा बाबा नानक' नामक नगर की नींव रखी।

श्री गुरु अंगद देव जी गुरमुखी को अन्य भाषाओं से अधिक उपयोगी जानकर उसका प्रचार संगत में करना चाहते थे। इस काम के लिए उन्होंने बाबा बुड्ढा जी की जिम्मेदारी लगाई। बाबा जी ने संगत को गुरमुखी पढ़ाने की सेवा का कार्य बाखूबी निभाया एवं इसके लिए पाठशाला भी खोली।

खडूर साहिब में एक शिवनाथ नाम का एक तपा रहता था, जो जंत्र-मंत्र का डर देकर

भोले-भाले लोगों को लूटता रहता था। श्री गुरु अंगद देव जी के प्रचार का सदका तपे के भ्रमजाल से संगत सुचेत हो गई थी। एक बार बरसात के महीने में बारिश नहीं हो रही थी, जिसके कारण फसलें सूख गईं थीं। कुछ अंधविश्वासी लोगों ने तपे के आगे बारिश करवाने की विनती की तो उसने भोले-भाले लोगों को गुरु जी के विरुद्ध भड़का दिया कि गुरु जी को गांव में से निकाल देना चाहिए, तभी बारिश होगी। जब गुरु जी को इसके बारे में पता चला तो वे खुद ही गांव छोड़कर चले गए। जब गुरु जी को कई दिन गांव से गये हुए हो गए तो भी बारिश नहीं हुई। लोगों को अपनी भूल का एहसास हुआ तो वे बाबा बुड्ढा जी को साथ लेकर गुरु जी को ढूंढ कर उनकी हजूरी में हाजिर होकर गुरु जी से क्षमा मांगकर उन्हें वापिस लेकर आये।

'गोइंदे' नाम का खत्री था जिसकी जमीन ब्यास दरिया के किनारे से लगती थी। वह इस स्थान पर नगर बसाना चाहता था। वह दिन में जो भी निर्माण करता था उसके विरोधी रात को उसको तबाह कर देते थे तथा शोर मचा देते थे कि यह किसी भूत-प्रेत ने किया है। वहमों-भ्रमों का शिकार गोइंदा खडूर साहिब श्री गुरु अंगद देव जी की शरण में आया। गुरु साहिब ने गोइंदे द्वारा बताई जगह पर श्री (गुरु) अमरदास जी को नगर बसाने का हुक्म किया। श्री (गुरु) अमरदास जी ने बाबा बुड्ढा जी आदि सिक्खों को भाई गोइंदे के साथ लेकर १५४६ ई में 'गोइंदवाल' नगर बसाया। बाबा बुड्ढा जी कुछ समय गोइंदवाल गुरु-दरबार में रहकर सेवा करते रहे।

बाबा बुड्ढा जी के सबसे छोटे सपुत्र भाई भाना जी ने एक खूबसूरत नगर बसाया जिसका नाम 'भाना तलवंडी' रखा गया। बाबा बुड्ढा जी ने संगत की मांग पर इस नगर में एक कुआं खुदवाया तथा ईंटें तैयार करवाकर कुएं को पक्का किया। इस कुएं का नाम 'बाबा बुड्ढा जी दा खुह' करके प्रसिद्ध है।

श्री गुरु अंगद देव जी ने अपना अंतिम समय निकट जान कर गुरगद्दी की जिम्मेदारी सेवा तथा सिमरन के पुंज बाबा अमरदास जी को सौंप दी। श्री गुरु अंगद देव जी २९ मार्च, १५५२ में ज्योति-जोत समा गए। जब श्री गुरु अंगद देव जी ने अपने उत्तराधिकारी बाबा अमरदास जी को गुरिआई दी तो प्राचीन धैर्यवान सिक्ख भी बाबा अमरदास जी के साथ थे। बाबा अमरदास जी को अपने हाथों से गुरगद्दी पर विराजमान कराने का मान बाबा बुड्ढा जी को ही हासिल हुआ। बाबा दातू ने गुरु जी का अपमान किया जिसको बाबा बुड्ढा जी सहन न कर सके। उन्होंने संगत को समझाया कि गुरगद्दी के असल मालिक श्री गुरु अमरदास जी हैं। इनको गुरगद्दी श्री गुरु अंगद देव जी ने अपने हाथों से सौंपी है। श्री गुरु अमरदास जी ने गुरु-हुक्म के अनुसार गोइंदवाल को सिक्खी का प्रचार एवं प्रसार-केंद्र बनाया।

गुरगद्दी पर विरासती हक जताते हुए बाबा दातू ने गुरु जी के साथ झगड़ा जारी रखा। गुरु जी गोइंदवाल छोड़ कर बासरके आ गये तथा एक कमरे के अंदर एकांतवास अवस्था में बैठ गए। गोइंदवाल की संगत गुरु जी के दर्शन करने के लिए आती मगर गुरु-दर्शन के बिना व्याकुल हो जाती। संगत ने बाबा बुड्ढा जी को विनती की। बाबा जी संगत की विनती को मानते हुए संगत के साथ बासरके की तरफ चल पड़े। बाबा बुड्ढा जी संगत की तृष्णा को तृप्त करना चाहते थे। बाबा बुड्ढा जी ने

कमरे की पीछे वाली दीवार में सेंध लगाकर गुरु जी के दर्शन करके तृप्ति हासिल की तथा अपनी गलती की क्षमा-याचना की। गुरु जी ने बाबा बुड्ढा जी से कहा कि "आपने हमारे हुक्म का उल्लंघन किया है।" बाबा बुड्ढा जी ने हाथ जोड़कर कहा, "महाराज! सेवक ने आपके हुक्म का उल्लंघन नहीं किया। देख लीजिए दरवाजा बंद है। सेवक तो सेंध लगाकर अंदर आया है।" गुरु जी बाबा जी की गहन सूझ तथा लियाकत से बहुत प्रभावित हुए। बाबा जी गुरु-दर्शन करके संगत के साथ गोइंदवाल साहिब वापिस आ गए।

बाबा बुड्ढा जी का गुरु-घर के साथ बहुत प्रेम था। वे सिक्खी को ठेस पहुंचाने वालों के साथ सख्ती से पेश आते थे। गोइंदवाल साहिब आकर श्री गुरु अमरदास जी ने उसी मर्यादा को सुरजीत किया। उन्होंने अनुभव किया कि इतने यत्न करने के बावजूद भी शुद्ध-अशुद्ध का ख्याल लोगों के मन में से पूरी तरह नहीं गया। उन्होंने इस समस्या के सदीवी हल के लिए बाउली बनवानी चाही जिसका जल लेने के लिए हर जीव को सीढ़ियों द्वारा नीचे उतरना पड़े; हर इलाके का मनुष्य स्नान कर, भेदभाव रूपी चौरासी से मुक्त हो सके। गुरु जी ने बाबा बुड्ढा जी से ही वैसाखी वाले दिन बाउली खुदवाने का शुभारंभ करवाया। इस पवित्र कार्य की देखभाल की जिम्मेदारी भी बाबा बुड्ढा जी को सौंपी गई और इसको संपूर्ण होने में छ: साल लगे।

सिक्खी का बढ़ता फैलाव देखकर श्री गुरु अमरदास जी ने सिक्खी के प्रचार-क्षेत्र को नियमबद्ध करने के लिए २२ मंजियों की स्थापना की। इस मंजी-प्रथा के मुख्य प्रबंधक बाबा बुड्ढा जी ही थे। जब अकबर बादशाह पहली बार श्री गुरु अमरदास जी के दर्शन के लिए हाजिर हुआ तो बाबा बुड्ढा जी ने ही बादशाह को इस 'निर्मल पंथ' के बारे में परिचित करवाया जिस पर अकबर बादशाह ने गुरु के लंगर में से परशादा छका तथा गुरु जी के दर्शन करके बहुत प्रभावित हुआ। वो जाते समय तीन गांव बीबी भानी जी के नाम लगवा गया और जब तक जिंदा रहा, हर साल वैसाखी पर एक लाख पच्चीस हजार रुपए भेंटा-स्वरूप भेजता रहा। मिले गांवों की जगह पर बाबा जी ने 'गुरु की रक्ख' बनाई जहां पक्षी तथा पशु खुले फिरते थे। एक सुंदर बाग भी बाबा जी ने बनवाया, दूध देने वाले पशु भी वहां पर रखे जिनका दूध हर रोज गुरु के लंगर के लिए उपयोग में लाया जाता था।

श्री गुरु अमरदास जी द्वारा भी गुरु-घर की मर्यादा के अनुसार गुरगद्दी के योग्य अधिकारी भाई जेठा जी (श्री गुरु रामदास जी) को गुरगद्दी पर विराजमान कराने की चली आ रही रीति के अनुसार रस्म निभाने का मान बाबा बुड्ढा जी को ही हासिल हुआ। कुछ समय बाद श्री गुरु अमरदास जी १५७४ ई को ज्योति-जोत समा गये। बाबा बुड्ढा जी ने गुरु जी के ज्योति-जोत समाने के समय सारी रस्में अपने हाथों से कीं। इस समय बाबा मोहरी जी अपनी पूर्व भूल सुधारते हुए सन्मुख हुए।

श्री अमृतसर के लिए भी बाबा बुड्ढा जी ने बहुत सेवा की। श्री गुरु रामदास जी ने श्री गुरु अमरदास जी की आज्ञा मानकर संवत् १६२७ को संतोखसर सरोवर की खुदाई का शुभारंभ किया और इस सेवा में भी बाबा बुड्ढा जी का बहुत योगदान रहा। 'गुरु का चक्क' नगर की सेवा भी बाबा बुड्ढा जी स्वयं करवाते रहे। श्री गुरु रामदास जी ने संवत् १६३४ को एक अन्य बड़े सरोवर की खुदाई आरंभ की,

जिसका नाम 'अमृत सर' प्रसिद्ध हुआ। गुरु साहिब ने अपने पवित्र कर-कमलों से दुखभंजनी बेरी के पास से खुदाई का आरंभ करवाया। बाबा बुड्ढा जी इस महान कार्य की सेवा के लिए एक बेर के वृक्ष (बाबा बुड्ढा जी की बेर) के नीचे बैठकर संगत को टोकरियां-फावड़े देते थे। श्री गुरु अरजन देव जी ने इस सरोवर के मध्य 'श्री हरिमंदर साहिब' की नींव रखवाई। श्री हरिमंदर साहिब की सेवा भी बाबा बुड्ढा जी से श्री गुरु अरजन देव जी ने अपनी निगरानी तले करवाई थी। श्री गुरु अरजन देव जी ने बाबा बुड्ढा जी को समूचे निर्माण के कामों का प्रबंध सौंप दिया। प्रिथीचंद ने गुरगद्दी पर हक्क जताना चाहा परंतु भाई गुरदास जी और बाबा बुड्ढा जी ने संगत को इस गुमराहकुन प्रचार से सुचेत किया तथा गुरु-घर के साथ जोड़े रखा।

श्री गुरु अरजन देव जी ने भाई गुरदास जी तथा बाबा बुड्ढा जी के साथ 'अमृत सर' सरोवर में सुंदर श्री हरिमंदर साहिब का निर्माण करने के बारे में विचार-विमर्श किया ताकि गुरु जी के हुक्म के अनुसार बाबा बुड्ढा जी, भाई गुरदास जी, भाई साल्हो जी तथा अन्य प्रमुख सिक्खों की निगरानी तले श्री हरिमंदर साहिब के निर्माण का काम हुआ। बाबा बुड्ढा जी इस सेवा की निगरानी अमृत सरोवर की परिक्रमा में एक बेरी के वृक्ष के नीचे बैठकर करते थे।

१५९० ई में श्री गुरु अरजन देव जी धर्म प्रचार के लिए रवाना हुए तो 'बाबे दी बीड़' से गुरु जी बाबा बुड्ढा जी को साथ लेकर मौजूदा तरनतारन वाले स्थान पर पहुंचे। 'तवारीख गुरू खालसा' के अनुसार गुरु जी ने इस स्थान पर एक नगर बसाने एवं एक विशाल सरोवर बनाने की इच्छा जाहिर की। गुरु जी की इस इच्छा पर फूल चढ़ाने के लिए बाबा बुड्ढा जी ने नूरदीन, खारा तथा पलासौर के चौधरियों से बात की, क्योंकि यह जमीन इन तीनों गांवों की सांझी चरागाह थी। गुरु जी ने यह १८०० बीघा जमीन मोल लेकर १५९० ई में तरनतारन की नींव रखी तथा एक बड़ा सरोवर बनवाया।

गुरु के महिल माता गंगा जी गुरु-दरबार में आने वाली संगत की सेवा बड़ी श्रद्धा-भावना से करते थे। एक बार आप गुरु जी से आज्ञा लेकर बाबा बुड्ढा जी तथा संगत के लिए गुरु का लंगर (मिस्से परशादे, लस्सी, प्याज आदि) लेकर बाबे दी बीड़ (झबाल) पहुंचे। बाबा जी सादा भोजन छकते थे तथा साधारण वस्त्र पहनते थे। बाबा जी ने बड़े प्यार से परशादा छका तथा माता गंगा जी को महाबली पुत्र होने की आशीष दी :

तुमरै ग्रिह प्रगटेगा जोधा।
जा को बल गुन किनूं न सोधा।

(गुर बिलास पा: ६)

श्री गुरु अरजन देव जी के होनहार सपुत्र बाल श्री हरिगोबिंद साहिब की अक्षरी-विद्या तथा शस्त्र-विद्या के साथ घुड़सवारी की सिखलाई आदि की जिम्मेदारी बाबा बुड्ढा जी को ही सौंपी। श्री गुरु अरजन देव जी बाल श्री हरिगोबिंद साहिब को अंगुली पकड़कर खुद बाबा बुड्ढा जी के पास बीड़ साहिब में लेकर गए। बाबा बुड्ढा जी ने पूरी लगन एवं मेहनत से यह जिम्मेदारी पूरी की :

शसत्र शासत्र सभ विदिया पाई।
हरि गुविंद मनि हरख धराई।

(गुर बिलास पा: ६)

जब श्री गुरु अरजन देव जी ने पवित्र 'आदि श्री (गुरु) ग्रंथ साहिब' की बीड़ की तैयारी शुरू की तो बाबा बुड्ढा जी ने पूर्व गुरु

साहिबान की बाणी एकत्र करने में श्री गुरु अरजन देव जी की मदद की :

एक दिवस प्रभ प्रातहकाल।
दइआ भरे प्रभ दीन दयाल।
यह मन उपजी, प्रगटिओ जग पंथ।
तिह कारन कीजै अब ग्रिंथ ॥२॥

जब गुरु साहिब आदि श्री (गुरु) ग्रंथ साहिब के संकलन तथा संपादन का कार्य कर रहे थे तो उस समय बाबा मोहन जी से बाणी की पोथियां लेकर सादर पालकी में रख कर श्री अमृतसर के लिए रवाना हुए तो बाबा बुड्ढा जी, भाई गुरदास जी तथा श्री (गुरु) हरिगोबिंद साहिब जी आगे से लेने के लिए गए। जब श्री गुरु अरजन देव जी ने मानवता के उद्धार हेतु पवित्र ग्रंथ आदि श्री गुरु ग्रंथ साहिब तैयार किया तो बाबा बुड्ढा जी को प्रथम ग्रंथी स्थापित किया गया। 'गुरबिलास पातशाही छेवीं' के अनुसार :

करत बिचार ऐस ठहराई।
बुड्ढा जी सेवा निपुनाई।
गुर नानक इन दरसि कराए।
करि है इहु मनि अनंदु पाए ॥१५॥

बाबा बुड्ढा जी ने आदि श्री गुरु ग्रंथ साहिब को मंजी साहिब पर सुशोभित किया तो गुरु जी ने बाबा बुड्ढा जी को संबोधित करते हुए कहा :

बुड्ढा साहिब खोलहु ग्रिंथ।
लेहु आवाज़ सुनहि सभि पंथ ॥३२॥
अदब संग तबि ग्रिंथ सु खोला।
ले अवाज़ बुड्ढा मुख बोला ॥३३॥
(श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ)

जब आदि श्री गुरु ग्रंथ साहिब का प्रकाश हुआ तो पहला हुकमनामा भी बाबा बुड्ढा जी ने संगत को श्रवण करवाया :

सूही महला ५ ॥
संता के कारजि आपि खलोइआ हरि कंमु करावणि आइआ राम ॥
धरति सुहावी तालु सुहावा विचि अंम्रित जलु छाइआ राम ॥
अंम्रित जलु छाइआ पूरन साजु कराइआ सगल मनोरथ पूरे ॥
जै जै कारु भइआ जग अंतरि लाथे सगल विसूरे ॥
पूरन पुरख अचुत अबिनासी जसु वेद पुराणी गाइआ ॥
अपना बिरदु रखिआ परमेसरि नानक नामु धिआइआ ॥ (पन्ना ७८३)

श्री गुरु अरजन देव जी लाहौर रवाना होने लगे तो संगत में ऐलान कर गये कि उनके बाद गुरिआई के उत्तराधिकारी साहिबजादा श्री हरिगोबिंद साहिब होंगे। श्री गुरु अरजन देव जी की शहादत के बाद गुरु-हुक्मानुसार श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब को गुरिआई पर विराजमान कराने की गुरु-घर की चली आ रही रीति को पांचवीं बार निभाने का सौभाग्य बाबा बुड्ढा जी को प्राप्त हुआ। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने बाबा बुड्ढा जी को दो तलवारें पेश करने को कहा। गुरु जी ने बाबा बुड्ढा जी के हाथों से मीरी-पीरी की दो तलवारें पहनी ताकि जालिम हकूमत की ज्यादतियों का मुकाबला किया जा सके।

श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने अपने शहीद गुरु-पिता की इच्छाओं के अनुसार तैयारियां शुरू कर दीं। उन्होंने अकाल बुंगे (श्री अकाल तख़्त साहिब) का निर्माण बाबा बुड्ढा जी तथा भाई गुरदास जी के सहयोग से खुद किया :

किसी राज नहि हाथ लगायो।
बुड्ढे औ गुरदास बनायो। (गुर बिलास पा: ६)

श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने संगत को फरमान जारी किया कि वे गुरु दरबार में अच्छे

शस्त्र, बढ़िया घोड़े तथा अपनी जवानी की भेंटाएं लेकर हाजिर हों। मुगल हकूमत को यह कैसे बर्दाश्त हो सकता था कि कोई उसके समान सरकार बनाकर फरमान जारी करे? इसी लिए गुरु जी को ग्वालियर के किले में कैद कर दिया गया। बाबा बुड्ढा जी ने सतिगुरु की याद को हर समय याद रखने के लिए चौंकी साहिब की रीति श्री हरिमंदर साहिब में चलाई जो आज भी जारी है। माता जी के हुक्म के अनुसार बाबा बुड्ढा जी ग्वालियर गए। जब श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के दर्शन करने की आज्ञा न हुई तो आप गुरु-यश करते हुए किले की परिक्रमा करने लग पड़े। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ५२ राजाओं समेत ग्वालियर के किले में से रिहा होकर जब श्री अमृतसर आए तो बाबा बुड्ढा जी ने गुरु जी के आने की खुशी में श्री हरिमंदर साहिब में दीपमाला की।

श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब अपने सपुत्र श्री तेग बहादर साहिब को उस समय के अध्यापकों में से सबसे प्रौढ़ बाबा बुड्ढा जी के पास लेकर गए। आपने अपने मुखारबिंद से ये वचन किए, "हे जागृत बुजुर्गवार! आपने मुझे विद्या प्रदान करने की भरपूर कृपा की थी, अब आप जी मेरे पुत्र तेग बहादर को विद्या का दान बख्श कर कृतार्थ करें। श्री तेग बहादर साहिब ने बाबा जी के आगे शीश झुकाया जिन्होंने उनको अशीषें दीं तथा शिक्षा प्रदान करने की जिम्मेदारी निभाई।

श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब से आज्ञा लेकर बाबा बुड्ढा जी रमदास आ गए। बाबा बुड्ढा जी अब बहुत बुजुर्ग हो चुके थे। उन्होंने अपना अंतिम समय निकट जानकर गुरु-दर्शन की इच्छा प्रकट की। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब बाबा बुड्ढा जी की विनती प्रवान करके रमदास पहुंचे। बाबा बुड्ढा जी अपने जीवन के अंतिम समय संतुष्टि प्रतीत कर रहे थे। १४ मार्गशीर्ष, संवत् १६८८ को बाबा जी १२५ वर्ष की आयु भोगकर श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब की मौजूदगी में परलोक गमन कर गए। बाबा जी का अंतिम संस्कार गुरु साहिब ने अपने हाथों से किया :

चिखा उपरि जब ही धरी, साहिब बुड्ढे देह।
हरिगुविंद के नैन ते, चलयो नीर अति नेह।
(गुर बिलास पा: ६)

फिर वे परिवार को हुक्म मानने तथा संगत को बाबा बुड्ढा जी के जीवन से प्रेरणा लेने का उपदेश देकर श्री अमृतसर वापिस आ गए।

बाबा बुड्ढा जी के बाद उनके सपुत्र भाई भाना जी ने अपने समकालीन श्री गुरु हरिराय साहिब को, भाई भाना जी के सपुत्र भाई गुरदित्ता जी ने श्री गुरु तेग बहादर साहिब को तथा भाई गुरदित्ता जी के सपुत्र भाई राम कुइर जी ने अपने समकालीन श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी को गुरिआई देने की रस्म अदा की। इसके अलावा बाबा बुड्ढा जी के वंशज समय-समय पर गुरमति के प्रचार-प्रसार, प्रबंध, जंगी मुहिमों तथा अन्य कार्यों में भी आगे बढ़कर गुरु-घर की सहायता करते रहे।

भाई भाना जी के परलोक गमन के बाद उनके बड़े सपुत्र भाई जलाल जी ने अपने पिता की जिम्मेदारी संभाली, किंतु उम्र ने ज्यादा देर तक उनका साथ नहीं दिया। लगभग छ: माह के बाद वे परलोक गमन कर गए। भाई जलाल जी भी संत-स्वभाव के व्यक्ति थे। भाई जलाल जी के बाद भाई सरवण जी, भाई झंडा जी तथा उनके पश्चात भाई गुरदित्ता जी एवं बाद में भाई राम कुइर जी भी अपनी-अपनी सामर्थ्य एवं समझ के अनुसार गुरु-घर की सेवा करते

रहे। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी द्वारा खालसा साजना के साथ सिक्ख लहर में जो मोड़ आया बाबा बुड्ढा जी का खानदान इससे भी पीछे न रहा। इनके खानदान में से भाई राम कुइर जी ने श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी से अमृत छका तथा 'सिंघ' सजकर भाई गुरबखश सिंघ बन गए:

गोबिंद सिंघ इह बचन उचारा।
गुरबखश सिंघ है नाम तुमारा।
हमरी तुम सिउ अधिक प्रीत।
दरसन देव्हु मुहि नित नीत।४८।

(कवि सौंधा सिंघ)

भाई गुरबखश सिंघ जी की यादगार पाकिस्तान की तहसील शकरगढ़ से २४ किलोमीटर आगे गांव नैनाकोट में बनी हुई है। इस स्थान को 'गुरुद्वारा बाबा गुरबखश सिंघ' कहा जाता है। १९४७ ई में हुए देश-विभाजन के बाद इस स्थान पर पाकिस्तान सरकार द्वारा प्राइमरी स्कूल चलाया जा रहा है। गुरुद्वारा साहिब की हवेली ढह-ढेरी हो चुकी है, परंतु श्री गुरु ग्रंथ साहिब का प्रकाश-स्थान बहुत ही सुंदर बनाया गया है। इस स्थान पर तीन कमरे हैं जिनके सामने एक गोल इमारत है जो एक फुट ऊंचे थड़े पर बनी हुई है। इस इमारत को 'यादगार बाबा गुरबखश सिंघ' कहा जाता है।

भाई गुरबखश सिंघ के सपुत्र भाई मुहर सिंघ तथा भाई अनूप सिंघ थे। भाई मुहर सिंघ नाम-सिमरन के साथ-साथ बदलती परिस्थितियों के अनुकूल घोड़े एवं शस्त्र भी रखने लगे :

मुहर सिंघ गुरिआई पाई।
राज जोग की रीति कमाई।
एक ओर अस्व रंग राते।
एक ओर झूले गज माते।५०।

(कवि सौंधा सिंघ)

अगले उत्तराधिकारी भाई शाम सिंघ जी एक तरफ परमात्मा के भय में रहने वाला नाम-अभ्यासी तथा दूसरी ओर महादानी एवं परोपकारी व्यक्ति थे :

परसुआरथ महि बिक्रम जान।
परकारज महि निस दिन धिआन।
वैदन ते औखध करवावै।
रोगी जो ता के चल आवे।
दइआ करे ता के व्हु देइ।
चंगा करे परम जस लेइ।
जे को खुधिआ अरबी होइ।
ता के भोजन देवे सोइ। *(कवि सौंधा सिंघ)*

इसके पश्चात भाई कान्ह सिंघ के बाद उसने सपुत्र भाई सुजान सिंघ गद्दीनशीन हुए। ये कवि सौंधा सिंघ जी के समकालीन थे।

अनुरोध

'गुरमति ज्ञान' सिक्ख इतिहास तथा गुरबाणी में दर्ज शिक्षाओं द्वारा मानव समाज का मार्गदर्शन करती धार्मिक पत्रिका है। गुरबाणी के सम्मान को मुख्य रखते हुए 'गुरमति ज्ञान' के पाठक साहिबान से अनुरोध है कि वे 'गुरमति ज्ञान' को पढ़ने के बाद इसे न तो रद्दी में बेचें तथा न ही ऐसी जगह पर रखें जहां इसकी उचित संभाल न हो सके। पत्रिका को यदि घर में संभालकर रखने की उचित व्यवस्था न हो तो पढ़ने के बाद इसे किसी मित्र, रिश्तेदार आदि को दे दें अथवा किसी गुरुद्वारा साहिबान या पुस्तकालय में पहुंचा दें। -संपादक।

कविताएं

सिक्ख शिरोमणि बाबा बुड्ढा जी

*-श्री संजय बाजपेयी रोहितास**

गुरु नानक दा प्यार-दुलार
सिक्ख संगत का करे उपकार
गुरु-झोली में अनेकों मोती
गुरु-निगाह में असंख्य ज्योति
उदाहरण बाबा बुड्ढा जी का
गुरु-प्रकाश जगमग दीया घी का
सद्आचरण एक सौ पच्चीस वर्ष
जीवन भर दिया सबको हर्ष
परम भक्त वे गुरु नानक के
रसिया वे श्री गुरबाणी जप के
गांव कत्थूनंगल जिला अमृतसर
महक रहा कसतूरी-केसर
बाबा सुग्घे रंधावे का
घर-आंगन खुशियों से महका
पुत्र-जन्म दिया मां गोरां ने
खुशियों की मस्ती लगी छाने
सात कार्तिक संवत् पंद्रह सो त्रेसठ
मां की गोद में शिशु के ठाठ
माई-बाप का मन खुशी से चहका
प्यार में शिशु नाम 'बूड़ा' रखा
मेहनत देती चैन की रोटी
घर में काम किसानी-खेती
बूड़ा जी जब हुये किशोर
मेहनत से वे न हुए दूर
फसल से खरपतवार हटाते
बूड़ा जी पितु हाथ बंटाते
गऊ और भैंसों को चराते
सखा-मित्रगण को दुलराते
मिले जो कोई चीज खाने की
तब पुकार वे करते सबको आने की

मेरे हाथ में है अशरफी
आओ! बांट के खा लें बरफी
कभी बरफी कभी मलाई खीर
वचन-बिलास होते गंभीर
कोई प्रसन्न तो कोई उदास
गांव कत्थूनंगल से गांव रमदास
आ गये संग पिता और मां जी
यहां भी कृषि-कार्य में मगन बूड़ा जी
मन में जिसके दरस की चाह
रमदास में थे वे प्रथम पातशाह
सतिगुरु नानक देव महान
जिनका आदर करे जहान
सतिगुरु के दर्शन करने गये
हाथ में दूध भरा गिलास लिये
होठों पर निवेदन आया
दूध मैं प्रभु आपके लिये लाया
सच्चे पातशाह इसे स्वीकारो!
अंधकार से मुझे उबारो!
बालक में सच्ची श्रद्धा का भाव
गुरु जी आये भीतर चाव
पीकर दूध मुस्कराया चेहरा
पूछा बेटा क्या नाम तेरा?
बालक गुरु-चरणों में पड़ा
बोला, माई-बाप मुझे कहते 'बूड़ा'
सतिगुरु बोले, "हम तृप्त हुये"
बूड़ा जी ने गुरु-चरण छुये
अर्ज किया चरणों में सादर
भोजन से तृप्त पंच तत्व घर
किन्तु तृप्त मन होता कैसे?
श्री गुरु नानक थोड़ा हंसे

*C/o जनाब हुसैनी मियां, स्टेशन रोड, कछौना (बालामऊ), जिला हरदोई (उ. प्र.)-२४११२६

सतिगुरु बोले, "ऐ ज्ञानी बालक!
ज्ञान-संपदा का तू मालिक
ये परमेश्वर की सौगातें
'बुड्ढों' सी हैं तेरी बातें
सतिगुरु नानक सबके सगे
बूड़ा को अब 'बुड्ढा जी' कहलाये
मन पर श्री गुरु नानक छाये
जब करतारपुर बुड्ढा जी आये
बांट रहे वे सबको प्यार
गुरु नानक मत का करें प्रचार
रोते हुओं को तुरंत हंसाते
'गुरमति ज्ञान' की बात बताते
सिखलाते सबको सद्-ज्ञान
गुरबाणी सच्ची मुसकान
अंतर्मन गुरु-भक्ति का राग
बुड्ढा जी मन व्याप्त वैराग
पिता और माता यह चाह
बुड्ढा जी लें गृहस्थ की राह
श्री गुरु नानक से फरियाद
बुड्ढा जी का घर हो आबाद
विनती सुनकर पिता-मातु की
श्री गुरु ने बुड्ढा जी से बात की
समझाया देकर उपदेश
ब्याह के लिये दिया आदेश
श्री गुरु आशीर्वाद विस्मादी
हुई तय बीबी मरोआ संग शादी
बाबा बुड्ढा गये परनाये
चार पुत्र उनके घर आये
प्रथम पुत्र भाई सुधारी जी
द्वितीय पुत्र भाई भिखारी जी
तृतीय पुत्र भाई महिमू जी
चतुर्थ पुत्र भाई भाना मनमौजी
बाबा बुड्ढा जी में तेज अध्यात्म का
वह तो शक्ति-पुंज परमात्म का
हर कोई उनका और वे सब के
ग्रंथी बने श्री हरिमंदिर साहिब के

आप जी ने दिया आशीष सौगात
माता गंगा को योद्धा पुत्र-दात
छठम पातशाह का अवतरण
श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब मंगलकरण
बाबा बुड्ढा जी के कार्य महान
श्री हरिगोबिंद जी को दिया अक्षर-ज्ञान
गोली, बंदूक और तलवार
दी सिखलाई बने अश्व-सवार
सिखला दीं अनेक विद्यायें
शाश्वत जीवन की शिक्षायें
समय की मांग पर समस्या निवारण
दो तलवारें करा दीं धारण
मीरी-पीरी की प्रतीक
सांसारिक शक्ति, रूहानी तौफीक
बाबा बुड्ढा जी का ध्येय
सिक्ख संगत गुरु सदा अजेय
गुरुद्वारा स्थान महान
जहां से खुशियां पाये जहान
ज्ञानी गिआन सिंघ की साखी
महक महक कर फिर से महकी
तवारीख गुरु खालसा में दर्ज
'रोहितास' करता है अर्ज
वजीर खान सूबेदार लाहौर
उस मन गुरुद्वारा सिरमौर
गुरु-सत्ता में उसे भरोसा
विधि ने रोग उसे परोसा
उसे जलोधर की बीमारी
हर पल मरने की तैयारी
सफल हुआ न कोई उपचार
तब वह हुआ बहुत लाचार
उसके वारिस उसे उठाकर
श्री हरिमंदर साहिब आये लाकर
श्री गुरु अरजन देव जी के सन्मुख
वजीर खान के खत्म हुए दुख
श्री गुरु अरजन देव जी मुसकाये
छण में हुये अनेक उपाय

एक उपाय बाबा बुड्ढा जी का
कार-सेवा टोकरा उठाकर फेंका
पेट का सारा निकल गया पानी
टली मृत्यु मिली जिंदगानी
बीमार का रोग पानी बन बहा
वजीर खान ने तब शुक्रिया कहा
बाबा बुड्ढा जी सिक्ख शिरोमणि
उनकी बातें सदा बड़ी-बड़ी
वह तो सदाचार प्रणेता
उन्होंने हर इक दिल को जीता
वे स्वयंमेव ईश्वर संदेश
ज्ञान, काल, सद्गुण लवलेस
सदा वे बोले गुरबाणी
सदा ध्यान वह अमृत पानी
श्री गुरु नानक अमृत-बोल
पहले तू खुद को ले तौल
जान आदर्श जीवन हो निहाल
प्रेम से बोल सत श्री अकाल!

दीवाली का संदेश

*-डॉ. कशमीर सिंह 'नूर'**

सच्चे गुरु के चरणों में हम, शीश निवाएं!
सच्चे गुरु का संदेश, दूर-दूर तक फैलाएं!
सिमरन के साथ सेवा का, कर्त्तव्य निभाएं!
उसके नाम की महिमा, श्वास-श्वास गाएं!
बंधुजनो! इस तरह दीवाली का पर्व मनाएं!
दीवाली के दीयों की तरह, हम जगमगाएं!
प्यार का उजाला हम, हर तरफ फैलाएं!
किसी को न सताएं, सबको अपना बनाएं!
किसी को न रुलाएं, हर किसी को हंसाएं!
बंधुजनो! इस तरह . . .
परोपकार की भावना की, ज्योति जलाएं!
इस जीवन को धर्म-कर्म की, भूमि बनाएं!
'गगन महि थाल' आरती, सच्चे मन से गाएं!
दुखियों, गरीबों को अपने, गले लगाएं!
बंधुजनो! इस तरह . . .
सच के दीए हम, हर जगह पर जलाएं!
अपने मन को परिपक्व कर, सच को बसाएं!
दूर-दूर तक प्रकाश सच का, हम फैलाएं!
सभी जगह से झूठ-अंधकार मिटाएं!
बंधुजनो! इस तरह दीवाली का पर्व मनाएं!

**बी-एक्स ९२५, मोहल्ला संतोखपुरा, होशियारपुर रोड, जलंधर-१४४००४, मो. ९८७२२-५४९९०*

आज दीप जलाओ !

*-डॉ. सुरिंदरपाल सिंह**

दीप जलाओ आज दीप जलाओ!
बंदी-छोड़ गुरदेव को सर झुकाओ!
किला ग्वालियर से हरिगोबिंद जी आये,
जालिम मुगल जिन्हें रोक न पाये,
खुशी मनाओ आज खुशी मनाओ!
अदलो-इंसाफ की जोत जलाई,
तख्त अकाल साजा नींव रखाई,
उन्हें अराधो उन्हें धियाओ!
जुल्मी राज ने उन्हें बंदी बनाया,
किसी तरह बंदी रख नहीं पाया,
उन्हीं की शोभा के दीप जलाओ!
संगत का रोष गवालियर था पहुंचा,
जयघोष सत्य नाम का गूंजा,
ऐसे गुरदेव के दर्शन पाओ!
ना को बैरी नही बेगाना,
सभी गरीबों का दर्द पहचाना,
गुरु-कीर्ति की महक महकाओ!

**पत्तन वाली सड़क, पुराना शाला, गुरदासपुर। मो. ९४१७१-७५८४६*

गुरबाणी में आरती की विलक्षण परंपरा

*-डॉ. जसविंदर कौर**

'आरती' का आरंभ अग्नि संबंधी रीति-रिवाजों या होम से वैदिक युग में हुआ। 'आरती' शब्द संस्कृत के शब्द 'आत्रिक' का अपभ्रंश रूप है जिसका अर्थ है वह ज्योति जो रात्रि का अंधकार दूर करने के लिये नहीं बल्कि किसी मूर्ति के ऊपर घुमाने के लिये जलाई गई है।[१] 'नालंदा विशाल शब्द सागर' में 'आरती' को परिभाषित करते हुए उसे किसी मूर्ति के ऊपर दीपक घुमाने का कार्य कहा गया है। किसी पात्र में घी की बत्ती रख कर घुमाए जाने को भी 'आरती' कहा जाता है। इसके साथ ही आरती के समय गाये या पढ़े जाने वाले स्रोत को भी 'आरती' कहा जाता है।[२]

सिक्ख मत में आम प्रचलित 'आरती' का खंडन किया गया है तथा अखंड आरती का उपदेश दिया गया है। भाई कान्ह सिंघ नाभा के अनुसार, सत्य-धर्म का प्रचार करते हुए सतिगुरु नानक देव जी जब जगन्नाथपुरी पहुंचे तब शाम के समय आरती में शामिल नहीं हुए। पंडित ने गुरु साहिब को कहा, "आप नास्तिक हो जो आप ने 'आरती' में हिस्सा नहीं लिया?" उस समय जगत-गुरु ने धनासरी राग के *"गगन मै थालु रवि चंदु दीपक बने . . . ॥"* शबद द्वारा प्राकृतिक आरती का उपदेश दिया:[३]

गगन मै थालु रवि चंदु दीपक बने तारिका मंडल जनक मोती ॥
धूपु मलआनलो पवणु चवरो करे सगल बनराइ फूलंत जोती ॥ (पन्ना १३)

इस आरती में गुरु नानक साहिब ने प्रभु की सदीवकालीन हो रही आरती की चर्चा की है। इस आरती में परमात्मा की प्राकृतिक आरती की व्याख्या की गई है। इसमें कहा गया है कि आकाश रूपी थाल है, सूर्य और चंद्रमा दीपक बने हुए हैं, तारों का समुदाय मानो मोती है। मलय पर्वत को छू कर जो हवा आ रही है वही धूप है; पवन चंवर कर रही है। हे महा प्रकाशवान! सारी फूली हुई वनस्पति आरती के लिये फूल दे रही है। हे जन्म-मरण भाव आवागमन को समाप्त करने वाले स्वामी! तेरी कैसी अद्‌भुत आरती हो रही है! तेरी आरती में घंटों, शंखों, छैणों के स्थान पर अनहद शबदों के नगाड़े बज रहे हैं। सब जीवों में व्याप्त होने के कारण हे प्रभु, तेरी हजारों आंखें हैं, पर फिर भी तेरी कोई शक्ल नहीं है; हजारों तेरे सुंदर पैर हैं, पर निराकार होने के कारण कोई भी तेरा पैर नहीं है; हजारों तेरी नासिकाएं हैं पर फिर भी तेरी कोई नाक नहीं है। इस तरह के तेरे कौतुकों ने मुझे हैरान किया हुआ है।

सभी जीवों में प्रभु की वही एक ज्योति प्रसारित हो रही है। उस ज्योति के प्रकाश में सारे जीवन भी प्रकाशित हो रहे हैं। उस ज्योति की समझ गुरु की शिक्षा द्वारा ही प्राप्त होती है। इस सर्वव्यापक ज्योति की आरती यह है कि जो कुछ उसकी रजा में हो रहा है वही जीव को अच्छा लगे :

गुर साखी जोति परगटु होइ ॥

१४७, कबीर पार्क, श्री अमृतसर-१४३००५, मो. : ९४१७१४५४४५

जो तिसु भावै सु आरती होइ ॥ (पन्ना १३)

प्रभु की रजा में चलना ही उसकी आरती करना है। हे प्रभु! तेरे चरण-कमलों के रस के लिये मेरा मन ललचाता रहता है। हर रोज मुझे इसी रस की प्यास लगी हुई है। मुझ नानक पपीहे को अपनी कृपा का जल दे जिसके कारण मैं तेरे नाम में लगा रहूं।

प्रोफेसर साहिब सिंघ ने 'श्री गुरु ग्रंथ साहिब दर्पण' के अर्थों पर विचार करते समय उस आरती की कहीं भी प्रौढ़ता नहीं की जो आम तौर पर की जाती है। थोड़ी समझ वाला व्यक्ति भी इसकी स्पष्टता से इंकारी नहीं हो सकता। फिर इतिहास प्रमाणित बात तो यह है कि इसका उच्चारण साकार पूजा की निरर्थकता सिद्ध करने के लिये ही हुआ था।

यही नहीं, जिन और शबदों का गायन 'आरती' शीर्षक के अधीन किया जाता है वे भी निराकार की आराधना पर ही जोर देते हैं। किसी एक विशिष्ट मूर्ति की आराधना के स्थान पर इन आरतियों में संपूर्ण प्रकृति को अनंत प्रभु की आरती में सदा संलग्न वर्णित किया गया है। प्रकृति के विभिन्न तत्वों को प्रभु-आराधना में लीन चित्रित करना इन आरतियों की विशिष्टता है।

श्री गुरु नानक देव जी द्वारा उच्चरित सर्वव्यापी प्रभु की आरती ने बहुत महान हस्तियों को भी प्रभावित किया है। कहते हैं कि एक बार श्री बलराज साहनी ने नोबेल पुरस्कार प्राप्त श्री रवींद्र नाथ टैगोर से पूछा कि "आपने भारत के लिये राष्ट्रीय-गान की रचना की है। क्या आप संपूर्ण विश्व के लिये अंतर्राष्ट्रीय विश्व-गान की रचना कर सकते हैं?" श्री टैगोर ने उत्तर दिया कि "सिर्फ अंतर्राष्ट्रीय ही नहीं बल्कि संपूर्ण ब्रह्मांड के लिये 'गान' गुरु नानक साहिब रचित कर गये हैं।" उनका संकेत श्री गुरु नानक देव जी द्वारा रचित 'आरती' बाणी की ओर था। श्री टैगोर ने इस 'आरती' का बंगाली अनुवाद भी किया।

गुरुद्वारों या धर्मशालाओं में आरती का प्रचलन गुरु नानक साहिब के समय से ही था, इसकी पुष्टि भाई गुरदास जी की रचनाओं से होती है जैसे कि :

--सोदरु आरती गावीऐ अंम्रित वेले जापु उचारा।
(वार १:३८)

--राति आरती सोहिला माइआ विचि उदासु रहाइआ। (वार २६:४)

श्री गुरु अरजन देव जी ने अपनी बाणी में स्पष्ट तौर पर कहा है कि प्रभु की आरती असीम और सदीवी आनंद की प्रदायक है :

आरती कीरतनु सदा अनंद ॥ (पन्ना ३९३)

श्री गुरु ग्रंथ साहिब के आरती के संपूर्ण भाव को समझने के लिये इसमें संग्रहित गुरु नानक साहिब रचित 'आरती' के अतिरिक्त और आरतियों के भावार्थों को भी समझना आवश्यक है। भक्त रविदास जी रचित आरती भी धनासरी राग में ही है। भक्त जी की आरती के भाव को समझने के लिये उनके उस शबद के भावों को समझना अच्छा होगा जिसमें वे परंपरागत आरती में भगवान को अर्पित वस्तुओं की कमियों की ओर संकेत करते हैं। उनकी गूजरी राग की बाणी में कहा गया है कि "दूध को बछड़े ने, फूलों को भंवरों ने जूठा किया हुआ है, मैं किस स्वच्छ वस्तु को लेकर तेरी पूजा-अर्चना करूं?"

दूधु त बछरै थनहु बिटारिओ ॥
फूलु भवरि जलु मीनि बिगारिओ ॥
माई गोबिंद पूजा कहा लै चरावउ ॥
अवरु न फूलु अनूपु न पावउ ॥ (पन्ना ५२५)

धनासरी राग में भक्त रविदास जी रचित आरती में स्पष्ट कहा गया है, "हे प्रभु! तेरा नाम ही आरती है और उसके अतिरिक्त अन्य सब कुछ झूठा पसारा है।"

नामु तेरो आरती मजनु मुरारे ॥
हरि के नाम बिनु झूठे सगल पासारे ॥
(पन्ना ६९४)

भाव अनजान लोग भौतिक वस्तुओं के साथ तेरी आरती करते हैं, पर मेरे लिये तो तेरा नाम ही आरती है; यही तीर्थों का स्नान है। परमात्मा के नाम के अतिरिक्त अन्य सब झूठे आडंबर हैं। भक्त रविदास जी के अनुसार नाम ही वो आसन है जिस पर बैठकर पूजा की जाती है; प्रभु का नाम ही चंदन घिसने वाली सिल है, प्रभु-नाम ही केसर है, प्रभु-नाम ही पानी है और वही चंदन है। भक्त रविदास जी कहते हैं कि नाम-सिमरन रूपी चंदन को पानी में घिस कर ही मैं प्रभु को लगाता हूं।

हे प्रभु! तेरा नाम ही दीपक है और तेरा नाम ही बाती है, दीपक में डाला गया तेल भी तेरा नाम ही है। मैंने तेरे नाम की ही ज्योति जगाई हुई है और उसी के कारण सब भवनों में प्रकाश हो रहा है।

प्रभु-नाम ही धागा है, प्रभु-नाम ही फूल है और प्रभु-नाम ही फूलों की माला है। प्रभु-नाम के अतिरिक्त अन्य सारी वनस्पति, जिससे लिये हुए फूल लोग मूर्तियों को अर्पित करते हैं, जूठे और झूठे हैं। सारी कुदरत प्रभु की पैदा की हुई है। उसमें से मैं क्या प्रभु को अर्पित करूं? प्रभु-नाम रूपी चंवर ही प्रभु पर झुलाया जा सकता है।

जीव प्रभु-नाम को भूल कर अठारह पुराणों की कहानियों में लगे हुए हैं, अठारह तीर्थों के स्नान को ही पुण्य कर्म समझे बैठे हैं, इसी कारण वे आवागमन के चक्कर में फंसे हुए हैं। भक्त रविदास जी कहते हैं कि हे प्रभु! तेरा नाम ही मेरे लिये तेरी आरती है। सदा कायम रहने वाले 'नाम' का ही मैं तुझे भोग लगाता हूं :

कहै रविदासु नामु तेरो आरती सति नामु है हरि भोग तुहारे ॥ *(पन्ना ६९४)*

भक्त सैण जी द्वारा रचित आरती भी श्री गुरु ग्रंथ साहिब में धनासरी राग में दर्ज है। वे कहते हैं कि हे माया के मालिक प्रभु! मैं तुझ पर बलिहारी जाता हूं। तेरे पर बलिहारी जाना ही धूप, दीप और घी आदि सामग्री एकत्र कर तेरी आरती करना है। हे हरि! हे राजन! तेरी कृपा से मेरे अंदर सदा तेरे नाम-स्मरण का आनंद-मंगल हो रहा है। हे कमलापति! तू निरंजन ही मेरे लिये आरती करने के लिये सुंदर व अच्छा दीपक और साफ-सुथरी बाती है :

ऊतमु दीअरा निरमल बाती ॥
तूंही निरंजनु कमला पाती ॥ *(पन्ना ६९५)*

भक्त सैण जी कहते हैं कि हे मेरे मन! तू उस परमानंद पूर्ण प्रभु का स्मरण कर जो सुंदर स्वरूप वाला है, जो सृष्टि की सार लेने वाला है।

भक्त कबीर जी द्वारा रचित आरती का गायन भी सिक्ख गुरुद्वारों में किया जाता है। उनके द्वारा रचित आरती प्रभाती राग में है। इसमें भक्त कबीर जी कहते हैं कि हे भाई! गुरु के बताए हुए मार्ग पर चलो और उस प्रभु की आरती उतारो जो माया से रहित और सब में व्याप्त है, जिसका कोई विशेष चक्र-चिन्ह नहीं है, जिसके गुणों का वर्णन नहीं किया जा सकता तथा जिसकी शरणागति हो ब्रह्मा भी वेदों का पाठ करते हैं।

कोई-कोई ज्ञानवान ही प्रभु की आरती का भेद समझता है। जो इस भेद को समझ लेता है वह ज्ञान रूपी तेल, नाम रूपी बाती और शरीर में नाम रूपी प्रकाश को दीपक बनाता है। यह दीपक उसने जगत के मालिक प्रभु की ज्योति में जुड़ कर जगाया है :

ततु तेलु नामु कीआ बाती दीपकु देह उज्यारा ॥
जोति जाइ जगदीस जगाइआ बुझै बूझनहारा ॥
पंचे सबद अनाहद बाजे संगे सारिंगपानी ॥
कबीर दास तेरी आरती कीनी निरंकार निरबानी ॥ (पन्ना १३५०)

भाव यह कि हे वासना रहित निरंकार! हे सारंगपानी! तेरे दास (भक्त) कबीर ने भी तेरी इसी प्रकार की आरती की है, जिस कारण तू मुझे अपने साथ प्रतीत हो रहा है और मेरे अंदर एक ऐसा आनंद बन गया है कि मानो पांच प्रकार के साज मेरे अंदर एकरस बज रहे हैं।

भक्त धंना जी द्वारा रचित आरती भी श्री गुरु ग्रंथ साहिब में धनासरी राग में दर्ज है जिसमें उन्होंने 'आरती' के स्थान पर 'आरता' शब्द का प्रयोग किया है। भक्त जी कहते हैं कि हे धरती के पालक प्रभु! मैं तेरे दर का भिखारी हूं, तू मेरी जरूरतों को पूरा कर। जो-जो लोग तेरी भक्ति करते हैं तू उनके कार्य संपूर्ण करता है:

गोपाल तेरा आरता ॥
जो जन तुमरी भगति करंते
तिन के काज सवारता ॥१॥रहाउ॥
दालि सीधा मागउ घीउ ॥
हमरा खुसी करै नित जीउ ॥
पन्हीआ छादनु नीका ॥
अनाजु मगउ सत सी का ॥१॥
गऊ भैस मगउ लावेरी ॥
इक ताजनि तुरी चंगेरी ॥
घर की गीहनि चंगी ॥
जन धंना लेवै मंगी ॥२॥ (पन्ना ६९५)

भक्त जी आगे प्रभु से नित्यप्रति की जरूरतों, जैसे दाल, आटा, घी मांगते हैं, जो मनुष्य को सुखी रखने के लिए आवश्यक हैं; जूती और सुंदर कपड़ा भी मांगते हैं; सात बार जोती हुई जमीन का भाव और अच्छा अन्न भी मांगते हैं। वे यह भी कहते हैं कि हे प्रभु! मुझे दूध देने वाली गाय-भैंस भी चाहिये और एक अरबी घोड़ी भी चाहिये। भक्त धंना जी कहते हैं कि हे प्रभु! तेरा दास (भक्त) धंना तुझसे एक अच्छी पत्नी की मांग भी करता है।

वस्तुतः गुरमति निरोल वृत्ति का मार्ग नहीं, यह प्रवृत्ति और निवृत्ति के मध्य संतुलित मार्ग है। भक्ति में मन लगाने के लिये आवश्यक जरूरतों की पूर्ति अति आवश्यक है। गुरमति इस विचार की धारणी नहीं है कि गृहस्थ का त्याग कर, घर-घर जाकर अन्न-रोटी मांगते रहो। भक्त धंना जी स्पष्ट कहते हैं कि जो लोग तेरी भक्ति करते हैं उनके सभी कार्य संपूर्ण होते हैं।

भक्त धंना जी द्वारा उच्चरित आरती के बाद दसम ग्रंथ में दर्ज सवैये का गायन किया जाता है :

पांइ गहे जब ते तुमरे तब ते कोऊ आंख तरे नहीं आन्यो ॥
राम रहीम पुरान कुरान अनेक कहैं मत एक न मान्यो ॥

भावार्थ यह है कि हे प्रभु! जब से मैं तुम्हारी शरण में आया हूं मैंने अन्य किसी देवी-देवते की आराधना नहीं की है। पुराण और कुरान तुझे राम और रहीम के नाम से जानते हैं और उन संबंधी कई कथाएं भी वर्णित करते हैं। मैं इस प्रकार की किसी विचारधारा

को नहीं मानता। दसम ग्रंथ के एक दोहरे को आरती के अंत में सम्मिलित किया जाता है। इस दोहरे में कहा गया है कि मैंने सभी द्वारों को भाव रास्तों को छोड़कर तेरे द्वार पर ही विश्वास किया है अर्थात् तेरे पर ही विश्वास रखा है। तूने मुझे अपनी शरण में लिया है। हे प्रभु! मैं तेरा सेवक हूं, तू मुझ पर कृपा कर:

सगल दुआर कउ छाडि कै गहयो तुहारो दुआर ॥
बांहि गहे की लाज अस गोबिंद दास तुहार ॥

उपरोक्त वर्णित गुरु नानक साहिब, भक्त रविदास जी, भक्त सैण जी, भक्त कबीर जी, भक्त धंना जी द्वारा उच्चरित श्री गुरु ग्रंथ साहिब में सम्मिलित आरतियों तथा दसम ग्रंथ के सवैये और दोहरे का गायन शाम के समय गुरुद्वारा साहिबान में किया जाता है, जिसे 'आरती की चौंकी' कहा जाता है। वास्तव में इन आरतियों में प्रभु की सदीवकालीन हो रही आरती की ही चर्चा है। इस आरती के समय फूलों की वर्षा करनी, थाली में दीये रख कर उन्हें घुमाना, शंख आदि बजाना गुरमति के अनुकूल नहीं है। स्पष्ट शब्दों में यह मनमति है और सिक्ख आरती की अवधारणा के प्रतिकूल है। हमें इस प्रकार के कर्मकांड से बचकर सिक्ख आरती की असली भावना को समझते हुए एक सर्वव्यापी प्रभु की आराधना उसके नाम-स्मरण द्वारा करते हुए समस्त ब्रह्मांड को उसके हुक्म में चलते हुए मानना चाहिये और स्वयं भी उसकी रजा में चलते हुए अनहद एवं अनंत आनंद को प्राप्त करना चाहिये।

पाद टिप्पणियां :

१. सोहिंदर सिंघ (वणजारा बेदी), पंजाबी लोक धारा विशव कोश, पृष्ठ ३००
२. श्री नवल जी, नालंदा विशाल शब्द सागर, पृष्ठ १३१
३. भाई कान्ह सिंघ नाभा, गुरमति मारतंड, भाग पहला, पृष्ठ ६९

जापु साहिब में निर्गुण ईश्वर-उपासना

-डॉ. मधु बाला*

मानवता के गौरव को बढ़ाने वाले, संसार को परमार्थ का संदेश देने वाले, आध्यात्मिक शक्ति के साथ-साथ शबद-शक्ति द्वारा जनसाधारण में ऊर्जा का संचार करने वाले, कवि, सैनिक और संत होने के साथ-साथ सजगता की अपार सामर्थ्य से सम्पन्न, अत्याचार और अन्याय को सहन न करने वाले श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी बहुआयामी प्रतिभा-सम्पन्न व्यक्तित्व के मालिक थे। इनका जन्म माता गुजरी जी के उदर से पटना (बिहार) में २२ दिसंबर, १६६६ ई को हुआ। शास्त्र-विद्या के साथ शस्त्र-विद्या भी उस समय की आवश्यकता थी। बाल्य-काल से ही वे कुशाग्र बुद्धि-सम्पन्न थे।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने पाउंटा साहिब में यमुना नदी के किनारे लगभग तीन-चार वर्ष व्यतीत किए। शस्त्रधारी गुरुवर ने कवि-दरबार की प्रथा आरंभ की तथा सैनिक प्रशिक्षण भी जारी रखा। आपने अनेक विद्वानों को अपने आश्रय में रखकर पौराणिक गाथाओं को वीर-रस का पुट देकर साहित्य को नवीनता प्रदान की। इससे जनसाधारण को पराधीनता के विरुद्ध लड़ने की प्रेरणा मिली।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी द्वारा रचित 'जापु साहिब' में निर्गुण ईश्वर की उपासना, स्वरूप एवं स्तुति का अद्वितीय वर्णन मिलता है। इसमें छपै छंद, भुजंग प्रयात छंद, चाचरी छंद, चरपट छंद, रूआल छंद, मधुभार छंद, भगवती छंद, रसावल छंद, हरिबोलमना छंद और एक अछरी छंद का सर्वोत्तम प्रयोग मिलता है।

हरिबोलमना छंद एवं एक अछरी छंद उदाहरण-स्वरूप प्रस्तुत हैं :

हरिबोलमना छंद ॥ त्वप्रसादि ॥

करुणालय हैं- हे परमात्मा! तुम करुणा के सागर हो, सांसारिक प्राणियों पर रहम करने वाले हो।

अरि घालय हैं- तुम वैरियों का सर्वनाश करने वाले हो।

खल खंडन हैं- खल अर्थात् दुष्ट-जनों को समाप्त करने वाले हो।

महि मंडन हैं- महि अर्थात् पृथ्वी का श्रृंगार करने वाले हो, सारी पृथ्वी की शोभा आप से ही है।

जगतेस्वर हैं- हे परमात्मा! तुम सारे संसार के स्वामी हो।

परमेस्वर हैं- हे परमात्मा! तुम ही परम अर्थात् सबसे श्रेष्ठ, विशाल, सर्वोत्तम स्वामी हो।

कलि कारण हैं- 'कलि' शब्द के अनेक अर्थ हैं, जैसे बहेड़े का वृक्ष, शूरवीर विवाद, लड़ाई, झगड़ा, कलियुग, जिसमें अनीति के कारण पाप की अधिकता रहती है। क्लेश, दुख, युद्ध, लड़ाई, छंद में रमण का एक भेद। कलि से 'काल' 'समय' का अर्थ भी लिया जाता है। अत: परमात्मा ही उत्पत्ति और विलय का कारण है।

सरब उबारण हैं- हे परमात्मा! तुम सबका उद्धार करने वाले हो, इस संसार के आवागमन से उबारने वाले हो।

*आई-१०९, गली नं. : ५, मजीठिआ इन्कलेव, पटियाला-१४७००५, मो. : ९९१४१९०७२४

ध्रित के ध्रण हैं- हे प्रभु! तुमने ही इस धरती को धारण किया हुआ है।
जग के क्रण हैं- तुमने ही सारे जग को बनाया है। तुम ही जग के कारण हो।
मन मानिय हैं- तुम ही सब जीवों के हृदय में मानने योग्य हो अर्थात् सभी जीव तुम्हारी ही उपासना करते हैं।
जग जानिय हैं- तुम ही जगत में जानने योग्य हो अर्थात् सब तुम्हें ही जानने का यत्न करते हैं।
सरबं भर हैं- हे प्रभु! तुम ही सबका भरण-पोषण करने वाले हो।
सरबं कर हैं- हे प्रभु! तुम ही सब जीवों को उत्पन्न करने वाले हो।
सरब पासिय हैं- हे प्रभु! तुम सबके पास रहने वाले हो।
सरब नासिय हैं- (और) तुम ही सबका नाश करने वाले हो।
करुणाकर हैं- हे प्रभु! तुम करुणा के स्रोत हो, करुणा की खान हो।
बिस्वंभर हैं- विश्व का भरण-पोषण अर्थात् पालन-पोषण करने वाले हो।
सरबेस्वर हैं- सब जीवों के स्वामी हो।
जगतेस्वर हैं- तुम सारे संसार के स्वामी हो।
ब्रहमंडस हैं- तुम सारे ब्रह्मांड के मालिक हो।
खल खंडस हैं- दुष्टों के टुकड़े-टुकड़े करने वाले हो।
पर ते पर हैं- तुम परे से परे अर्थात् सबसे श्रेष्ठ, पहुंच से दूर हो।
करुणाकर हैं- दया के सागर-स्वरूप हो।
अजपाजप हैं- जप के वशीभूत नहीं हो, जप से तुम्हें वश में नहीं किया जा सकता।
अथपा थप हैं- मूर्ति के समान तुम्हें किसी सांचे में ढाल कर नहीं बनाया जा सकता।
अक्रिताक्रित हैं- हे प्रभु! तुम्हारी रचना किसी के द्वारा नहीं हुई है।
अंम्रिता म्रित हैं- हे प्रभु! तुम मृत्यु से रहित हो अर्थात् अमर हो।
अंम्रिता म्रित हैं- हे प्रभु! तुम अमृतों के भी अमृत हो।
करणा क्रित हैं- तुम रहम का दूसरा भाव हो अर्थात् दयालु व कृपालु हो।
अक्रिता क्रित हैं- तुम किसी रचनाकार अथवा चित्रकार की लेखनी का रूप नहीं हो।
धरणी ध्रित हैं- हे परमात्मा! तुम धरती के धारणकर्त्ता हो।
अम्रितेस्वर हैं- हे प्रभु! तुम 'अमित' अर्थात् परिमाण रहित हो, तुम्हें मापा नहीं जा सकता, तुम्हारी शक्ति अपरंपार है।
परमेस्वर हैं- हे प्रभु! तुम सबके स्वामी हो।
अक्रिता क्रित हैं- तुम्हारा कोई कारण नहीं है, परंतु तुम ही सबके कारण हो।
अम्रिता म्रित हैं- तुम मृत्यु से परे हो, अमर हो।
अजबा क्रित हैं- हे प्रभु! तुम्हारा स्वरूप आश्चर्यपूर्ण है।
अम्रिता अम्रित हैं- तुम सदैव अमृतत्व को प्राप्त करने वाले हो।
नर नाइक हैं- तुम 'नर' अर्थात् मनुष्य-सृष्टि के नायक हो।
खल घाइक हैं- दुश्मनों का नाश करने वाले आप ही हो।
बिस्वंभर हैं- सारे संसार का पालन करने वाले तुम ही हो।
करुणालय हैं- करुणा के सागर हो।
न्रिप नाइक हैं- राजाओं के भी राजा अर्थात् स्वामी, नायक, नेतृत्वकर्त्ता हो।
सरब पाइक हैं- सब जीवों की रक्षा करने वाले हो।
भव भंजन हैं- हे प्रभु! तुम ही भवसागर के आवागमन के चक्कर को मिटाने

वाले हो।
अरि गंजन हैं- हे प्रभु! तुम ही शत्रुओं पर विजय पाने में समर्थ हो।
रिपु तापन हैं- हे प्रभु! तुम ही दुश्मनों को तपाने वाले अर्थात् दंड देने वाले हो।
जपु जापन हैं- हे प्रभु! तुम्हारी कृपा से ही प्राणी तुम्हारा जप करने में समर्थ हो सकता है।
अकलं क्रित हैं- हे प्रभु! तुम कलंक रहित हो, दोष-रहित हो।
सरबा क्रित हैं- तुम सम्पूर्ण हो, तुम में कोई भी कमी नहीं है।
करता कर हैं- तुम ब्रह्मा के भी कर्त्ता हो, जो सारे संसार की रचना में सहायक माना जाता है, तुम उसकी भी उत्पत्ति के कारण हो।
हरता हरि हैं- संहार के कारण शिव को भी नष्ट करने वाले हो।
परमातम हैं- सबसे श्रेष्ठ आत्मा वाले हो।
सरबातम हैं- सब जीवों की आत्मा हो।
आतम बस हैं- आप स्वयं के वश में हो।
जस के जस हैं- जैसे तुम हो वैसा कोई दूसरा नहीं है अर्थात् तुम्हारी सादृश्यता रखने वाला और कोई नहीं है।

एक अछरी छंद

अजै- जिसे जीता न जा सके
अलै- जिसका लय न हो सके।
अभै- जिसे डर न हो।
अबै- अविनाशी।
अभू- उत्पत्ति रहित।
अजू- अचल।
अनास- नाश रहित।
अकास- सर्वव्यापी।
अगंज- अजय।
अभंज- न टूटने वाला।
अलक्ख- जो आंख का विषय नहीं।
अभक्ख- भाषण का विषय नहीं है।
अकाल- काल-रहित।
दिआल- कृपालु।
अलेख- लेखे से रहित, कर्मों के लेखे-जोखे से रहित, जिसकी महिमा लिखी नहीं जा सकती।
अभेख- वेश रहित।
अनाम- नाम रहित अर्थात् सृष्टि के कण-कण में उसका वास है, अत: संसार में अदृष्ट अथवा दृष्ट कुछ भी उसके बिना नहीं है।
अकाम- कामना रहित।
अगाह- जिसकी थाह नहीं पाई जा सकती।
अढाह- न गिरने वाला, अटल।
अनाथे- जिसका कोई स्वामी नहीं, क्योंकि वह सबका स्वामी है।
प्रमाथे- मंथन, विचार से दूर, उसका हरण नहीं किया जा सकता, नाश नहीं किया जा सकता।
अजोनी- जूनी रहित, उत्पत्ति रहित।
अमोनी- मौन रहित
न रागे- न राग-मोह है।
न रंगे- न रंग है।
न रूपे- न रूप है।
न रेखे- न रेख है।
अकरमं- कर्म रहित है।
अभरमं- भ्रम रहित है।
अगंजे- नाश रहित है।
अलेखे- परिमाण रहित है।

परमात्मा के निर्गुण स्वरूप को संतों ने अपनी बाणी में विस्तृत स्थान दिया है। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की बाणी 'जापु साहिब' से उदाहरणस्वरूप प्रस्तुत किए इन उपर्युक्त छंदों का एक-एक शब्द गागर में सागर के समान है। 'एक अछरी छंद' का एक शब्द ही स्वयं

में परिपूर्ण वाक्य है। इस छंद का अध्ययन करने के बाद वाक्य की परिभाषा पर पुन: विचार करना चाहिए, जिसमें कहा जाता है कि "दो या दो से अधिक शब्दों के समूह को वाक्य कहते हैं।" अत: एक शब्द को तो नहीं परंतु उसके अर्थ में जब अनेक अर्थों का समावेश हो तो यह विषय विचारणीय बन जाता है। शब्द की शक्ति, शब्द की महिमा अपरंपार है। उन शब्दों का युग-संदर्भ एवं व्यक्ति-संदर्भ में पुन:-पुन: अध्ययन, पठन, मनन, चिंतन एवं विचार-मंथन की आवश्यकता होती है। महान पुरुषों की बाणी ने समय-समय पर युगीन विचारधारा को परिवर्तित करके उचित दिशा-निर्देश दिया है। उनकी बाणी का प्रचार-प्रसार जन-जागरण में चेतना का स्रोत है, जिसका प्रवाह शाश्वत है।

आपका पत्र मिला

गुरु साहिबान एवं सिक्खों की कुर्बानियों को समझा जाए!

यूरोपियन देश में एक ईसा मसीह को सूली पर चढ़ा कर शहीद कर दिया जिसकी एक कुर्बानी से प्रेरित होकर कितने ही देश पूर्णत: ईसाई देश बन गये और आज भी वे अपने धर्म के विस्तार के लिये सत्त क्रियाशील हैं।

हमारे गुरु साहिबान ने तथा अनगिनत सिक्खों ने देश-धर्म की रक्षा के लिये शीश अर्पण किए, अपनी बोटी-बोटी नुचवाई एवं कुर्बानियां दीं, परंतु यह सोया देश अभी तक उन कुर्बानियों को पूरी तरह से महत्व नहीं दे सका।

मैं एक साधारण व्यक्ति 'गुरमति ज्ञान' पत्रिका का निरंतर अध्ययन करने पर गुरु साहिबान द्वारा प्रदत्त ज्ञान और मीरी-पीरी, पंगत-संगत, 'मानस की एक जात' के संकल्प को समझने में सक्षम हुआ हूं। मुझे आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि 'गुरमति ज्ञान' पत्रिका के माध्यम से हम समस्त भारत को एकजुट करने में अवश्य सफल होंगे। भारत ही नहीं अपितु समस्त विश्व में सिक्ख धर्म के आदर्श व गुरु साहिबान की उच्च शिक्षाएं सारी मानवता के लिये वरदान सिद्ध होंगी।

मुझे लगभग दो वर्ष 'गुरमति ज्ञान' पत्रिका का अध्ययन करते हुए हैं। गुरु-ज्ञान से प्रेरित होकर मैं स्वयं तो सदस्य बना साथ ही मैं और भी अधिक सदस्य बनाने में प्रयासरत हूं। यह मेरे पूर्व जन्म का ही सुफल है कि मैं 'गुरमति ज्ञान' पत्रिका से जुड़ा हूं। मेरी वाहिगुरु से अरदास है कि आपके इस प्रयास में ('गुरमति ज्ञान' प्रकाशित करने में) निरंतर आश्चर्यजनक प्रगति हो। गुरु-ज्ञान के हिंदी भाषा में प्रसारित होने के कारण यह पत्रिका मानवता को सही दिशा देने में लाभदायक सिद्ध होगी।

-हरि सिंह भारती, मेरठ, फोन : ०१२१-२७६६४६७

सभी गुरु साहिबान के जीवन-चरित्रों की प्रमाणित जानकारी

'गुरमति ज्ञान' पत्रिका में प्रकाशित सिक्ख गुरु साहिबान का जीवन-चरित्र पढ़ कर अच्छा लगा। सभी गुरु साहिबान की व्यवस्थित एवं प्रमाणित जानकारी के लिए संपादक मंडल बधाई का पात्र है। इस श्रृंखला के बाद पत्रिका के आधे भाग में धर्म-चर्चा और आधे भाग में वर्तमान संदर्भों में आज की समस्याएं एवं समाधान; नई पीढ़ी चरित्रवान कैसे हो, नई पीढ़ी को रचनात्मक सोच देने के उनके द्वारा बनाये चित्र, लेख, निबंध भी पत्रिका में प्रकाशित हों तो सर्वोत्तम रहेगा।

-सुरेंद्र कुमार अग्रवाल, हटा, दमोह।

श्री गुरु अंगद देव जी सम्बंधी स्रोत सूचना

*-डॉ. गुरमेल सिंघ**

पंजाबी स्रोत :

१. *जनम साखी श्री गुरू अंगद साहिब जी दी,* सरदूल सिंघ कवीशर, धर्म प्रचार कमेटी, शिरोमणि गु: प्र: कमेटी, श्री अमृतसर-१९९९
२. *गुरू अंगद देव जी,* डॉ. तारन सिंघ, पंजाबी यूनीवर्सिटी, पटियाला-१९७५
३. *कुदरती नूर,* प्रिं. सतिबीर सिंघ, न्यू बुक कंपनी, माई हीरां गेट, जलंधर-१९८१
४. *बैठि खडूरे जोति जगाई,* डॉ. गुरचरन सिंघ 'जीरा', भाई चतर सिंघ जीवन सिंघ, श्री अमृतसर-२००१
५. *श्री गुरू अंगद देव जी,* महिंदर सिंघ (जोश), सिक्ख मिशनरी कॉलेज, लुधियाना-२००३, गुरु साहिब की जीवन-गाथा तथा उनकी बाणी में से प्रकट होते सिद्धांतों के बारे में।
६. *गुरू अंगद देव : संगीत दरपण,* प्रो. करतार सिंघ, धर्म प्रचार कमेटी (शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी), श्री अमृतसर, जुलाई-२००४
७. *जीवन ब्रितांत श्री गुरू अंगद देव जी,* प्रो. साहिब सिंघ, सिंघ ब्रादर्स, श्री अमृतसर-१९६८
७. *गुर अंगद दीअउ निधानु,* ज्ञानी जोगिंदर सिंघ तलवाड़ा, सिंघ ब्रादर्स, श्री अमृतसर, मार्च-२००४
८. *बाणी गुरू अंगद देव जी : मूल पाठ, तुक-ततकरा, अनुक्रमणिका ते कोश,* (संपा.) अमर सिंघ तथा दविंदर सिंघ राज, 'नानक प्रकाश' पत्रिका, पंजाबी यूनीवर्सिटी, पटियाला, दिसंबर-१९९५

विशेष अंक :

९. *पंजाबी दुनीआं,* मार्च-अक्तूबर २००४, भाषा विभाग, पटियाला (४८)

अंग्रेजी स्रोत :

१. *Guru Angad : The Second Nanak,* M.L. Peace, Rattan Kaur, 25, Rithriyan Lane, P.O. Burti Guzan, Jallandhar City-1963
२. *The Liberated Soul : The Life and Bani of Guru Angad Dev,* Dr. Harbans Lal Agnihotri and Chand R. Agnihotri, Gopal Prakashan, 732/5, Bank Colony, Hisar-2002
३. *Spirituo-Ethical Philosophy of Guru Angad Dev,* Dr. Jodh Singh, Punjabi University, Patiala-2004
४. *Prophet of Devotion : Life and Teachings of Sri Guru Angad Dev,* Dr. Jaswant Singh Neki, Satric Media Pvt. Ltd., City Centre, Sri Amritsar-2004

Special Edition :

५. *Sikh Courier,* Autumn-Winter-1987
६. *Journal of Sikh Studies,* Vol. XXVI, Nos. 1-2, 2002, Guru Nanak Dev University, Sri Amritsar (16)

**श्री गुरु ग्रंथ साहिब स्टडीज डिपार्टमेंट, पंजाबी यूनीवर्सिटी, पटियाला-१४७००२, मो. : ९०४१०४६३७२*

गुरुद्वारा : संस्था के रूप में

*-प्रो बलविंदर सिंघ, लुधियाना**

श्री गुरु नानक देव जी के समय एवं उनसे कुछ समय बाद भी जहां 'संगत' तथा सत्य की विचार करने वाले सिक्ख गुरु के पास बैठकर तत्ववेत्ता एवं ज्ञाता बनते थे उस पवित्र स्थान को 'धरमसाल' (धर्मशाला) कहते थे। गुरु नानक पातशाह ने गुरसिक्खी की मूल बाणी 'जपु' के शिखर पर पहुंच कर 'धरमसाल' की बड़ी गहरी, गंभीर तथा स्पष्ट व्याख्या की है। इस बाणी के अनुसार धरमसाल वो है जहां सगुण एवं निर्गुण साथ-साथ चलते हैं। दुनिया के अन्य मतों वाले मतवान या तो वाहिगुरु के निर्गुण स्वरूप की प्रशंसा करते हैं तथा दुनिया त्याग देने की ताकीद करते हैं या उसके सगुण स्वरूप को आगे रखकर अंधाधुंध ऐसे भागते हैं कि उनको अपनी होश ही नहीं रहती। वे मदमस्त हो, रसों-कसों में फंसकर, स्वादों में खचित होकर, जीवन को व्यर्थ गंवा कर चले जाते हैं। गुरु नानक साहिब निर्गुण एवं सगुण स्वरूप को इकट्ठा देखते हैं तथा इकट्ठा रखते हैं। गुरमति द्वारा बताए इस संतुलन को जब जीवन में ढाल लिया जाता है तो सारी धरती ही 'धरमसाल' बन जाती है।

'धरमसाल' वो जगह है जहां निर्गुण तथा सगुण का खूबसूरत संगम होता है। रात, ऋतु, थित, वार इनका कोई स्थूल स्वरूप नहीं। इनको पकड़ा नहीं जा सकता, इनको तो केवल महसूस किया जा सकता है। यह वाहिगुरु का एक बहुत बड़ा गुण है। पवन, पानी, अग्नि व पाताल इनको हासिल भी किया जा सकता तथा इनका आनंद भी लिया जा सकता है। ये सब रचनाएं वाहिगुरु का सगुण स्वरूप हैं। इसकी समझ 'धरमसाल' अथवा 'गुरुद्वारे' से होती है। जब मनुष्य दुनिया भर के पाखंडों से हटकर, निकम्मे भ्रमों तथा कर्मों को त्याग कर, वाहिगुरु के सुगण स्वरूप का आनंद लेता हुआ, निर्गुण की आराधना कर, मन को गुरु की कृपा द्वारा साध कर 'गुरु' तथा 'गुरुद्वारे' द्वारा दी हुई जीवन-जाच को जीयेगा तो वह मनुष्य गुरसिक्ख बन जायेगा तथा उसका घर 'धरमसाल' कहलायेगा। भाई गुरदास जी के कथन के अनुसार गुरु नानक साहिब के चरणों के स्पर्श से हर घर 'धरमसाल' का रुतबा प्राप्त कर गया और उसके अंदर किरत के साथ-साथ, कर्ता की कीर्ति की धुनें भी सुनाई देने लगीं। ऐसी है 'धरमसाल', यह है कार्य 'गुरुद्वारे' का और यही संकल्प है गुरुद्वारे सम्बंधी महान गुरु, गुरु नानक साहिब का।

'गुरुद्वारा' अपने आप में महान पवित्रता समोये बैठा है। 'गुरुद्वारे' का क्या भाव है, क्या भावना है, यह विचारने तथा समझने की जरूरत है। 'गुरुद्वारे' का अर्थ है 'गुरु-घर', 'गुरु का दुआरा (द्वारा)'। इसको गुरु जी का दरवाजा या किवाड़ कह सकते हैं अर्थात् वह घर जिसमें गुरु पातशाह निवास करते हैं। श्री गुरु नानक देव जी के मुताबिक 'गुरु का द्वारा' अर्थात् 'गुरुद्वारा' वह स्थान है जहां से गुरमति की समझ आती है। हम इस दुनिया में आये हैं। हमें यह शरीर रूपी पात्र प्राप्त हुआ है। इसको इस प्रकार से तराशना है कि इस दुनिया

के मालिक व समस्त सृष्टि के सृजनहार को अच्छा लगने लग जाये। इस पात्र का भीतरी मन दौड़ता-भागता है। यह पल भर भी टिकता नहीं अर्थात् टिकने नहीं देता। इस अफरा-तफरी में यह अति मलीन हो चुका है। शरीरों को केवल धोने, श्रृंगारने एवं संवारने से ही हम वाहिगुरु को अच्छे नहीं लगेंगे, आवश्यकता है कि हमारे तथा वाहिगुरु के दरमियान झूठ की कतार टूटे और हम ऐसे बोल बोलें कि पिता-वाहिगुरु हमें स्वयं प्यार करने लग जाये। 'गुरु का द्वारा' अर्थात् 'गुरुद्वारा' वो स्थान है जहां से आदर्श जीवन-जाच की सूझ पड़ती है:

भांडा हछा सोइ जो तिसु भावसी ॥
भांडा अति मलीणु धोता हछा न होइसी ॥
गुरू दुआरै होइ सोझी पाइसी ॥
एतु दुआरै धोइ हछा होइसी ॥
मैले हछे का वीचारु आपि वरताइसी ॥
मतु को जाणै जाइ अगै पाइसी ॥ (पन्ना ७३०)

श्री गुरु नानक देव जी के इस शबद से यह दिशा मिलती है कि गुरुद्वारे से गुरु द्वारा दिया हुआ ज्ञान मिलता है ताकि मनुष्य तरह-तरह के भ्रमों में ही न पड़ा रहे। गुरु की दी गई समझ से इस जन्म को किस प्रकार संवारा जा सकता है। लिया हुआ अमोलक जन्म निष्फल न जाये क्योंकि हमने तो आगा संवारने के लिए यह जन्म पाया है। गुरमति का हुक्म है :

आगाहा कू त्राघि पिछा फेरि न मुहडड़ा ॥
नानक सिझि इवेहा वार बहुड़ि न होवी जनमड़ा ॥ (पन्ना १०९६)

अगर इस बार मिली ज़िंदगी भली-भांति संवार ली जाये तो तीनों लोकों में अपने-आप डंका बजेगा। पिछले जन्मों का चक्र छोड़कर वर्तमान में विचरन करना है, उत्साह से आगे चलना है, पीछे नहीं मुड़ना। इस प्रकार अगर यह जन्म संवार लिया जाये तो पुन: जन्म नहीं होगा।

सभी दुनियादार जीव तथा मनुष्य अपने शरीर के भरण-पोषण में लगे हुए हैं। नौ द्वार प्रकट हैं। इनकी भूख को तृप्त करने में ही ज़िंदगी व्यतीत हो जाती है। दसवें द्वार का कैसे पता चले? वो द्वार सूक्ष्म है, गुप्त है, उसका पता तो केवल गुरु से तथा गुरुद्वारे के साथ सुरति जोड़ने पर ही लगता है :

--हरि जीउ गुफा अंदरि रखि कै वाजा पवणु वजाइआ ॥
वजाइआ वाजा पउण नउ दुआरे परगटु कीए दसवा गुपतु रखाइआ ॥
गुरदुआरै लाइ भावनी इकना दसवा दुआरु दिखाइआ ॥ (पन्ना ९२२)
--नउ दरवाजे दसवा दुआरु ॥
बुझु रे गिआनी एहु बीचारु ॥
कथता बकता सुनता सोई ॥
आपु बीचारे सु गिआनी होई ॥ (पन्ना १५२)

जो इस द्वार को जान ले वही ज्ञानी है। ज्ञान का दाता गुरु है। सूझ प्रदान-कर्त्ता गुरु है। गुरुद्वारा इसी की सूझ करायेगा तथा गुरसिक्ख गुरु से ज्ञान प्राप्त करके ज्ञानी बन जायेगा, क्योंकि उसने यह पहेली जान ली है एवं गुरु-कृपा द्वारा अपने आप को पहचान लिया है।

हम इस जीवन में देखते हैं कि जब कोई मनुष्य अपने किसी मित्र के साथ ज्यादा घुल-मिल जाये, हर दम उसका ही संग चाहे तो कहते हैं, "तू तो उसके साथ ऐसे रहता है जैसे उसके साथ ब्याहा हुआ है।" भाव यह कि जिसका साथ अच्छा लगे, जिसका संग मन को भाये, उस सम्बंधी ही हम ऐसा कहते हैं। यही हाल पुरुष-औरत के विवाहित सम्बंधों के बारे में है। विवाहित दंपत्ति विवाह के उपरांत इकट्ठे एक जगह पर रहते हैं। गुरु नानक साहिब इस

सम्बंध में बड़ी खूबसूरत बात कहते हैं :
गुरू दुआरै हमरा वीआहु जि होआ जां सहु मिलिआ तां जानिआ ॥
तिहु लोका महि सबदु रविआ है आपु गइआ मनु मानिआ ॥ (पन्ना ३५१)

इसमें गुरदेव कहते हैं--"मैं गुरुद्वारे के साथ जुड़ गया हूं। गुरु की मति का प्रकाश हृदय में हो गया है। उसके साथ मेरा आत्मिक मिलन हो गया है। उसके साथ मैं ब्याहा गया हूं तथा गुरु-कृपा द्वारा मुझे अकाल पुरख सम्बंधी इस तरह प्रकाश हुआ है कि मेरा मन सदैव खुशी में है। ऐ दुनिया के लोगो! वह शब्द अनाहद मेरे अंदर रच गया है, जिससे मेरा अहं दूर हो गया है।" बस, समझने की बात यह है कि यदि जगत-पिता गुरु नानक साहिब का मन गुरुद्वारे के साथ ब्याहे जाने या जुड़ जाने से अनहद खुशियां प्राप्त कर सकता है तो फिर यदि हम जुड़ जायें तो हम भी सदीवी खुशियां प्राप्त कर सकते हैं, हमारा अहं खत्म हो जायेगा। सांप्रदायिकता, भेदभाव, मनमुटाव, दुश्मनियां तथा बंटने का नाश होगा; प्रभु से एक हो जायेंगे।

गुरुद्वारा : एक संस्था : 'गुरुद्वारा' ईंट, मिट्टी, चूना, सीमेंट, लोहा, लकड़ी, संगमरमर, ग्रेनाइट या अन्य कीमती नक्काशियों, कला-कृतियों से नहीं बनता। ये सब वस्तुएं तो होटलों, क्लबों, बहुमंजिली इमारतों, नाच-घरों, शराबखानों तथा मकबरों में भी लगी हुई हैं, परंतु वे ज़िंदगी नहीं दे रहे, अपितु वे तो ज़िंदगी से बहुत दूर हैं। बात तो है आत्म और परमात्म की। गुरुद्वारे की खूबसूरती तथा स्तुति आध्यात्मिक वस्तुओं के साथ है। जब ये स्रोत गुरुद्वारे में से निकल कर अतृप्त ज़िंदगी को शांति प्रदान करते हैं तो सब वस्तुएं सुंदर तथा शोभनीय लगने लग जाती हैं।

गुरुद्वारे का सबसे पहला तथा मुख्य अंग है 'संगत'। *"सतसंगति कैसी जाणीऐ ॥"* का उत्तर है : *"जिथै एको नामु वखाणीऐ ॥"* यही महान कार्य गुरुद्वारे का है। यहां पर साधसंगत एकत्र होती है। संगत की इकत्रता साध-रूप होती है। गुरु के सम्मुख एकत्र होकर सुरति लगती है तथा दुविधा दूर होती है; मन मिलते हैं, सच्चे शबद के स्वभाव का ज्ञान प्राप्त होता है। कथा-कीर्तन एवं शबद-बाणी की व्याख्या हउमै का पर्दा उतार कर प्रतापी पुरख, सतिपुरख, आनंददायक अकाल पुरख के साथ मिला देती है:
साध संगि जउ तुमहि मिलाइओ तउ सुणी तुमारी बाणी ॥
अनदु भइआ पेखत ही नानक प्रताप पुरख निरबाणी ॥ (पन्ना ६१४)

गुरुद्वारे का दूसरा महान अंग है 'पंगत'। पंगत में सब गुरु के प्यारे ऊंच-नीच, अमीर-गरीब, जात-पात के भेदभाव के बिना इकट्ठे बैठकर अन्न-पानी ग्रहण करते हैं। सदियों से इन भेदभावों के कारण मनुष्य जाति बंटी हुई है। इसी बांट से खंड-खंड हुई मानवता कमजोर और दुर्बल होकर भटकती है।

गुरु पातशाह ने गुरुद्वारों के साथ लंगर अथवा पंगत स्थापित कर मनुष्य की जिंदगी के सफर को आसान कर दिया, भ्रम मिटा दिया, फोकट कर्म खत्म कर दिये। दो प्रकार के लंगर का जिक्र है--'शबद लंगर' और 'लंगर दौलत'। 'रामकली दी वार' में भाई सत्ता जी-भाई बलवंड जी ने इसका विस्तार से उल्लेख किया है।

तीसरा अंग--हर गुरुद्वारे के साथ एक 'निशान साहिब' लगा होता है। यह भली प्रकार परखने की जरूरत है कि निशान साहिब का भाव क्या है? प्राचीन पोथियों तथा लिखितों में 'जपु जी साहिब' की जगह पर 'जपु नीसाणु' लिखा मिलता है। इसका भाव है कि 'जपु' अब

जंगलों, गुफाओं में छुप कर नहीं किया जायेगा। 'जपु' वाले को किसका डर है? 'जपु' तो निर्भय करता है। 'नीसाणु' का शब्दी अर्थ है--धौंसा, नगाड़ा। यह निडरता तथा अभय राज्य की निशानी है। जहां पर यह लगा है वहां भय कोई नहीं, डर कोई नहीं। जो डर या भय संयम या अनुशासनता का था, वह अकाल पुरख की चाकरी से खत्म हो गया और हमारी दशा क्या बनी कि हम स्वयं अपने साहिब के अंग-संग होने के कारण उसका अंग ही बन गये। यह पद प्राप्त हुआ खसम (प्रभु) की चाकरी के कारण :

एह किनेही चाकरी जितु भउ खसम न जाइ ॥
नानक सेवकु काढीऐ जि सेती खसम समाइ ॥
(पन्ना ४७५)

गुरुद्वारा साहिब में झूलता निशान साहिब इस बात का प्रतीक है कि यहां पर निर्भयता है, अभय-दान है। यहां पर गुरु को मानने वाले पवित्र आत्माओं के मालिक इकट्ठे होते हैं। यहां पर आने वालों को बराबरी तथा एकता का वातावरण मिलेगा और सतिसंग प्राप्त होगा; शरीर को पालने के लिए एक जैसा, एक समान अटूट लंगर मिलेगा। यहां पर आने वालों का मन नीचा तथा मति ऊंची होगी। इसके साथ जुड़ने वालों की आबरू महफूज होगी। वे सम्मान पायेंगे--यहां भी और साईं के दरबार में भी।

गुरुद्वारे का चौथा मुख्य अंग है--'शफाखाना'। इस पवित्र परंपरा का विकास गुरु नानक साहिब से ही हो गया था। गुरु नानक साहिब ने कुष्ठ रोग से पीड़ित एक कुष्ठ रोगी का उपचार अपने पवित्र हाथों से करके उसको आरोग्य किया। इस महान ऐतिहासिक घटना के बाद सभी गुरु साहिबान ने गुरुद्वारों के साथ 'शफाखाना' बनाना अनिवार्य कर दिया। श्री गुरु हरिराय साहिब द्वारा कीरतपुर साहिब में कायम किया 'शफाखाना' इस परंपरा का शिखर है। उस शफाखाने में नायाब दवाइयां, जो शाही दवाखाने में भी नहीं थीं, वे भी उपलब्ध थीं तथा ये बिना किसी भेदभाव के जरूरतमंदों को दी जाती थीं। गुरुद्वारा जहां रोग-रहित बलशाली ऋष्ट-पुष्ट आत्मा तथा मन का निर्माण करता है वहीं शरीर को भी ऐसा ही रखता है। शरीर ही तो उस बलवान, पवित्र आत्मा का वाहक है। इसको ऐसे ही संवार कर रखना है, जिस प्रकार सवार अपने घोड़े को और आधुनिक मनुष्य अपनी कार या गाड़ी को रखता है।

दवाखाने तथा शफाखाने में एक विशेष अंतर है। दवाखाने में वैद्य, हकीम, डाक्टर को अपनी दवाई तथा हिकमत पर गर्व होता है। गुरमति में चतुराइयों तथा हिकमतों की कोई जगह नहीं। इंसान को लाखों हिकमतें क्यों न आती हों, इनकी जरा भी मान्यता उस परमात्मा के दर पर नहीं। दवाई शफाखाने में भी दी जाती है परंतु परवरदिगार पर भरोसा रख कर। शफाखाना चलाने वाले के मन में यह प्रबल इच्छा होती है कि रोगी ठीक हो; कर्त्ता (प्रभु) मुझे कारण बनाकर दवाई दिलवा रहा है। शफा तो उसके हाथ में है। वह अपनी लाज स्वयं पालता है तथा रोगी अच्छा-भला हो जाता है। दवाखाने वाला व्यापार करता है किंतु शफाखाने वाला प्यार। दवाखाने वाले की नज़र रोगी की जेब पर होती है, उसकी दर्द का एहसास उसको नहीं होता या बहुत ही कम होता है। शफाखाने वाले की नज़र रोगी की जेब के नीचे धड़कते दिल की अंदरूनी पीड़ा में है। वह उसका दर्द महसूस करता है। इस तरह के शफाखाने गुरू साहिबान गुरुद्वारों के साथ बनाते थे तथा हमसे भी इसी तरह चाहते हैं।

आधुनिक समय में जब मेडिकल विज्ञान तरक्की की चढ़ाइयां चढ़ कर शिखर पर पहुंच रही है तब गुरुद्वारों के प्रबंधक, सेवादार तथा कमेटियां अच्छी एवं आधुनिक डाक्टरी सेवाएं भी प्रदान करें। ऐसा करने से स्वाभाविक ही सिक्खी का प्रचार होगा तथा लोगों में श्री गुरु ग्रंथ साहिब एवं सिक्खी के लिए परिपक्व श्रद्धा उत्पन्न होगी। गुरुद्वारा साहिबान अपने वित्त के अनुसार शफ़ाखाने कायम करें, महंगी दवाइयां बिना लाभ-हानि के आधार पर लोगों तक पहुंचाएं। हर गुरुद्वारा कमेटी मेडिकल कालेज, बड़े या छोटे अस्पताल तो खोल नहीं सकती किंतु पैथोलोजिकल लैबोरेट्रीज खोल कर, रोग की पहचान करके, सही रिपोर्ट देकर रोगियों को अनिश्चितता में से निकाल कर उनकी परेशानी तो कम कर ही सकती है।

गुरुद्वारे का पांचवां अंग है--'शिक्षा'। गुरुद्वारा साहिब के स्वरूप को इस प्रकार देखा जाये कि गुरुद्वारे की इमारत या हाल एक स्कूल या पाठशाला है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब के अंदर दस गुरु साहिबान के रूप प्रकाश-दाता तथा ज्ञान-दाता अध्यात्म के रास्ते पर अध्यापक-स्वरूप हैं। सिक्ख संगत संतों की जमात है, जो गुरबाणी के पाठ रूपी शबद पढ़कर, अपना अज्ञान-अंधेरा दूर कर ज्ञानवान बनती है। तात्पर्य यह हुआ कि गुरुद्वारे का तो काम ही शिक्षा देना है। पिछले समय में गुरुद्वारे के साथ गुरमुखी सिखाने का कार्य किया जाता था। इतिहास सिखाने के लिए 'श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ' की कथा एक परंपरा ही बन चुकी थी। इसके अलावा संगीत विद्यालय कीर्तन की शिक्षा दिया करते थे। ऐसी परंपराओं को पुन: अधिकाधिक उत्साह के साथ गतिशील करना चाहिए। धर्म की हानि होती देखकर उस युग में गुरु नानक साहिब ने कहा था:

हउ भालि विकुंनी होई ॥
आधेरै राहु न कोई ॥
विचि हउमै करि दुखु रोई ॥
कहु नानक किनि बिधि गति होई ॥ (पन्ना १४५)

गति की विधि गुरु नानक साहिब खुद ही बता रहे हैं। गति संभव है, गुरु, गुरमति, गुरबाणी तथा श्री गुरु ग्रंथ साहिब द्वारा, जिसका द्वार है 'गुरुद्वारा'। गुरु के प्रकाश में अति आवश्यक है कि गुरुद्वारा साहिबान के साथ गुरमति विद्यालय, संगीत विद्यालय, शिक्षण संस्थायें, स्कूल, कालेज, व्यवसायिक कॉलेज आदि वित्त के अनुसार खोलकर शिक्षा के माध्यम के साथ गुरसिक्ख, विद्वान, ज्ञानवान तथा वैज्ञानिक पैदा किए जाएं ताकि गुरुद्वारा साहिबान का वह कार्य जो गुरु साहिब की पवित्र सोचनी ने निश्चित किया था, साकार हो जाये। गुरुद्वारा एक शक्तिशाली संस्था है जो जीवनदाती तथा सुखदायी है।

कोई भी शहर, बस्ती अथवा मुहल्ला या गांव 'शरीर' के समान है तथा उसमें स्थापित गुरुद्वारा उस आबादी की 'आत्मा' के समान है। जैसे आत्मा के अस्तित्व से शरीर का जीवन है बिलकुल उसी तरह गुरुद्वारे के अस्तित्व से शहर, बस्ती या गांव का जीवन है। आज हरेक सिक्ख को यह अरदास करने की जरूरत है कि हे मालिक परमात्मा, ऐसा कभी न हो कि हम गुरुद्वारे से टूट या बिछुड़ जायें। गुरुद्वारे से बिछुड़ कर उजड़ जाएंगे।

श्री गुरु अरजन देव जी द्वारा स्थापित श्री हरिमंदर साहिब (श्री अमृतसर) में गुरदेव ने पहली बार श्री आदि (गुरु) ग्रंथ साहिब का प्रकाश किया। श्री हरिमंदर साहिब पवित्र ताल में कमल की तरह शोभायमान है। गुरसिक्खों ने जीवन में भी कमल की भांति निर्लेप तथा निरालम रहना है।

चलें दिव्यता की ओर

*-डॉ. नरेश**

ज्ञान ही दिव्यता है, जिसे प्रकृति ने प्रत्येक प्राणी को दे रखा है। एक व्यक्ति 'पढ़ा-लिखा' होता है, एक 'पढ़ा-गुणा' होता है। 'पढ़ा-लिखा' व्यक्ति लिखना-पढ़ना जानता है, इससे आगे वह नहीं बढ़ता, लेकिन 'पढ़ा-गुणा' अपने पढ़े हुए को, अपनी जानकारी को, अपने विवेक के साथ गुणा कर लेता है तो जानकारी ज्ञान में परिवर्तित हो जाती है। अत: केवल भगवद्-भजन किए जाने से या केवल उसका नाम जपते रहने से ब्रह्म-ज्ञान की प्राप्ति संभव नहीं है, इसके लिए चिंतन-मनन परमावश्यक है। चिंतन-मनन करना ही जानकारी को विवेक के साथ गुणा करना है।

गुरबाणी कहती है : *"ब्रहम गिआनी परउपकार उमाहा ॥"* ब्रह्मज्ञानी को परोपकार का उत्साह होता है। कारण यह कि उसका चिंतन-मनन उसे बताता है कि सृष्टि के प्रत्येक प्राणी के साथ उसका एक सम्बंध है, एक रिश्ता है, क्योंकि उसके भीतर भी वही दिव्य-अंश अर्थात् आत्मा मौजूद है जो मेरे अंदर मौजूद है। इस नाते से सृष्टि का प्रत्येक प्राणी मेरा सगा है। अपनों की भलाई के लिए, अपनों के कल्याणार्थ, अपनों की सहायता के लिए कुछ भी करना मानव-प्रकृति है। ब्रह्मज्ञान हो जाने पर परोपकार उसके लिए दिखावा-मात्र या कर्मकांड भी नहीं रहता। किसी दूसरे के लिए कुछ करने का उत्साह उसे परमार्थ में प्रवृत्त करता है तथा परमार्थ का प्रत्येक प्रयास उसे परम-आनंद देता है। यही उसके 'उमाह' का प्रेरक तत्व है।

ज्ञान किसी को दिया नहीं जा सकता, केवल शिक्षा या विद्या दी जा सकती है। विद्या ज्ञान तब बनती है जब स्वानुभूत हो जाती है। किसी के द्वारा ब्रह्म विषय में कुछ भी बताया जाए, बताने वाला अपना ब्रह्म विषयक ज्ञान ही क्यों न बता दे, यह देने वाले का ज्ञान ही रहेगा, लेने वाले का नहीं। लेने वाले का ज्ञान तब बनेगा जब वह इसका अनुभव स्वयं कर लेगा। गुरु केवल मार्गदर्शन करता है, रास्ते पर चलने की विधि बताता है, लेकिन चलना शिष्य को स्वयं ही होता है। शिष्य जब पूरी निष्ठा के साथ, पूर्ण समर्पण-भाव के साथ, ब्रह्म-मार्ग का पथिक बनता है तो उसका मस्तिष्क उसके मन या विवेक के साथ उलझना छोड़ देता है। स्वानुभव गुरु द्वारा प्रदत्त ज्ञान का सत्यापन करता है, तब शिष्य ज्ञानी बनता है। गुरबाणी ब्रह्मज्ञानी को परिभाषित करती है कि:

मनि साचा मुखि साचा सोइ ॥
अवरु न पेखै एकसु बिनु कोइ ॥
नानक इह लछण ब्रहम गिआनी होइ ॥

(पन्ना २७२)

जिसके मन में केवल सत्य बसता है, जिसकी बाणी सदा सत्य बोलती है, जो ब्रह्म (प्रभु) के अतिरिक्त किसी अन्य को नहीं जानता, वही ब्रह्मज्ञानी है।

सत्य क्या है? जो ब्रह्मज्ञानी के हृदय में

(शेष पृष्ठ ६० पर)

***१६९, सेक्टर-१७, पंचकूला-१३४१०९*

सिक्खों तथा सिक्खी का सम्मान कैसे कायम होगा?

*-स. गुरदीप सिंघ खालसा**

आज हिंदू धर्म वाले सिक्ख इतिहास से अंजान हैं। उनको यही नहीं पता कि सिक्ख क्यों बनाये हैं। अब लोग सिक्ख का मजाक बनाते हैं। यदि कोई सिक्ख अमृत-पान किया हुआ देखते हैं तो उससे पूछते हैं कि कृपाण क्यों पहनी हुई है? आप दसतार क्यों बांधते हो? क्या यह अनिवार्य है? यह सिक्ख धर्म किसने बनाया है? यह क्यों बना है? इसलिए मैं चाहता हूं कि सिक्ख धर्म के बारे में सबको पता चले, सब यह जानें कि सिक्खी क्या है और सभी सिक्खी का सम्मान करें। लोगों को पता ही नहीं कि सिक्खी क्या है! इसी लिए वे सिक्खों का मजाक उड़ाते हैं। 'सरदारों के बारह बज गए' कहा जाता है परंतु उनको पता नहीं कि ये लोग तो बारह बजे आक्रमण करके हमको ही मुक्त कराते थे, हमारी बहुओं-बेटियों को अफगान आक्रमणकारियों के चंगुल से छुड़ाते थे और उनको सम्मान सहित उनके घरों तक भी पहुंचाने की जिम्मेवारी स्वयं पर लेते थे!

आज कई जगह सिक्खों को यह भी कहा जा रहा है कि १९८४ में कैसे मारा था, तुमको याद है न? यहां तक कि परमात्मा की बख्शी हुई दात केशों को सही प्रकार से संभालने जैसे प्रशंसनीय काम के बदले में भी उलटा ही बोला जाता है और केशों के जूड़े को घृणा-भाव के साथ देखा जाता है। गुरु के नाम-लेवा सिक्खों को अज्ञानी लोग 'नकली' कह कर अपनी अज्ञानता का प्रकटावा कर रहे हैं। यह सब इसलिए हो रहा है कि उनको सिक्ख इतिहास के बारे में पता ही नहीं है। इसी लिए मैं यह चाहता हूं कि सारा हिंदोस्तान जाने, बच्चा-बच्चा जाने कि सिक्खी क्या है, सिक्ख क्या हैं, सिक्ख क्यों बनाये गए हैं! जब लोगों को पता ही नहीं कि सिक्खी क्या है, सिक्ख क्या हैं तो वे सिक्खी की क्या स्तुति करेंगे, सिक्खों की क्या इज्जत करेंगे?

आज के जमाने में सिक्ख बहुत कम दिखते हैं। कई गांवों में सिक्ख हैं ही नहीं। इसलिए सिक्ख पंथ के प्रचारकों को भी पूर्ण समर्पण के साथ सिक्खी का प्रचार करना चाहिए। उनको मात्र वेतन से ही सरोकार रखना कदापि उचित नहीं। वैसे गुरु का हरेक सिक्ख अपने आप में सिक्ख प्रचारक भी होना चाहिए। उसका जीवन दूसरों के लिए मिसाल बनने वाला होना चाहिए। फिर सिक्खी का, सिक्खों का कोई मजाक न उड़ा पायेगा।

एक सिक्ख को भी दूसरे सिक्ख का ख्याल रखना चाहिए, गरीबी की हालत देखकर उसकी सहायता करनी चाहिए, उसे ऊंचा उठाना चाहिए। मैं चाहता हूं कि पहली कक्षा से बारहवीं कक्षा तक सिक्ख इतिहास के बारे में एक पाठ आये। इससे बच्चों के दिल में सिक्खों के प्रति प्यार तो रहेगा और वे लोग सिक्खों की इज्जत भी करेंगे। वाहिगुरु चाहे तो वे बच्चे बड़े होकर खुद सिक्ख बनकर सिक्खी का नाम रौशन करेंगे। इससे हरेक आने वाली पीढ़ी सिक्खी का सम्मान करेगी, उसकी इज्जत करेगी।

**मकान नं: ४६०, रामानंद नगर, इंदौर (मध्य प्रदेश) मो : ९१६५२११५५४*

बीड़ी-सिगरेट व तंबाकू से हानि

*-श्रीमती शैल वर्मा**

धूम्रपान करने एवं तंबाकू खाने वाला व्यक्ति इस लत को आसानी से छोड़ना नहीं चाहता लेकिन जब जान पर आ पड़ती है तो छोड़ना पड़ता है। जब कोई व्यक्ति सिगरेट अथवा बीड़ी पीता है तो उसमें कुछ ऐसे पदार्थ होते हैं जो उसके शरीर में प्रवेश करने लगते हैं। इन वस्तुओं को गैसों और अन्य पदार्थों में बांटा गया है। बीड़ी और सिगरेट के अंदर चौबीस प्रकार की गैसें होती हैं जिनमें सबसे खतरनाक गैस होती है--कार्बन मोनोआक्साइड। इस गैस का संबंध खून द्वारा आक्सीजन ले जाने वाले होमोग्लोबिन से होता है। इस तरह शरीर के अंदर आक्सीजन पहुंचने में बाधाएं उत्पन्न होने लगती हैं। कार्बन मोनोआक्साइड आक्सीजन को कार्बन डाईआक्साइड में बदल देती है जो शरीर के लिये हानिकारक होती है। आक्सीजन हमारे शरीर के लिये ऊर्जा पैदा करने का साधन होती है। इसकी कमी होने से शरीर की ऊर्जा कम होने लगती है।

सिगरेट गले में खराश उत्पन्न करती है; हार्ट और फेफड़े को हानि पहुंचाती है; सांस लेने में कठिनाई होती है; दमे की शिकायत तथा हार्ट-अटैक का खतरा बना रहता है। सिगरेट में निकोटीन नामक पदार्थ होता है। इसमें जो टार पाया जाता है उसके अंदर कण इतने छोटे होते हैं कि एक घन सेंटीमीटर टार में पांच सौ करोड़ कण होते हैं, जो इसके अंदर कैंसर की जड़ जमा देते हैं। सिगरेट का सेवन करने वाले व्यक्ति के शरीर में निकोटीन का स्तर बढ़ने लगता है और व्यक्ति कहीं का नहीं रह जाता।

तंबाकू का सेवन मौत को दावत देता है। तंबाकू का हर रूप जानलेवा होता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के आंकड़े बताते हैं कि पूरी दुनिया में हर साल पचास लाख से भी अधिक लोगों की मौत तंबाकू के सेवन से होती है। चौंकाने वाली बात यह है कि इसमें से लगभग एक चौथाई से अधिक लोग भारत के होते हैं। इतने बड़े खतरे के बावजूद इसके प्रयोग में कोई कमी नहीं है। लोग खैनी के रूप में, पान के रूप में और गुटखे के रूप में तंबाकू का प्रयोग करते हैं। बीड़ी-सिगरेट के शौकीन गांव से लेकर शहर तक विद्यमान हैं। चिकित्सकों का कहना है कि यदि तंबाकू खाने वाला दृढ़ संकल्प लेकर इसे छोड़ना चाहे तो अवश्य छोड़ सकता है, बस आत्म-संयम की आवश्यकता है। वरिष्ठ कैंसर रोग विशेषज्ञ डॉ. ए. के. चतुर्वेदी बताते हैं कि तंबाकू में चार हजार तरह के रसायन पाये जाते हैं। इनमें से सौ के करीब सेहत के लिये हानिकारक हैं। इनमें से ६३ तो कैंसर कारक हैं। तंबाकू खाने से होने वाले सबम्यूकस, फाइब्रोसिस से व्यक्ति के गाल व मुख के हिस्सों की चमड़ी मोटी व कड़ी हो जाती है। रोग बढ़ने पर मुंह बंद हो जाता है, ब्रश करना भी मुश्किल हो जाता है तथा माउथ कैंसर होने में

(शेष पृष्ठ ६० पर)

४८/८, सागर सदन, गांधी नगर, पुलिस चौकी के पीछे, बस्ती-२७२००१ (उ. प्र.), फोन : ०५५४२-२८७५८१

पदार्थवादी वृत्ति भारी क्यों?

*-श्री प्रशांत अग्रवाल**

श्री गुरु नानक देव जी की बगदाद-यात्रा के दौरान वहां का राजा उनसे मिलने आया। वह जनता पर बड़ा अत्याचार करता था। कुशल समाचार पूछने के बाद गुरु जी ने उससे कुछ पत्थर गिरवी रखने को कहा। जब राजा ने लौटाने का समय पूछा तो श्री गुरु नानक देव जी बोले, "जब हम दोनों इस मातलोक से विदा होकर परलोक में पहुंचेंगे, तब पत्थरों को आप लौटा दीजिएगा।" राजा के चौंकने पर गुरु नानक साहिब ने कहा कि "जब आप इन पत्थर के टुकड़ों तक को साथ नहीं ले जा सकते तो जनता पर इनता जुल्म ढहाकर इतनी सारी सम्पत्ति किसके लिए इकट्ठी कर रहे हैं? तब राजा की आंखें खुल गईं।

गौर करने वाली बात यह है कि क्या वर्तमान दौर में हम सभी भी कमोबेश उस राजा जैसी मानसिकता से ग्रस्त तो नहीं हैं? आज का तथाकथित विकसित और सभ्य मानव भोगवादी भौतिक वस्तुओं को जुटाने के लिए इतना मदहोश हुआ जा रहा है कि वह इनके लिए अपनी जमीर, ईमान, शांति-सुकून, सिद्धांत, परोपकार-भावना आदि सभी अच्छी चीजों को दांव पर लगा देता है। जबकि वह जानता है कि इन सात्विक और असली जमा-पूंजी के बदले में मिलने वाली भोगवादी सफलताएं क्षणिक और नाशवान हैं तथा यहीं रह जानी हैं, फिर भी उसे होश नहीं आता, क्योंकि जानना एक बात है और उसको महसूस करना दूसरी बात। हमारी महसूस करने की शक्ति छिनती जा रही है। जो संवेदनशीलता हमें मनुष्य कहलाने का अधिकार देती है, भोगवादी मायाजाल में फंसकर हम उसी से दूर होते जा रहे हैं। दुर्लभ मानव-जीवन को असली तत्त्व की खोज में लगाने या परोपकार रूपी पूंजी कमाने की बजाय हम नश्वर भौतिक सफलताओं की ओर दौड़ने में गंवा रहे हैं, मृगमरीचिका रूपी सुखों को पाने के लिए लाखों दुखों का बोझ उठाये भटक रहे हैं। एक प्यास बुझती है तो दसियों नई प्यास और जग जाती हैं तथा हम कभी संतुष्टि का अनुभव नहीं कर पाते।

प्रश्न उठता है कि करें क्या? उत्तर जीवन जीने की सच्ची कला में निहित है। ऐसा जीवन, जिसमें सफलता से ज्यादा सार्थकता का महत्व हो, पाने से ज्यादा देने में संतोष का अनुभव हो; ऐसा जीवन जो मानवता के उदात्त मूल्यों से सराबोर हो, ऐसा व्यक्तित्व जिसकी उपस्थिति-मात्र से ही प्राणियों को सुख की अनुभूति होती हो। मनुष्य-जन्म तो हम सबको मिला हुआ है, लेकिन उसका वास्तविक उपयोग तो उसी ने किया है जिसने विवेक-ज्ञान के द्वारा उसे सत्कार्यों में होम करने की कला सीख ली है।

आओ, संस्कारों के बीज बोकर देखें!

जब कोई छोटा-सा बीज जमीन में बोया जाता है तो यह कल्पना की जाती है कि यही

*४०, बजरिया मोतीलाल, बरेली (उ. प्र.)-२४३००३, मो : ०९४११६०७६७२

नन्हा-सा बीज एक दिन विशाल वृक्ष बनकर अनेक प्रकार से अपनी उपयोगिता सिद्ध करेगा। वर्तमान सामाजिक-पारिवारिक विघटन के दौर को देखते हुए प्रत्येक व्यक्ति अपने घर में भी एक छोटा-सा बीज बो सकता है जिसकी दूरगामी-बहुआयामी उपयोगिता समय अवश्य सिद्ध करेगा। वह छोटा-सा बीज है प्रतिदिन परिवार के सभी सदस्य एक निश्चित समय पर निश्चित समय के लिए (भले ही पांच मिनट) एकत्र होकर सदाचार-मूलक क्रिया करें। इसके अंतर्गत वे किसी धर्म-ग्रंथ, नीति-ग्रंथ या किसी भी अच्छी पुस्तक का वाचन कर सकते हैं अथवा समाज में घटी किसी ऐसी घटना की प्रशंसायुक्त चर्चा कर सकते हैं, जिसमें सदाचरण का आदर्श स्थापित हुआ हो या फिर वे अपने साथ घटित हुए, पढ़े हुए, सुने हुए ऐसे अनुभवों को औरों के साथ बांट सकते हैं जिनमें सदाचार की महिमा का वर्णन हो। यकीन मानिये, प्रतिदिन होने वाली इस सात्विक पारिवारिक गोष्ठि का सुफल तत्काल मिले या न मिले किंतु दीर्घ काल में ये संस्कार पारिवारिकता तथा सामाजिकता की सुदृढ़ नींव साबित होंगे और सभी लोगों, विशेषकर बच्चों के हृदय-पटल पर इनकी ऐसी छाप पड़ेगी कि वे जाने या अनजाने में अनेक कुमार्गों पर बढ़ने से स्वत: रुक जायेंगे। आखिर महान लोगों की महानता के बीज उन्हें मिले संस्कारों में ही तो छिपे होते हैं।

काश! दिल तो बचपन वाला होता

जब हम छोटे होते हैं तब धर्म और मजहब के मतलब तथा बारीकियां नहीं जानते लेकिन उनके मर्म को कहीं बेहतर तरीके से आत्मसात किये होते हैं। साथ में खेलने और पढ़ने वाले दूसरे बच्चे के नाम में छिपे धर्म-मजहब की ओर हमारा ध्यान ही नहीं जाता, दोस्ती करते समय या झगड़ते समय हमारे दिमाग में एक बार भी अपने साथी के धर्म-मजहब का ख्याल नहीं आता बल्कि दोस्ती का आधार विशुद्ध रूप से नेकी, आपसी समझदारी और परस्पर प्रेम होता है। संवेदनशीलता के जो तत्व बड़े होने पर धार्मिक-मजहबी उपदेशों द्वारा पुन: जगाने की कोशिश होती है, वे संवेदनशील मानवीय तत्व बचपन की ही अमूल्य निधि होते हैं। ये संवेदनाएं दरअसल बड़ी और खुली जगह में ही रह पाती हैं। आजकल ये बड़ी और खुली जगह सिर्फ छोटे बच्चों के दिल में पाई जाती है, क्योंकि उम्र बढ़ने के साथ-साथ समझदारी बढ़ने का भी दावा करने वाले लोगों के दिल तंग होते जाते हैं, ऊपर से उन्हें अपने तंग दिलों में अपने धर्म-मजहब की श्रेष्ठता का अहंकार, दूसरे पंथ के प्रति नफरत और वैर आदि की भावना भी रखनी होती हैं, इसलिए संवेदनाओं के लिए जगह बच ही नहीं पाती। इसके अलावा जब राजनैतिक स्वार्थ, चालबाजियां, नफे-नुकसान का गणित भी लगाना हो तब तो मानवीय संवेदनाओं को दिल के किसी कोने में टिकाना भी असंभव हो जाता है। पर हां, अपनी बुद्धि के कहने पर हम हर तरफ ऐलान करते जरूर घूमते हैं कि हम में मानवता है, संवेदनाएं हैं। उम्र के साथ-साथ पाखंड बढ़ने के इस दौर में सिर्फ बच्चों को सलाम करने को दिल करता है और इच्छा होती है कि काश! हर इंसान का कम से कम दिल तो बचपन वाला होता।

निराशा त्यागें, आत्म-संतोषी बनें!

*-बीबी जसप्रीत कौर 'रावी'**

अधीर लोग अपने संकटों को स्वयं खींचते हैं और अपने सुखों को स्वयं ही नष्ट कर लेते हैं।

एक किसान के पड़ोसी ने एक दिन उस किसान से कहा, "देखो! यह नीचे आलुओं से लदी खड़ी गाड़ी किसकी है? पिछले अगस्त में इस विषय पर हम बातें कर रहे थे न? यह तुम्हारी ही है न?"

"हां, है तो।"

"किंतु तुम तो कह रहे थे कि तुम्हारी मक्की की फसल नष्ट हो गई और आलू खेत में सड़ रहे हैं।"

"हां।"

"तुम तो कहते थे कि तुम्हारे जिले भर में किसी को आधी फसल भी नहीं मिलेगी?"

"हां, मुझे याद है।"

"किंतु आज तो तुम्हारी गाड़ी आलुओं से भरी दिखाई दे रही है। इसका मतलब यह हुआ कि फसल इतनी खराब नहीं रही।" तब वह किसान अपना सिर खुजाता हुआ कहने लगा, "हां, आलू की फसल तो अच्छी हुई है, पर जानते हो क्या हुआ? मेरी मुर्गियों को इस बार बड़ा कष्ट रहा। उनके रहने के लिये कोई भी ठीक-सी जगह नहीं बची। चारों ओर खेती ही खेती फैली पड़ी है।"

इन निराशावादियों के क्या कहने! ये तो सूर्य के प्रकाश में भी कुछ न कुछ हानिकारक देख ही लेते हैं।

जब किसी किसान से कहा गया कि इस वर्षा में आपकी घास को लाभ पहुंचेगा, वह जल्दी ही बढ़ने लगेगी, तो उसने कहा, "हां, यह तो ठीक है किंतु मक्का के लिये यह वर्षा हानिकारक है। मैं नहीं समझता आधी फसल भी हो जाये।"

कुछ दिनों के बाद फिर उससे किसी ने कहा, "यह धूप तो आपकी मक्का के लिये अच्छी सिद्ध होगी।" वो कहने लगा, "यह तो ठीक है किंतु इससे राई की खेती को बड़ी हानि होगी। राई के लिये ठंडा मौसम अच्छा होता है।"

इसी प्रकार एक दिन ठंडे मौसम में उससे कहा गया कि आज का दिन तो राई के लिये बहुत अच्छा है। किसान कहने लगा, "हां ठीक है किंतु मक्का और घास के लिये इससे बुरा मौसम और कोई नहीं। उनके लिये गर्मी की आवश्यकता होती है।"

इस संसार में ऐसे लोगों की संख्या बहुत अधिक है जो अधीर, तनाव से भरे, चिड़चिड़े स्वभाव के हैं। ऐसे लोग या तो नई निराशाओं की चिंता करते हैं या फिर नई चिंता सामने न हो तो पुरानी चिंताओं के विषय में ही सोच-सोच कर चिंतित होते रहते हैं।

आत्म-संतोष आत्मा का विषय है। यह सब दुखों और संकटों की अचूक औषधि है। जिस व्यक्ति में आत्म-संतोष नहीं उसका जीवन न आज सुखी है, न कल। वह जितना प्राप्त करता है, सदा उससे अधिक और अधिक प्राप्त करने की चिंता में मारा जाता है और अंत में इसी चिंता तथा हवस में जलकर खाली हाथ इस संसार से विदा हो जाता है। इस प्रकार लाख सुखों के होते हुये भी वह न इस लोक में सुखी रह पाता है और न ही परलोक में।

**मकान नं. ११, सेक्टर १-ए, गुरु ज्ञान विहार, डुगरी, लुधियाना।*

गुरबाणी चिंतनधारा : ५२

सुखमनी साहिब : विचार व्याख्या

*-डॉ. मनजीत कौर**

बहुमुखी प्रतिभा के धनी, बाणी के बोहिथ, नम्रता एवं शांति के पुंज, कालजयी पावन ग्रंथ श्री गुरु ग्रंथ साहिब के आदि स्वरूप के संपादक पांचवीं पातशाही धन्य-धन्य श्री गुरु अरजन देव जी की बाणी 'सुखमनी साहिब' की विचार-व्याख्या से पूर्व गुरु पातशाह के अनुपम जीवन के बारे में जानें। भट्ट साहिबान श्री गुरु अरजन देव जी को अकाल पुरख का साक्षात स्वरूप मानते हुए फरमान करते हैं :

भनि मथुरा कछु भेदु नही गुरु अरजुनु परतख्य हरि ॥ (पन्ना १४०९)

श्री गुरु अरजन देव जी का जन्म चौथे पातशाह श्री गुरु रामदास जी के गृह में माता भानी जी की पावन कोख से सन् १५६३ में गोइंदवाल साहिब में हुआ। आप जी का सारा जीवन 'गुरु ग्रंथ' और 'गुरु पंथ' हेतु न्यौछावर हुआ। पावन ग्रंथ की संपादना के अतिरिक्त विविध नगर बसाना, अस्पताल खुलवाना, केंद्रीय धर्म स्थान श्री हरिमंदर साहिब का निर्माण एवं सौंदर्यकरण करवाना तथा निर्मल सिद्धांतों की रक्षा हेतु शहीदी का अमर जाम पीकर खुद 'शहीदों के सरताज' कहलाए। समर्थता होते हुए भी अनेक असहनीय कष्टों को सहते हुए, अडोल रहकर अकाल पुरख की रजा में राजी रहने की सीख समूची मानवता को देते हुए पावन फरमान किया :

तेरा कीआ मीठा लागै ॥
हरि नामु पदारथु नानकु मांगै ॥ (पन्ना ३९४)

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में आप जी के २३१३ शबद ३० रागों में दर्ज हैं। 'सुखमनी साहिब' आप जी के मुखारबिंद से उच्चरित प्रमुख बाणियों में से विख्यात बाणी है।

सुखमनी साहिब : संक्षिप्त परिचय : श्री गुरु ग्रंथ साहिब में पन्ना २६२ से २९६ तक यह पावन बाणी सुशोभित है। इसमें २४ सलोक तथा २४ असटपदियां हैं। प्रत्येक असटपदी एक सलोक से प्रारंभ है। असटपदी में सलोक के भाव को व्याख्यायित किया गया है। प्रत्येक असटपदी में ८ पद हैं। प्रत्येक पद की १० पंक्तियां हैं।

लाखों श्रद्धालु इस पावन बाणी का पाठ नित्य बड़ी श्रद्धा-भावना से करते हुए अपना जीवन सफल करते हैं। 'सुखमनी साहिब सेवा सोसायटी' के नाम से अनेक सभाएं समाज में धार्मिक एवं सामाजिक कार्यों में कार्यरत हैं। स्त्री सतसंग में यह बाणी बहुतायत से पढ़ी-सुनी जाती है। आध्यात्मिक दृष्टि से तो यह बाणी विलक्षण है ही सामाजिक एवं सभ्याचारक रिश्ता कायम करने में भी यह बाणी बेजोड़ है।

पंचम पातशाह ने श्री अमृतसर में गुरुद्वारा रामसर साहिब के किनारे (वर्तमान में जहां गुरुद्वारा मंजी साहिब सुशोभित है) बैठकर गउड़ी राग में सुखमनी साहिब की रचना का पुनीत कार्य सम्पन्न किया। यह बाणी पढ़ने में सरल तथा समझने में सहज है और भावों में अनूठी है। गुरु पातशाह के परोपकारों को शब्दों द्वारा बयान नहीं किया जा सकता। आज भी लाखों श्रद्धालु श्री हरिमंदर साहिब में उसी स्थान पर

***२/१०४, जवाहर नगर, जयपुर-३०२००४, मो: ९९२९७-६२५२३*

एकाग्रचित्त होकर बड़ी श्रद्धा-भावना से श्री सुखमनी साहिब का पाठ करते हैं। जपु जी साहिब की तरह यह बाणी भी बहुत-से व्यक्तियों द्वारा प्रतिदिन पढ़ी जाने के कारण सहज स्वभाव असंख्य गुरु-प्यारों को कंठस्थ है।

प्रस्तुत बाणी का केंद्रीय भाव 'रहाउ' की पंक्ति में निहित है। अन्य बाणियों में भी 'रहाउ' वाली पंक्ति में मूल भाव के दर्शन होते हैं तथा उस बाणी के मन्तव्य को समझने में आसानी रहती है। सुखमनी साहिब की पहली असटपदी में केवल एक बार 'रहाउ' आया है, जिसका अर्थ चिंतकों के अनुसार 'ठहराव' माना गया है। सहजता से इसी ठहराव से उस बाणी का मुख्य भावार्थ समझा जा सकता है :

सुखमनी सुख अंम्रित प्रभ नामु ॥
भगत जना कै मनि बिस्राम ॥रहाउ॥

(पन्ना २६२)

अर्थात् परमेश्वर का 'नाम' समस्त सुखों की खान है और यह प्राप्त होता है गुरमुख प्यारे भक्तों से, क्योंकि यह विशेषत: बसता ही उनके हृदय में है। वस्तुत: सम्पूर्ण सुखमनी साहिब बाणी इसी भाव की सरल व विस्तृत व्याख्या है।

गउड़ी सुखमनी म: ५ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

भावार्थ--गउड़ी राग में उच्चारण की हुई पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी की पावन बाणी सुखमनी साहिब। परमात्मा एक है और सतिगुरु की रहमत से उसे पाया जा सकता है।

सलोकु ॥

आदि गुरए नमह ॥ जुगादि गुरए नमह ॥
सतिगुरए नमह ॥ स्री गुरदेवए नमह ॥१॥

श्री गुरु अरजन देव जी पावन फरमान करते हैं कि मेरी नमस्कार है उस परवरदिगार अकाल पुरख के पावन चरणों में जो सम्पूर्ण रचना का आदि अर्थात् प्रारंभकर्त्ता है, सृजनहार है तथा सबसे बड़ा है। सतिगुरु को मेरी नमस्कार है तथा गुरदेव जी को भी मेरी नमस्कार है।

वस्तुत: यह सलोक इस बाणी के प्रारंभ में अंकित है। इस आशयानुसार यह मंगलाचरण रूप में उच्चारण किया गया है।

असटपदी ॥

सिमरउ सिमरि सिमरि सुखु पावउ ॥
कलि कलेस तन माहि मिटावउ ॥
सिमरउ जासु बिसुंभर एकै ॥
नामु जपत अगनत अनेकै ॥
बेद पुरान सिंम्रिति सुधाख्यर ॥
कीने राम नाम इक आख्यर ॥
किनका एक जिसु जीअ बसावै ॥
ता की महिमा गनी न आवै ॥
कांखी एकै दरस तुहारो ॥
नानक उन संगि मोहि उधारो ॥१॥

असटपदी अर्थात् आठ पदों का छंद। पहली असटपदी में उस पारब्रह्म परमेश्वर के सिमरन हेतु कलयुगी जीवों को पंचम पातशाह ने प्रेरित करते हुए प्रभु-सिमरन के महत्व को उजागर किया है। पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी पावन उपदेश देते हैं : अकाल पुरख वाहिगुरु का सिमरन करो, सिमरन करते हुए अर्थात् श्वास-श्वास सिमरन करते हुए सुखों की प्राप्ति करो। सिमरन की बरकतों से शारीरिक दुखों, कष्टों, कलेशों, तकलीफों को मिटा लो। उस परमेश्वर की उपमा करो, उसी का गुणगान करो जिसकी कृपा से सबका पालन-पोषण हो रहा है। परमेश्वर का नाम बेअंत जीव जपते हैं अर्थात् सिमरन करने वालों की गिनती नहीं की जा सकती। वेदों-पुराणों आदि में भी परमात्मा के नाम को ही पवित्र माना गया है। प्रभु-सिमरन का एक किनका भी जिस हृदय-घर में बस जाए उसकी महिमा

अवर्णनीय हो जाती है अर्थात् उसकी उपमा कही नहीं जा सकती। श्री गुरु अरजन देव जी अकाल पुरख के चरणों में विनती करते हैं कि हे वाहिगुरु जी! जो आपके नाम के अभिलाषी हैं वे केवल आपके चरणों की प्रीति तथा नाम-सिमरन की याचना ही करते हैं। उन्हीं के साथ मेरा भी उद्धार कर दो।

पहली असटपदी के पहले ही पद में अकाल पुरख के सिमरन की बरकतों का उल्लेख बड़े विस्तार से हुआ है। वैसे भी सम्पूर्ण श्री गुरु ग्रंथ साहिब में बहुतायत से प्रभु-सिमरन के महत्व को दर्शाया गया है तथा कलयुगी जीव को प्रभु-सिमरन हेतु प्रेरित किया गया है, क्योंकि परमेश्वर के सिमरन में ही लोक-परलोक के सुख निहित हैं। गुरबाणी में अन्यत्र भी इसी भाव के दर्शन होते हैं :

सिमरि सिमरि सिमरि सुखु पाइआ चरन कमल रखु मन माही ॥
ता की सरनि परिओ नानक दासु जा ते ऊपरि को नाही ॥ (पन्ना ८२४)

उस वाहिगुरु की रहमत के बिना उसके सिमरन की अमोलक दात प्राप्त नहीं होती :

--नदरि करे ता सिमरिआ जाइ ॥ (पन्ना ६६१)
--सुखमनी सुख अंम्रित प्रभ नामु ॥
भगत जना कै मनि बिस्राम ॥रहाउ॥

सम्पूर्ण बाणी का केंद्रीय भाव उपरोक्त 'रहाउ' की पंक्ति में दर्ज है। गुरु पातशाह फरमान करते हैं कि परमेश्वर का नाम अमर करने वाला तथा सुखों की मणि है। इसका निवास सदैव भक्तों के हृदय में रहता है।

प्रभ कै सिमरनि गरभि न बसै ॥
प्रभ कै सिमरनि दूखु जमु नसै ॥
प्रभ कै सिमरनि कालु परहरै ॥
प्रभ कै सिमरनि दुसमनु टरै ॥
प्रभ सिमरत कछु बिघनु न लागै ॥
प्रभ कै सिमरनि अनदिनु जागै ॥
प्रभ कै सिमरनि भउ न बिआपै ॥
प्रभ कै सिमरनि दुखु न संतापै ॥
प्रभ का सिमरनु साध कै संगि ॥
सरब निधान नानक हरि रंगि ॥२॥

प्रभु के सिमरन के महत्व को प्रतिपादित करते हुए गुरु पातशाह पावन फरमान करते हैं कि प्रभु के सिमरन की बरकतों के फलस्वरूप ही जीव आवागमन से मुक्त हो जाता है। प्रभु के सिमरन की बदौलत दुख, दरिद्र तथा यमदूतों का डर नहीं सताता। परमेश्वर के सिमरन के कारण ही मौत का भय समाप्त हो जाता है। सिमरन की बरकतों से ही जीवन काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार आदि विकारों से मुक्त हो जाता है अर्थात् सिमरन से जुड़े जीवों पर ये विकार अपना प्रभाव नहीं डाल सकते तथा जीव अजात शत्रु हो जाता है। ऐसे जीव पर विकार रूपी दुश्मन घात नहीं लगा सकते, उन्हें किसी तरह का नुकसान नहीं पहुंचा सकते। प्रभु-सिमरन करते हुए जीवन-मार्ग में किसी तरह की कोई रुकावट नहीं आती, जीवन की राह निष्कंटक हो जाती है। प्रभु-सिमरन की बदौलत मनुष्य विकारों से सुचेत रहता है। निर्भय प्रभु का सिमरन करने वाले जीव भी भयरहित हो जाते हैं। उन्हें दुनिया का कोई डर नहीं सताता और न ही उन्हें कोई दुख व्याकुल कर जीवन-मार्ग से भटका सकता है। अकाल पुरख वाहिगुरु का सिमरन गुरमुख-प्यारों की संगत में ही नसीब होता है। पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी पावन फरमान करते हैं कि प्रभु-प्रेम में ही सारे सुख समाहित हैं अर्थात् समस्त खुशियां परमेश्वर का सिमरन करने में ही समाई हुई हैं।

परमेश्वर के सिमरन में ही सच्चा सुख निहित है। सिमरन की बदौलत जीव इतनी ऊंची अवस्था को प्राप्त कर लेता है जहां ये

विकार रूपी शत्रु अपना प्रभाव डालने में असमर्थ हो जाते हैं। गुरबाणी में बार-बार जीव को सुचेत किया गया है कि लोक-परलोक के मुश्किल रास्तों को सुगम बनाना है तो केवल उस परमेश्वर का सिमरन करो :

अवरि पंच हम एक जना किउ राखउ घर बारु मना ॥
मारहि लूटहि नीत नीत किसु आगै करी पुकार जना ॥
स्री राम नामा उचरु मना ॥
आगै जम दलु बिखमु घना ॥ (पन्ना १५५)

प्रभु-सिमरन में चित्त का जुड़ाव होना पहली शर्त है। प्रभु-कृपा के पात्र बन कर ही उसका सिमरन किया जा सकता है।

प्रभ कै सिमरनि रिधि सिधि नउ निधि ॥
प्रभ कै सिमरनि गिआनु धिआनु ततु बुधि ॥
प्रभ कै सिमरनि जप तप पूजा ॥
प्रभ कै सिमरनि बिनसै दूजा ॥
प्रभ कै सिमरनि तीरथ इसनानी ॥
प्रभ कै सिमरनि दरगह मानी ॥
प्रभ कै सिमरनि होइ सु भला ॥
प्रभ कै सिमरनि सुफल फला ॥
से सिमरहि जिन आपि सिमराए ॥
नानक ता कै लागउ पाए ॥३॥

प्रभु-सिमरन की बरकतों का उल्लेख करते हुए पंचम पातशाह पावन फरमान करते हैं कि परमेश्वर के सिमरन में ही समस्त रिद्धियां-सिद्धियां, सारी संपदा, समस्त खजाने निहित हैं। परमेश्वर के सिमरन में ही निज स्वरूप का ज्ञान होता है तथा जगत-रचना के मूल सृजनहार परमात्मा का हर पल ध्यान करने से बुद्धि तत्ववेत्ता हो जाती है। प्रभु-सिमरन में ही जप-तप के समूचे फल समाहित हैं। प्रभु-सिमरन की बदौलत हृदय से ईश्वर के अतिरिक्त किसी और की हस्ती (हैसियत अथवा अस्तित्व) का ख्याल भी मन में नहीं आता। पूर्ण विश्वास अनंत ताकतों के मालिक पारब्रह्म परमेश्वर पर कायम हो जाता है। प्रभु-सिमरन से ही समस्त तीर्थों के स्नान का फल प्राप्त हो जाता है, प्रभु-सिमरन से परलोक (मालिक की दरगाह) में भी मान-सम्मान मिलता है। प्रभु-सिमरन से ही जगत में जो कुछ भी घटित हो रहा है वो सब भला प्रतीत होता है। प्रभु-सिमरन से ही जीव जीवन-उद्देश्य में सफल होता है। प्रभु का सिमरन वही प्राणी करते हैं जिनको वह परमेश्वर स्वयं इस ओर प्रेरित कर सिमरन की लगन लगाता है। पंचम पातशाह अकाल पुरख के चरणों में विनती करते हैं कि मैं ऐसे सिमरन करने वालों के चरण स्पर्श करूं।

प्रभ का सिमरनु सभ ते ऊचा ॥
प्रभ कै सिमरनि उधरे मूचा ॥
प्रभ कै सिमरनि त्रिसना बुझै ॥
प्रभ कै सिमरनि सभु किछु सुझै ॥
प्रभ कै सिमरनि नाही जम त्रासा ॥
प्रभ कै सिमरनि पूरन आसा ॥
प्रभ कै सिमरनि मन की मलु जाइ ॥
अंम्रित नामु रिद माहि समाइ ॥
प्रभ जी बसहि साध की रसना ॥
नानक जन का दासनि दसना ॥४॥

पंचम पातशाह प्रभु-प्राप्ति के समस्त साधनों में से प्रभु-सिमरन को सर्वश्रेष्ठ मानते हुए पावन फरमान करते हैं कि परमेश्वर का सिमरन अन्य समस्त प्रयोजनों से सर्वोत्तम है। सिमरन की बरकतों से अनेक जीव विकारों रूपी भवसागर से बच जाते हैं। सिमरन की बदौलत माया की तृष्णा मिट जाती है। प्रभु-सिमरन की बख्शिशों से सारे कुछ की समझ आ जाती है अर्थात् जीवन नीर-क्षीर विवेकी हो जाता है, करने योग्य तथा त्यागने योग्य कर्मों की उसे समझ आ जाती है। प्रभु-सिमरन का सदका

यमदूतों का डर खत्म हो जाता है। जहां सिमरन है वहां ईश्वर के आदेशानुसार यमदूत आ ही नहीं सकते। प्रभु-सिमरन करने वालों की समस्त आशाएं पूर्ण हो जाती हैं। प्रभु-सिमरन के कारण मन से विषय-विकारों की मैल उतर जाती है तथा परमेश्वर का अमृतमयी नाम हृदय घर में समा जाता है।

ईश्वर-प्राप्ति के जितने भी साधन बताए गए हैं, यथा : जप, तप, संयम, मौन, हठयोग की क्रियाएं, तीर्थ-स्नान, व्रत आदि, उनमें गुरबाणी आशयानुसार प्रभु का सिमरन सर्वोच्च है, क्योंकि सिमरन की बदौलत ही अनेकों का उद्धार हुआ है। सिमरन की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसकी बरकतों से जीव तृष्णा-विहीन हो जाता है।

गुरबाणी आशयानुसार 'नाम' के बिना जो कुछ भी मांगा जाता है वो सब दुखों का ही कारण बनता है, जैसा कि पावन गुरबाणी में अन्यत्र भी स्पष्ट किया गया है :

विणु तुधु होरु जि मंगणा सिरि दुखा कै दुख ॥
देहि नामु संतोखीआ उतरै मन की भुख ॥

(पन्ना ९५८)

चलें दिव्यता की ओर *(पृष्ठ ५० का शेष)*

बसता है। यही कि समस्त आत्माएं परमात्मा का अंश हैं, जिन्हें विभिन्न प्रकार के शरीर प्रदान करके कर्म के बंधन में बांध दिया गया है। व्यक्ति जिस प्रकार के कर्म करता है उसी के आधार पर उसके अगले जन्म का निर्धारण होता है। इन समस्त आत्माओं को ब्रह्म एक दिन पुन: अपने में समेट लेगा, वापिस बुला लेगा। जिस दिन यह होगा उसी दिन का नाम महाप्रलय, कयामत, डूम्सडे आदि रखा गया है। जो आत्माएं प्रबुद्ध हैं, वे कर्मबंध नहीं बनाती हैं और शरीर के रहते ही ब्रह्म के साथ अपना तादात्म्य बना लेती हैं, उसके साथ संवाद रचा लेती हैं और प्रलय की प्रतीक्षा करने के स्थान पर नश्वर भौतिक शरीर का परित्याग करते ही ब्रह्म में लीन हो जाती हैं। ध्यान के द्वारा साधक अपनी आत्मा को वायवी से तेज रूप में परिवर्तित करता है और छोटी ज्योति (आत्मा) बड़ी ज्योति (परम-आत्मा) में जाकर विलीन हो जाती है।

बीड़ी-सिगरेट व तंबाकू से हानि *(पृष्ठ ५२ का शेष)*

देर नहीं लगती। तंबाकू और चूने में मौजूद नुकसानदायक पदार्थ मुंह में घाव बना देते हैं। इससे फेफड़े, कंठ, किडनी, मूत्राशय, अमाशय आदि में कैंसर हो जाती है। डॉ. राजेंद्र चौधरी (मेडिकल कालेज, गोरखपुर) का कहना है कि "इससे तंबाकू के धुयें में मौजूद हानिकारक तत्व खून के साथ मिल कर उसे गाड़ा कर देते हैं। कई प्रकार की समस्याएं तथा हार्ट-अटैक का खतरा, फ़ालिज का खतरा बढ़ जाता है।" डॉ. चौधरी के अनुसार, "पैरों की नसें सूखने लगती हैं। गैगरीन के रोगियों की संख्या में बढ़ोत्तरी हो रही है। रोग बढ़ने पर पैर काटने का ही विकल्प बचता है।" प्रिय पाठकगण! कृप्या आप पान, बीड़ी, सिगरेट तथा तंबाकू से दूर रहें और अपने आसपास किसी को इसका प्रयोग न करने दें। आपको पता भी नहीं चल पायेगा कि धुंआ कब आपके नाक-मुंह द्वारा आपके अंदर प्रविष्ट हो गया। अपराध कोई और करेगा परिणाम आपको भोगना पड़ेगा। मात्र निवेदन समझें!

दशमेश पिता के बावन दरबारी कवि-४५

'गुरु महिमा' के कर्ता – कवि ब्रहम भट्ट

*-डॉ. राजेंद्र सिंघ 'साहिल'**

भाई ब्रहम भट्ट दशमेश पिता के दरबार के एक प्रमुख कवि रहे हैं। 'महिमा प्रकाश' में अन्य दरबारी कवियों के साथ कवि ब्रहम भट्ट का नाम भी आया है :

ननूआ वैरागी सिआम कवि, ब्रहम भाट जो आहि।
भाई निहचल फकीर गुर, बडो गुनज्ञ गुनि ताहि।

जैसा कि नाम से स्पष्ट है कि भाई ब्रहम भट्ट कवि भट्ट कवियों की परंपरा से संबंधित रहे हैं। पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी के दरबार में ग्यारह भट्टों ने जिस गौरवशाली परंपरा की स्थापना की थी, कवि ब्रहम भट्ट उसी काव्य-परंपरा के ध्वजवाहक हैं।

कवि ब्रहम भट्ट ने 'गुरु महिमा' नामक काव्य की रचना की, जिसमें दशमेश पिता श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की महिमा का सुंदर वर्णन किया गया है। कवि ब्रहम भट्ट दशमेश पिता को महान अवतारी पुरुष घोषित करते हुए कहते हैं :

सतिजुग प्रबल प्रगट परसराम ह्वै कै,
छेक छांडे छत्री करि काहू अत्र न धरयो।
त्रेते रघुनाथ ह्वै कै रांवन सनाथ कीनो,
गीधन खवायो मास लंकपति जौ लरयो।
द्वापर कन्हाई बन बांसरी बजाई धुंन,
सुरि नर मुनि काहूं धीर न तबै करयो।
कलिजुग तारबे कौ साधन उधारबे कौ,
सुंदर स्वरूप गुरु गोबिंद ह्वै औरतरयो।

यही नहीं कवि ब्रहम भट्ट ने दशमेश पिता के रण-कौशल, शौर्य एवं बाहुबल की भी मुक्त कंठ से प्रशंसा की है :

महांबाह बिरचि बनैत गुरु गोबिंद जी,
अरि गज मार डारे मानौं दरखत हैं।
भैरों औ बैताल भूत करत बिहार तहां,
हार करबे को कौमु पंच परखत हैं।

अब एक उदाहरण और देखें :

महां बाहु बीर गुरु गोबिंद सिंघ तिहारे त्रास,
बैरिन की सैना बन बन बिचरत है।
करि करवार काढि काट कै दुज्जन दल,
जोगु जुरो जोगनि जमात बिहरत है।

कवि ब्रहम भट्ट को दशमेश पिता की आध्यात्मिक शक्ति का बड़ी गहराई से भान था, इसलिए उसे अन्य पातशाहों के मुकाबले गुरु जी सच्चे पातशाह प्रतीत होते हैं :

गुरु जी गोबिंद सिंघ, चाहौं तुम सोई करौं,
बूझ देख्यो बेद इस बात को उगाही है।
और पातशाही सभ लोगन कौ पातशाहु,
पातशाहु पर साची तेरी पातशाही है।

इस प्रकार कवि ब्रहम भट्ट ने 'गुरु महिमा' के माध्यम से जो दशमेश पिता की महिमा का गायन किया है, उसने ब्रहम भट्ट को सदैव के लिए अमर कर दिया।

**१/३३८, 'स्वप्नलोक', दशमेश नगर, मंडी मुल्लांपुर दाखा (लुधियाना), पंजाब-१४११०१, मो: ९४१७२-७६२७१*

तलवंडी साबो में श्री गुरु ग्रंथ साहिब का ३०५वां संपूर्णता दिवस मनाया गया

तलवंडी साबो : श्री गुरु ग्रंथ साहिब का ३०५वां संपूर्णता दिवस तख्त श्री दमदमा साहिब, तलवंडी साबो (बठिंडा) में बहुत श्रद्धा-भावना से मनाया गया। स्थानीय भाई डल्ल सिंघ दीवान हाल में जुड़ी संगत के विशाल इकट्ठ को मुबारकवाद देते हुए श्री अकाल तख्त साहिब के जत्थेदार सिंघ साहिब ज्ञानी गुरबचन सिंघ ने कहा कि श्री गुरु ग्रंथ साहिब की फिलासफी मनुष्य की शख्सियत के विकास का एक अद्वितीय सिद्धांत है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब का सिद्धांत धर्म के नाम पर मानवता के बटवारे तथा भेदभाव की आज्ञा नहीं देता। इसमें समूची मानवता को एक सामाजिक भाईचारा समझते हुए सरबत्त के भले की कामना की गई है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब की बाणी अकाल पुरख की उपमा तथा समूची मानवता के भले का पैगाम देती है। उन्होंने कहा कि धर्म की किरत करनी, नाम जपना, वंड छकना तथा दूसरों के दुख-सुख में शरीक होना गुरबाणी के ऐसे अनमोल सिद्धांत हैं जो मनुष्य-जीवन के लिए आदर्श जीवन-मार्ग दर्शाते हैं।

उन्होंने कहा कि दशमेश पिता श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी द्वारा देश एवं कौम के लिए किए अनेकों उपकारों के बाद तख्त श्री दमदमा साहिब की पवित्र धरती पर जंगी कमरकस्सा खोल कर सिक्खों को साहित्य-रचना के रूप में भारी बख्शिशें कीं। दशम पिता ने इस स्थान को 'गुरु काशी' का दर्जा देते हुए फरमान किया था कि यहां अल्प बुद्धि वाले भी ज्ञान हासिल करेंगे। उन्होंने कहा कि १७०६ ई में दशमेश पिता श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने श्री दमदमा साहिब के स्थान पर आदि श्री गुरु ग्रंथ साहिब में नौवें पातशाह श्री गुरु तेग बहादर साहिब की बाणी दर्ज करके श्री गुरु ग्रंथ साहिब को संपूर्णता प्रदान की। उसके बाद नांदेड़ में परलोक गमन करने से एक दिन पहले श्री गुरु ग्रंथ साहिब को गुरतागद्दी बख्शिश की तथा समूह गुरु नानक नाम-लेवा संगत को श्री गुरु ग्रंथ साहिब के लड़ लगने का आदेश किया। उन्होंने कहा कि पावन श्री गुरु ग्रंथ साहिब के निर्मल उपदेश को पढ़ना, सुनना तथा विचारना ही सिक्ख पंथ का परम धर्म है।

इस शुभ अवसर पर शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के अध्यक्ष जत्थेदार अवतार सिंघ ने कहा कि श्री गुरु ग्रंथ साहिब का फलसफा समूची मानवता के लिए कल्याणकारी, आदर्श जीवन-जाच वाला तथा सद्गुणों का अमूल्य व कभी न समाप्त होने वाला खजाना है। दुनिया भर के धर्म-ग्रंथों में श्री गुरु ग्रंथ साहिब का विलक्षण स्थान है। दुनिया के लोग इसके अदब-सत्कार को कायम रखते हुए इसमें दर्ज महान शिक्षाओं को अपने जीवन में अपना कर जीवन

संवार सकते हैं। उन्होंने कहा कि इसके आगे माथा टेक लेना ही काफी नहीं, इसके अंदर सुशोभित फलसफे पर विचार कर जीवन को इसके अनुसार बनाना ही गुरमति जीवन-युक्ति है। उन्होंने कहा कि मनुष्य को जन्म के उपरांत और जन्म लेने से पहले भी *"जिन हरि हिरदै नामु न बसिओ तिन मात कीजै हरि बांझा"* के अनुसार जन्म देने वाली मां के लिए भी नाम-बाणी का अभ्यास जरूरी बताया है। उन्होंने कहा कि श्री गुरु ग्रंथ साहिब की बाणी मनुष्य को बुरे कामों से सुचेत करते हुए सत्य के मार्ग पर चलने का आदेश देती है। उन्होंने कहा कि गुरबाणी में विद्या तथा ज्ञान-प्राप्ति पर जोर दिया गया है।

तख्त श्री केसगढ़ साहिब के जत्थेदार सिंघ साहिब ज्ञानी तरलोचन सिंघ ने कहा कि श्री गुरु ग्रंथ साहिब सर्वसांझे गुरु हैं जो समूची मानवता को मजहबी, रंग-नस्ल, जात-पात, क्षेत्रीय तथा भाषायी पृथकता मिटा कर सांझीवालता के सुखमयी बंधनों में बांधते हैं तथा लोगों की समस्याओं के समाधान बख्शिश करते हैं। उन्होंने कहा कि श्री गुरु ग्रंथ साहिब लोक-परलोक का सुख तथा हर खुशी प्रदान करने के योग्य हैं, किंतु ऐसा तब ही संभव होगा जब हम समर्थ गुरु की शरण में आयेंगे।

इस अवसर पर तख्त श्री दमदमा साहिब के जत्थेदार सिंघ साहिब ज्ञानी बलवंत सिंघ ने कहा कि हरेक धर्म के अपने-अपने धार्मिक ग्रंथ हैं। हर धर्म-ग्रंथ मानव-ज़िंदगी को सही दिशा देता है। संसार के सब धर्म-ग्रंथों में श्री गुरु ग्रंथ साहिब का बुलंद रुतबा है। उन्होंने कहा कि श्री गुरु ग्रंथ साहिब मानव-जीवन की बाहरी एवं अंदरूनी तहज़ीब है जिसके अनुसार मनुष्य को अपना जीवन ढालते हुए गुरु पर भरोसा रखना चाहिये। उन्होंने गुरबाणी के कई प्रमाण देते हुए अकाल पुरख से जुड़ने के लिए संगत से विचार सांझे किये। उन्होंने कहा कि गुरबाणी ऊंच-नीच तथा जात-पात को मूलतः रद्द करते हुए मानव समानता का संदेश देती है। गुरबाणी में औरत को भी सत्कार का दर्जा दिया गया है।

इसके अलावा श्री हरिमंदर साहिब, श्री अमृतसर के ग्रंथी सिंघ साहिब ज्ञानी मान सिंघ, नामवर विद्वान ज्ञानी पिंदरपाल सिंघ, ढाढी भाई तरसेम सिंघ तथा श्री हरिमंदर साहिब के हजूरी रागी जत्थों ने कथा-विचार, गुर-इतिहास एवं अलाही बाणी के कीर्तन तथा वीर-रसी वारों द्वारा संगत को निहाल किया। मंच का संचालन डॉ. अमरजीत सिंघ तथा तख्त साहिब के कथा-वाचक ज्ञानी जगतार सिंघ ने किया।

न्यूजीलैंड दूतावास की हाई कमिश्नर श्री हरिमंदर साहिब नतमस्तक हुईं

श्री अमृतसर : दिल्ली स्थित न्यूजीलैंड के दूतावास की माननीय हाई कमिशनर मैडम Jan Henderson उनके पति Mr. David Henderson तथा दूतावास की ऐजूकेशनल कौंसलर मैडम Melanie Chapinan सचखंड श्री हरिमंदर साहिब में नतमस्तक हुए। न्यूजीलैंड (इंटरनेशनल रिलेशंज) मि: सूर्या पांडे तथा हमिलटन में इमीग्रेशन कंपनी पाथवे के डायरेक्टर मि: मारटिन किंग भी उनके साथ थे।

श्री दरबार साहिब के सूचना अधिकारियों

द्वारा उन्हें सिक्ख धर्म, सिक्ख-इतिहास तथा लंगर-प्रथा के बारे में दी जानकारी में उन्होंने गहरी दिलचस्पी दिखाई। इसके पश्चात श्री दरबार साहिब के सूचना केंद्र में शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के अध्यक्ष जत्थेदार अवतार सिंघ ने माननीय हाई कमिशनर को श्री हरिमंदर साहिब का मॉडल, सिरोपाउ तथा धार्मिक पुस्तकों का सेॅट देकर सम्मानित किया।

इस अवसर पर शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के अध्यक्ष जत्थेदार अवतार सिंघ ने पत्रकारों के साथ बातचीत करते हुए कहा कि शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रबंध अधीन चल रही शिक्षण संस्थाओं के विद्यार्थियों को विश्व-स्तरीय शिक्षा के मौके उपलब्ध करवाने के लिए इस वर्ष जून माह में न्यूजीलैंड की शिक्षण संस्था 'विनटैक' के साथ समझौता किया गया है, जिसके तहत शिरोमणि कमेटी की शिक्षण संस्थाओं से इंजीनियर, बिजनैस स्ट्डीज, बी. बी. ए, बी. कॉम. तथा बी. ए. के विद्यार्थी २-३ वर्ष यहां पर पढ़ कर शेष शिक्षा के लिए न्यूजीलैंड जा सकेंगे। जहां उन्हें उस संस्था की डिग्री मिल जायेगी। इससे शिरोमणि गु: प्र: कमेटी के अधीन चल रही शिक्षण संस्थाओं के विद्यार्थियों के लिए अंतर्राष्ट्रीय स्तर की शिक्षा प्राप्त करने के रास्ते खुल गए हैं। उन्होंने बताया कि इस समझौते के तहत विनटैक में शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को आधे खर्चे पर शेष कोर्स मुकम्मल करने के मौके मिलेंगे। उन्होंने बताया कि शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा इससे पहले यू. के. की कैंब्रिज यूनीवर्सिटी तथा टोरांटो (कनाडा) में शैरीडन कॉलेज के साथ भी शिक्षण समझौते किये गये हैं।

इस अवसर पर माननीय हाई कमिशनर ने अपनी अमृतसर-यात्रा के प्रति भावुक होते हुए कहा कि रूहानियत के केंद्र इस महान पावन स्थान के दर्शन करके मैंने बहुत ही आनंद तथा संतोष महसूस किया है। श्री हरिमंदर साहिब के प्रबंधकों द्वारा दिये गये मान-सत्कार के लिए उन्होंने शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के अध्यक्ष जत्थेदार अवतार सिंघ का विशेष रूप से धन्यवाद करते हुए शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा न्यूजीलैंड की शिक्षण संस्था 'विनटैक' से किए शिक्षण समझौते की प्रशंसा की तथा इसको बहुत ही भावपूर्ण एवं शुभ करार दिया। उन्होंने कहा कि इन संस्थाओं के आपसी समझौते आने वाले समय में जहां भारत तथा न्यूजीलैंड के विद्यार्थियों के लिए लाभदायक होंगे वहीं इससे दोनों देशों के आपसी संबंध और भी मजबूत होंगे। इससे पहले माननीय हाई कमिशनर ने श्री अकाल तख्त साहिब के जत्थेदार सिंघ साहिब ज्ञानी गुरबचन सिंघ के साथ फतह सांझी की।

प्रिंटर व पब्लिशर स. दलमेघ सिंघ ने गोल्डन आफसेट प्रेस, गुरुद्वारा रामसर साहिब, श्री अमृतसर से छपवा कर मालिक शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के लिए कार्यालय, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर से प्रकाशित किया। प्रकाशित करने की तिथि : ०१-१०-२०११